श्यामला
संस्कृत
कक्षा 10 सत्र 2021–22

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।
विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढे एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉंच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

1. पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।
2. मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।
3. सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

1. QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

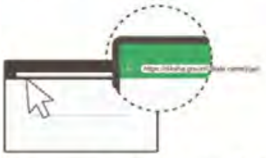

2. ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

3. सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

4. प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष	:–	2021
संचालक	:–	एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर
कार्यक्रम समन्वयक	:–	डॉ. विद्यावती चन्द्राकर
मार्गदर्शक	:–	डॉ. पूर्वा भारद्वाज, दिल्ली
विषय समन्वयक	:–	बी. पी. तिवारी, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर
लेखक समूह	:–	श्री बी. पी. तिवारी, श्री ललित कुमार शर्मा, श्री रतिराम पटेल, डॉ. राजकुमार तिवारी, श्री पीलाराम साहू, श्री पुरूषोत्तम देशमुख, श्री त्रिपुरारि कुमार ठाकुर, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर
चित्रांकन	:–	राजेन्द्र ठाकुर
आवरण एवं पृष्ठसज्जा	:–	रेखराज चौरागड़े, सुरेश कुमार साहू

R6B4GA

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

iLrkouk

उच्च माध्यमिक स्तर पर संस्कृत शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करना है। संस्कृत शिक्षण के माध्यम से छात्रों में सामाजिक सांस्कृतिक चेतना व मानवीय मूल्यों का सतत् विकास करना है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के अनुरुप छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में ज्ञानात्मक अवबोधात्मक अनुप्रयोगात्मक एवं विभिन्न कौशलों के विकास पर बल दिया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभूतियों में बिलासाबाई एवं स्वामी आत्मानंद को स्थान दिया गया है। पाठ्यपुस्तक में गद्यपाठ, पद्यपाठ, संवाद पाठ, कथापाठ, वैज्ञानिकपाठ, पर्यावरण–पाठ वार्तालाप पाठ को विशेष महत्त्व दिया गया है। पाठों में सरल संस्कृत अभ्यास प्रश्न व क्रियाकलाप (गतिविधि) को शामिल किया गया है। छात्र संस्कृत को व्यवहारगत बनाकर संस्कृत में सम्भाषण कर सकें ऐसा प्रयास किया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में राष्ट्रीय स्तर के एन.सी.ई.आर.टी. आदि की पाठ्यपुस्तकों का सहयोग व मार्गदर्शन लिया गया है।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

इस पाठ्यपुस्तक को स्वरुप प्रदान करने में जिन विशेषज्ञों की सहभागिता रही है परिषद् उनके प्रति आभार प्रकट करती है। निश्चय ही यह पुस्तक छात्रोपयोगी सिद्ध होगी। नवीन पुस्तक को और अधिक प्रभावी बनाने में विद्वजनों के बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

भूमिका

भाषायी इतिहास की दृष्टि से संस्कृत का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। संस्कृत विश्व की प्राचीन भाषाओं में एक है। इसका साहित्यिक प्रवाह वैदिकयुग से आज तक अबाध गति से चल रहा है। इसकी महिमा को देखकर इसे देवभाषा कहा गया है। यह भाषा भारतीय भाषाओं की जननी तथा सम्पोषिका मानी जाती है।

संस्कृत भाषा का प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वेद आर्यों की सभ्यता और संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए एक मात्र साधन है। भारतवर्ष में क्षेत्रीय विषमताओं के होने पर भी जिन तत्वों ने इस देश को एक सूत्र में बाँध रखा है, उनमें संस्कृत भाषा का योगदान सर्वोपरि रहा है।

संस्कृत शिक्षण के सामान्य उद्देश्य :–

1. संस्कृत भाषा का सामान्य ज्ञान कराना, जिससे संस्कृत के सरलांशों को सुनकर या पढ़कर छात्र समझ सकें एवं मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति दे सकें।
2. संस्कृत साहित्य के प्रति छात्रो ंमें अभिरुचि उत्पन्न करना।
3. संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाओं प्राचीन एवं नवीन रचनाओं से छात्रों को परिचित कराना।
4. छात्रों में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिकमूल्यों का विकास कराना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए दशम कक्षा की श्यामला संस्कृत सामान्य पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इसमें प्राचीन रचनाओं के साथ–साथ आधुनिक रचनाओं का भी समावेश किया गया है। नवीन पाठ्यपुस्तक में पाठ का आरंभ वार्तालाप से किया गया है। जिससे छात्रों को विषय प्रवेश में सरलता एवं रोचकता का अनुभव हो। छात्रों की सुविधा के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में शब्दार्थ दिये गये है इससे छात्रों को संस्कृत के नवीन शब्दों के अर्थ जानने में सुविधा हो। कतिपय पाठों में श्लोकों का अर्थ बोध कराया गया है ताकि छात्र श्लोकों के भावों को सरलता से समझ सके। पाठों में यथा स्थान चित्रों का समावेश किया गया है फलस्वरुप छात्र विषयवस्तु की अवधारणा से अवगत हो सके तथा अपनी बेहतर समझ बना सके।

पाठ्यपुस्तक के अंत में व्याकरणखण्ड है। उसमें छात्रों की बोधक्षमता को दृष्टिगत रखते हुए संक्षेप में व्याकरण की विविध विधाओं को रखा गया है, जिससे छात्र कौशलात्मक प्रश्नों को हल करने प्रवीणता अर्जित कर सकें।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को छात्रों के अनुरुप सृजित करने का भरपुर प्रयास किया गया है, तथापि इसे और अधिक छात्रोपयोगी बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

पाठ्यक्रम

(अ) व्याकरण खण्ड

1. शब्द रुप :–

1. अजन्त :– जनक, कवि, शिशु, सखि। प्रीति, कुमारी, पुत्री,स्वसृ। ज्ञान, द्वार,उदर।
2. हलन्त :– भवत् विद्वस्, सरित्, जगत्।
3. सर्वनाम :– अस्मद् युष्मद्, यत्, तद् किम्।
4. संख्यावाची :– 101 से 150 तक

2. धातु रुप :–

वृत्, रुच्, नृत्, कुध्, लिख् मिल्, कृ, कथ्, भक्ष्। (प्रचलित पाँच लकारों में)

3. सन्धि :–

1. व्यंजन सन्धि :– अनुस्वार, परसवर्ण और जश्त्व।
2. विसर्ग सन्धि :– उत्व, सत्व, रुत्व, लोप।

4. समास :–

समास एवं समास के भेद।

5. प्रत्यय :–

1. कृदन्त :– शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्।
2. तद्धित :– त्व, तल्, ठक् स्त्री प्रत्यय (टाप्, ङीप्)

6. अव्यय :–

अव्यय परिचय, पहचान एवं प्रयोग।

7. उपसर्ग :–

उपसर्ग परिचय एवं प्रयोग।

8. **कारक प्रकरण :–**

उपपदविभक्तियों का प्रयोग (विशेषविभक्ति प्रयोग)

1. द्वितीया विभक्ति :– अभितः, परितः सर्वतः, उभयतः प्रति, निकषा।
2. तृतीया विभक्ति :– सह, साकं, सार्धं, समं (के साथ) सदृशः अलम् (निषेधार्थ)
3. चतुर्थी विभक्ति :– नमः स्वस्ति,स्वाहा, अलं (समर्थ अर्थ)। दा, रुच्, क्रुध् इर्ष्य धातु।
4. पंचमी विभक्तिः– बहिः विना, ऋते, तरप्। भी, त्रा, प्र–भू धातु।
5. षष्ठी विभक्ति :– सम,सदृश, तुल्य (समान) तमप्।
6. सप्तमी विभक्ति :– कुशलः निपुणः प्रवीणः। स्निह, अभिलष् धातु।

9. **वाच्य –प्रकरण :–** वाच्य परिचय एवं परिवर्तन। (लट्लकार में)

10. **पत्र लेखन :–**

1. प्राचार्य को अवकाश, स्थानान्तरण प्रमाण–पत्र, अंकसूची की द्वितीय प्रति के लिए पत्र एवं शुल्क मुक्ति हेतु पत्र।
2. पुस्तक प्राप्ति हेतु प्रकाशक को पत्र।
3. पारिवारिक पत्र।

11. **अपठित अंश :–** गद्य या पद्य अपठित अंश।

12. **अशुद्धि शोधन :–** वर्तनी एवं वाक्य रचनागत अशुद्धियों का शुद्धिकरण।

13. **निबंध रचना :–** 10 सरल संस्कृत वाक्यों में निबंध लिखना।

(विषय – सदाचार, महापुरुष, पर्व, क्रीड़ा, कवि, मेरा प्रदेश, पर्यावरण, ग्राम्य जीवन, दिनचर्या संबंधित)

(ब) पाठ्यपुस्तक खण्ड

स्वीकृत नवीन पाठ्यपुस्तक श्यामला **कक्षा 10 वीं**

(स) प्रायोजना कार्य

(क) मौखिक कार्य :–

1. **श्लोकोच्चारण** :– उचित, गति, यति, लय आदि के साथ श्लोकों का उच्चारण।
2. **गद्य वाचन** :– उचित आरोह–अवरोह एवं भाव भंगिमा के साथ वाचन।
3. **समाचार वाचन** :– किसी दिन का समाचार एकत्रित कर वांछित शैली में समाचार–वाचन।
4. **चित्राभिव्यक्ति** :– किसी चित्र, दृश्य आदि को देखकर अभिव्यक्ति।

(ख) लिखित कार्य :–

1. **दृश्य वर्णन** :– किसी चित्र, दृश्य आदि के आधार पर कहानी या अनुच्छेद लिखना।
2. **शब्दकोश–निर्माण** :– पुष्प, फल, वृक्ष, पशुपक्षी, वादन, वस्त्र, परिधान दिन, माह, ऋतु आदि के नामों का संस्कृत में संकलन करना तथा सरल संस्कृत में वाक्य निर्माण करना।
3. **भित्ति पत्रिका** :– समाचार संकलित कर भित्ति–पत्रिका बनाना।
4. **अन्त्याक्षरी संकलन** :– श्लोकों एवं सूक्तियों द्वारा वर्णमाला अनुक्रम में अन्त्याक्षरी की रचना करना।
5. **समय गणनाः** – दिन, सप्ताह, माह आदि के नामों का लेखन करना।
6. **चित्र संकलन** :– संस्कृत के महाकवियों एवं महापुरुषों के चित्रों का संकलन करना।

अनुक्रमणिका

स.क्र.	पाठ		पृष्ठ क्रमांक
	अभ्यर्थना	–	01
1.	वार्तालापः	– संवाद पाठः	02–09
2.	लोष्ठश्रृगालयोः मित्रता	– लोककथा गद्यपाठः	10–15
3.	क्रियाकारककुतुहलम्	– पद्यपाठः	16–21
4.	बिलासा	– गद्यपाठः	22–25
5.	यक्षयुधिष्ठिरसंवादः	– पद्यपाठः	26–30
6.	प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्	– संवादगद्यपाठः	31–37
7.	सुभाषितानि	– पद्यपाठः	38–42
8.	स्वामी आत्मानंदः	– गद्यपाठः	43–46
9.	ओदनं सूक्तम्	– पद्यपाठः	47–51
10.	परिवारः लघु एव वरम्	– संवादपाठः	52–58
11.	विचित्रः साक्षी	– गद्यपाठः	59–65
12.	हेमन्तवर्णनम्	– पद्यपाठः	66–69
13.	यात्रामंगलम् प्रति	– गद्यपाठः	70–74
14.	व्याकरण खण्ड	–	75–184

QYYVBN

अभ्यर्थना

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।। 1 ।।

सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथापूर्वे सञ्जानाना उपासते ।। 2 ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुर्साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।। 3 ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।। 4 ।।

भावार्थः

ईश्वर हम दोनों (आचार्य और शिष्य) की साथ–साथ रक्षा करें, हम दोनों को (विद्या से) पोषण करें, (हम दोनों) साथ मिलकर (विद्या प्राप्ति का) सामर्थ्य करें, हम दोनों का पढ़ा हुआ (ज्ञान) तेजस्वी हो, (हम दोनों) परस्पर द्वेष न करें।। 1 ।।

(हे मनुष्यों!) तुम लोग एक साथ मिलकर आगे चलो, आपस में मिलकर बातें करो, तुम्हारे मन एक समान होकर ज्ञान प्राप्त करें, जिस प्रकार पूर्व बुद्धिमान लोग सेवनीय प्रभु को जानते हुए उपासना करते आये हैं (वैसा तुम भी करो)।। 2 ।।

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु देव है, गुरु महेश्वर (शिव) है, गुरु साक्षात् परब्रह्म है उस गुरु को नमस्कार है। ।। 3 ।।

सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी कल्याण देखें, कोई दुःख का भागी न हों ।। 4 ।।

प्रथमः पाठः

वार्तालापः (खण्ड–अ)

1. मित्रस्य परिचयः

सरोवरः – नमो नमः, भवतः किं नाम अस्ति?

विभवः – मम नाम विभवः अस्ति।

सरोवरः – किं भवतः प्रियविषयः?

विभवः – संस्कृतम् इति मम प्रियविषयः।

सरोवरः – भवान् कुत्र गच्छति?

विभवः – अहं जगदलपुरं गच्छामि।

सरोवरः – कथम्?

विभवः – बस्तरस्य सौन्दर्यं द्रष्टुं गच्छामि।

सरोवरः – बस्तरे बहूनि दर्शनीयानि स्थलानि सन्ति। किं दर्शनीयस्थलं द्रष्टुम् इच्छसि?

विभवः – अहं तीरथगढप्रपातं द्रष्टुम् इच्छामि।

2. कक्षायां छात्राणां सम्भाषणम्

वशीमः – नदीम! भवतः किं करोति?

नदीमः – अहं संस्कृतं पठामि।

वशीमः – श्वः सायंकाले भवान् कुत्र मिलिष्यति?

नदीमः – श्वः सायंकाले अहं स्वगृहे मिलिष्यामि।

वशीमः – नदीम! भवान् सत्यं वदति किम्?
भवान् जशपुरं गमिष्यति, परश्वः आगमिष्यति।

नदीमः – अहं तु विस्मृतवान्।

नीरजः – किशन ! अद्य मम गृहम् आगच्छतु। सम्यक् पठिष्यावः।

किशनः – भवन्तः मम गृहम् आगच्छन्तु। सर्वे मिलित्वा क्रीडिष्यामः।

3. गुरु–शिष्ययोः संवादः

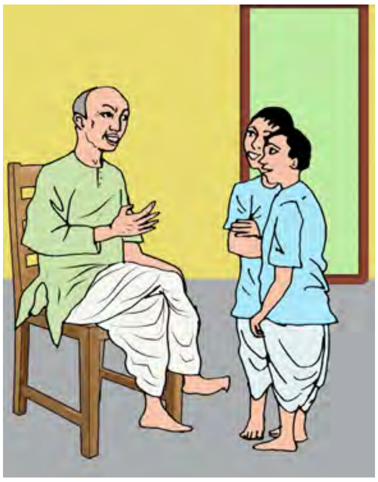

गुरुः – भवतः किं नाम अस्ति?

शिष्य : – महोदय! मम नाम संजीवः अस्ति।

गुरुः – भवान् कुतः आगच्छति?

शिष्यः – अहं रायपुरनगरात् आगच्छामि।

गुरुः – भवतः पितुः किं नाम अस्ति?

शिष्यः – महोदय! मम पितुः नाम महेन्द्रः अस्ति।

गुरुः – त्वं कस्यां कक्षायां पठसि?

शिष्यः – अहं दशम्यां कक्षायां पठामि।

4. उद्याने वार्तालापः

रणधीरः – रणवीर! भवान् कुत्र गच्छति?

रणवीरः – अहम् उद्यानं प्रति गच्छामि।

रणधीरः – किमर्थम्?

रणवीरः – भ्रमणार्थम्?

रणधीरः – प्रातःकाले भ्रमणं मह्यम् अपि रोचते।

रणवीरः – तर्हि भवान् चलतु।

रणधीरः – बाढम्! अहमपि चलामि।

5. पर्यावरणस्य रक्षणम्

पूजा – भो प्रिये! त्वं किं पश्यसि?

प्रिया – एतान् वृक्षान् पश्यामि।

पूजा – एतान् वृक्षान् के आरोपितवन्तः?

प्रिया – अस्माकं पूर्वजाः आरोपितवन्तः।

पूजा – अस्माकम् अपि कर्त्तव्यं वर्तते,
वयं अपि पादपान् रोपयाम।

प्रिया – त्वं सत्यं कथयसि।

पूजा – किं त्वं फलानि खादितुम् इच्छसि?

प्रिया – आम्।

पूजा – तर्हि त्वम् अपि एकं पादपम् आरोपय।

6. क्रीडाविषये सम्भाषणम्

प्रवरः – प्रखर! भवान् कुत्र गच्छति?

प्रखरः – अहम् उद्यानं प्रति गच्छामि।

प्रवरः – किमर्थम्?

प्रखरः – क्रीडनार्थम्।

प्रवरः – प्रातःकाले क्रीडनं मह्यम् अपि रोचते।

प्रखरः – तर्हि भवान् मया सह एव चलतु।

प्रवरः – नहि, अहं स्व पित्रा सह उपवने गच्छामि।

प्रखरः – उचितम्! , श्वः आवां प्रातः क्रीडनाय उद्यानं प्रति गमिष्यावः

7. माता–पुत्रयोः सम्भाषणम्

माता – मोहित! किं करोषि त्वम्?

पुत्रः – संस्कृतं पठामि मातः।

माता – त्वया भोजनं कृतं किम्?

पुत्रः – आम्

माता – आपणं गच्छसि किम्?

पुत्रः – मातः शीघ्रं गच्छामि। किम् आनयानि ततः।

8. नगर– भ्रमणम्

परागः – भूपेश! त्वं भ्रमणाय कुत्र गमिष्यसि?

भूपेशः – कोरबानगरं प्रति गमिष्यामि।

परागः – कदा गमिष्यसि?

भूपेशः – ग्रीष्मावकाशे अहं गमिष्यामि।

परागः – केन यानेन?

भूपेशः – रेलयानेन।

परागः – कोरबानगरं किमर्थं प्रसिद्धम्?

भूपेशः – अत्र राष्ट्रिय–तापविद्युतकेन्द्रमस्ति। अतएव प्रसिद्धम्।

9. वैद्य–रोगी सम्भाषणम्

वैद्यः – भो मुकुल! त्वं कथम् असि?

रोगी – अहं कुशली नास्मि।

वैद्यः – किम् अभवत्?

रोगी – ज्वरेण पीडितोऽस्मि।

वैद्यः – अहं तु त्वां ज्वरौषधिं दास्यामि।

रोगी – धन्यवादः महोदयः।

10. संस्कृतव्याकरणविषये वार्तालापः

मणिका – त्वं किं पठसि?

भारती – अहं संस्कृतं पठामि।

मणिका – संस्कृतस्य कः अध्यायः?

भारती – केवलं व्याकरणम् एव।

मणिका – व्याकरणे एव तव रुचिः।

भारती – व्याकरणं तु मह्यम् अतीव रोचते।

मणिका – व्याकरणं तु भाषायाः आधारभूतं भवति।

भारती – त्वं सत्यं कथयसि।

मणिका – अधुना अहं चलितुम् इच्छामि।

भारती – उपविश। पेयं पीत्वा गच्छ।

मणिका – क्षम्यताम् इदानीं गच्छामि।

शब्दार्थाः

भवान	=	आप
श्वः	=	आने वाला कल
परश्वः	=	आने वाला परसों
विस्मृतः	=	भूल गया
सम्यक्	=	अच्छी तरह से
कुतः	=	कहाँ से?
आम्	=	हाँ
किमर्थम्	=	किसलिए
क्रीडनम्	=	खेलना
तर्हि	=	तो
भ्रमणार्थम्	=	घूमने के लिए
बाढम्	=	अच्छा
आरोपितवन्तः (आ+रुह्+णिच्+क्तवतु)	=	रोपण किये
रोपयाम (लोट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन)	=	रोपण करें
यानेन	=	वाहन से (साधन से)
अधुना	=	अभी/अब/इस समय
इदानीम्	=	अब, इस समय

अभ्यासः

1. संस्कृत भाषया उत्तरत –

(क) विभवः कं प्रपातं द्रष्टुम् इच्छति?

(ख) रणधीराय किं रोचते?

(ग) अस्माकं कर्त्तव्यं किम्?

(घ) कोरबानगरं किमर्थं प्रसिद्धम्?

(ङ) भारत्यै किम् अतीव रोचते?

2. अधोलिखितानां शब्दानां मूलशब्द–विभक्तिवचन–लिङ्गानि लिखत –

	शब्दरुपम्	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा–	भवतः	भवत्	पुल्लिंगम्	षष्ठी	एकम्
1.	बस्तरे	–––––	–––––	–––––	–––––
2.	कक्षायां	–––––	–––––	–––––	–––––
3.	सर्वे	–––––	–––––	–––––	–––––
4.	कस्यां	–––––	–––––	–––––	–––––
5.	पित्रा	–––––	–––––	–––––	–––––
6.	यानेन	–––––	–––––	–––––	–––––

3. अधोलिखितानां पदानां धातुलकारपुरुषवचनानि लिखत–

	पदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	गच्छति	गम्	लट्	प्रथमः	एकम्
1.	इच्छामि	–––––	–––––	–––––	–––––
2.	मिलिष्यति	–––––	–––––	–––––	–––––
3.	आगच्छतु	–––––	–––––	–––––	–––––
4.	रोचते	–––––	–––––	–––––	–––––
5.	आरोपय	–––––	–––––	–––––	–––––

4. सुमेलनं कुरुत –

1.	बस्तरे	–	(क) क्रीडिष्यामः
2.	सर्वे मिलित्वा	–	(ख) गच्छसि
3.	त्वं कुत्र	–	(ग) तीरथगढप्रपातम्
4.	ज्वरेण	–	(घ) आरोपितवन्तः
5.	एतान् वृक्षान्	–	(ङ) पीडितोऽस्मि

5. रिक्तस्थानानि पूरयत –

1. अहं ....कक्षायां पठामि।
2. क्रीडनं ....अपि रोचते।
3. त्वम् अपि एकं ....आरोपय।
4. अहं तु त्वं ....दास्यामि।
5. ....तु भाषायाः आधारः भवति।

6. संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत –

1. आपका नाम क्या है?
2. मैं संस्कृत पढ़ता हूँ।
3. वशीम परसों आयेगा।
4. आप मेरे साथ ही चलिए।
5. बैठो, पेयपदार्थ पीकर जाओ।

7. प्रकृतिप्रत्ययौ पृथक् कुरुत –

यथा – द्रुष्टुम् = दृश् + तुमुन्

1. विस्मृतवान् =
2. मिलित्वा =
3. खादितुम् =
4. कृतम् =
5. पठन् =

8. अधोलिखितेषु वाक्येषु अव्ययपदानि चित्वा लिखत–

1. भवान् कुत्र गच्छति।
2. रामः ह्यः विद्यालयं गतवान्।
3. अद्य मम गृहम् आगच्छतु।
4. राहुलेन सह एव क्रीडतु।
5. यदा श्रेया क्रीडति तदा सीता पठति।

संस्कृत गीतम् (खण्ड–ब)

भारतं भारतं भवतु भारतम्

भारतं भारतं। भवतु भारतम्।
शस्त्रधारकं शास्त्रधारकं
शस्त्रशास्त्रधारकं भवतु भारतम्।
भारतम् .... । 1 ।

कर्मनैष्ठिकं धर्मनैष्ठिकं
कर्मधर्मनैष्ठिकम्।
भारतम्............ । 2 ।

मुक्तिदायकं भक्तिदायकं
मुक्तिभक्तिदायकम्।
भारतम्............ । 3 ।

शान्तिदायकं शक्तिदायकं
शान्तिशक्तिदायकम्।
भारतम्............ । 4 ।

————000————

QZHMEY

द्वितीयः पाठः

लोष्ठश्रृगालयोः मित्रता

अस्ति लोष्ठश्रृगालयोः मध्ये मित्रता। एकदा श्रृगालः लोष्ठम् अवदत्– मित्र! चलतु तडागात् स्नात्वा आगच्छावः। लोष्ठमवदत् मित्र! अहं जलात् बिभेमि। अहं स्नानं न करिष्यामि। यद्यहं स्नामि तर्हि ज्वरेण पीडितो भविष्यामि। श्रृगालः अवदत्–मा स्नातु परं मया सह गन्तुं शक्नोसि। तदनन्तरं लोष्ठं तडागं गन्तुं तत्परमभवत्। तडागे गत्वा श्रृगालः सम्यक् स्नानमकरोत्। तथा च लोष्ठोपरि जलमक्षिपत्। जलपातेन लोष्ठं गलितं जातम्। श्रृगालः अवदत्– मित्र! आगच्छतु, आगच्छतु। यदा लोष्ठं जलात् बहिः न आगच्छत् तदा श्रृगालः तडागमकथयत्– महयं मम मित्रं देहि,अन्यथा मत्स्यं देहि। तदनन्तरं तडागः तस्मै मत्स्यमददात्।

श्रृगालः मत्स्यं नीत्वा तं स्थाणौ संस्थाप्य भ्रमणाय च गतः। यावत् सः आगच्छति तावत् मत्स्यं काकः खादितवान्। तदा श्रृगालः स्थाणुमुवाच– महयं मत्स्यं देहि अन्यथा काष्ठं देहि। अतः स्थाणुः तस्मै काष्ठमददात्। सः काष्ठमादाय कस्याश्चित् वृद्धायाः गृहं गतः। तद्गृहे काष्ठं

संथाप्य भ्रमणार्थं गतः। सा वृद्धा काष्ठं चुल्लिकायां ज्वालयित्वा 'वटिका भूञ्जिका' इति पकवानं पक्ववती। यदा शृगालः भ्रमित्वा न्यवर्तयत् तदा सः अपश्यत् यत् वृद्धा तस्य काष्ठं प्रज्ज्वाल्य सोल्लासेन वटिकां निर्मितवती। शृगालः तामकथयत्– मम काष्ठस्य प्रत्युपकारे काष्ठं वा वटिकां देहि। वृद्धा तस्मै वटिकां प्रायच्छत्। वटिकां गृहीत्वा वनं प्रति प्रस्थितः। सः स्ववटिकां अजाचारिकायै बालिकायै प्रदाय अटणार्थं च गतवान्। अजाचारिका बालिका वटिकां निष्कास्य खादितवती। यदा शृगालः आगत्य अपश्यत्। तदा तत्र वटिका नासीत्। शृगालः अजाचारिकां बालिकामकथयत् – मम वटिकां अजां वा ददातु तदा सा बालिका तस्मै एकामजामददात्।

शृगालः अजां गृहीत्वा विवाहगृहे बद्धवा अटनाय प्रस्थितः। यदा सः पुनः विवाहगृहे आगच्छत् तदा अजामप्राप्य उपस्थितान् जनान् अपृच्छत् – अहं अत्र एकां अजां बद्धवा गतवान् ताम् अजां कः नीतवान्? यूयं मह्यं मम अजां वधूं वा यच्छ। शृगालाय ते वधूं दत्तवन्तः। शृगालः स्वकार्ये सफलः अभवत्। सः वधूं नीत्वा स्वगृहमगच्छत्। सः वधूं धान्यकूटनाय निर्देशितवान्। वधू धान्यकूटने संसक्ता। अनन्तरं शृगालः एकं कुक्कुटमादाय आगच्छत्। तत्क्षणैव वधू तस्य शिरसि मूसलप्रहारं कृतवती। तेन प्रहारेण शृगालो मृतः जातः।

तदुपरान्ते वधू स्वपितृगृहे गतवती। यदा सा परिवारेण सह मेलनं कुर्वती आसीत् तदैव तत्र पित्रा विवाहार्थं निश्चितः वरागतः। तेन वरेण सह सोल्लासेन वध्वाः परिणयः अभवत्। वरस्य ज्ञातिभिः जनैः वध्वाः स्वागतं कृतम्। तौ सुखेन न्यवसताम्।

शब्दार्थाः

लोष्ठम्	=	मिट्टी का ढेला
बिभेमि	=	डरता हूँ
सम्यक्	=	भली भाँति
अक्षिपत्	=	छिड़का / फेंका
स्थाणुमः	=	ठूँठ
संस्थाप्य	=	स्थापित कर

नीतः (नी+क्त)	=	ले गया
चूल्लिकायां	=	चूल्हे में
ज्वालयित्वा	=	जलाकर
वटिका	=	बड़ा
भुञ्जिका	=	भजिया/खाद्य वस्तु
न्यवर्तयत्	=	लौटा
प्रत्युपकारे	=	बदले में
अजाचारिका	=	बकरी चराने वाली
अटनार्थम्	=	घूमने के लिए
बद्ध्वा	=	बाँधकर
प्रस्थितः	=	प्रस्थान किया
धान्यकूटनाय	=	धान कूटने के लिए
कुक्कुटम्	=	मुर्गी को
निर्देशितवान्	=	निर्देश दिया
संसक्ता	=	संलग्न हो गई/जुट गई
कुर्वती	=	करती हुई
परिणयः	=	विवाह

अभ्यासः

1. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) कयोः मध्ये मित्रता अभवत्?
(ख) तडागे गत्वा शृगालः किमकरोत्?
(ग) शृगालः तडागं किमकथयत्?
(घ) शृगालः मत्स्यं कुत्र संस्थापितवान्?
(ङ.) शृगालः स्थाणुं किमुवाच?

2. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि हिन्दीभाषया लिखत।

(क) वृद्धा किं पक्ववती?

(ख) अजाचारिका बालिका कां खादितवती?

(ग) शृगालः अजाचारिकां बालिकां किमकथयत्?

(घ) शृगालः वधूं किं निर्देशितवान् ?

(ङ.) वरस्य ज्ञातिभिः जनैः कस्य स्वागतं कृतम्?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत् –

(क) अहं ....बिभेमि।

(ख) जलपातेन ....विनष्टं जातम्।

(ग) काष्ठं स्थाप्य ....गतः।

(घ) सः स्ववटिकां ....बालिकायै दत्तवान्।

(ङ.) तां अजां कः .... ।

4. सन्धिविच्छेदं कुरुत –

1. न्यवर्तयत् =
2. लोष्ठोपरि =
3. नासीत् =
4. प्रत्युपकारे =
5. सोल्लासेन =

5. धातुप्रत्यययोः विभागं कुरुत।

1. स्नात्वा =
2. गन्तुम् =
3. संस्थाप्य =
4. गतः =
5. खादितवान् =
6. निर्मितवती =

6. अधोलिखितानां शब्दानां धातु–लकारपुरुष–वचनानि लिखत ।

	शब्दाः	धातु	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	चलतु	चल्	लोट्	प्रथम	एक
1.	आगच्छाव:	–––––	–––––	–––––	–––––
2.	बिभेमि	–––––	–––––	–––––	–––––
3.	करिष्यामि	–––––	–––––	–––––	–––––
4.	शक्नोसि	–––––	–––––	–––––	–––––
5.	अवदत्	–––––	–––––	–––––	–––––

7. अधोलिखितानां पदानां मूलशब्द–विभक्ति–वचनानि लिखत –

	शब्दाः	मूलशब्दः	विभक्तिः	वचनम्
1.	तडागात्	–––––	–––––	–––––
2.	ज्वरेण	–––––	–––––	–––––
3.	चूल्लिकायाम्	–––––	–––––	–––––
4.	तस्मै	–––––	–––––	–––––
5.	शिरसि	–––––	–––––	–––––

8. निर्देशानुसारेण उत्तराणि लिखत –

श्रृगालः मत्स्यं नीत्वा तं स्थाणौ संस्थाप्य भ्रमणाय च गतः। यावत् सः आगच्छति तावत् मत्स्यं काकः खादितवान्। तदा श्रृगालः स्थाणुमुवाच–मह्यं मत्स्यं देहि अन्यथा काष्ठं देहि। अतः स्थाणुः तस्मै काष्ठमददात्। सः काष्ठमादाय कस्याश्चित् वृद्धायाः गृहं गतः, तद्गृहे काष्ठं संस्थाप्य भ्रमणार्थं गतः। सा वृद्धा काष्ठं चुल्लिकायां ज्वालयित्वा वटिका–भुञ्जिका' इति पकवानं पचितवती। यदा श्रृगालःभ्रमित्वा न्यवर्तयत् तदा सः अपश्यत् यत् वृद्धा तस्य काष्ठं प्रज्वालयित्वा सोल्लासेन वटिकां निर्मितवती। श्रृगालःतामकथयत्– मम काष्ठस्य प्रत्योपकारे काष्ठं वा वटिकां देहि। वृद्धा तस्मै वटिकां प्रायच्छत्। वाटिकां गृहीत्वा वनं प्रति प्रस्थितः। सः स्ववटिकां अजाचारिका–बालिकां प्रदत्तः अटणार्थं च गतवान्। अजाचारिका बालिका वटिकां निष्कास्य खादितवती। यदा श्रृगालः आगत्य अपश्यत्। तदा तत्र वटिका नासीत्। श्रृगालः अजाचारिकां बालिकामकथयत्– मम वटिकां अजां वा ददातु। तदा सा बालिका तस्मै एकाम् अजामददात्।

प्रश्न 1. – उपरोल्लेखित–गद्यांशमधीत्य ल्यप्, क्त्वा, क्त्, क्तवत् इति प्रत्ययान्तशब्दान् लिखत्।

	प्रत्यय	उदाहारण
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....
5.	....	....

प्रश्न 2. रेखाङ्किततानाम अव्ययानां सार्थकप्रयोगं कुरुत –

प्रश्न 3. वटिकाभुञ्जिकयोः निर्माणविधिं लिखत–

प्रश्न 4. स्वगृहे निर्मितानि व्यञ्जनानि संस्कृतभाषया लिखत?

प्रश्न 5. अजा वा श्रृगालस्य विषये पञ्चवाक्यानि रचयत।

प्रश्न 6. काष्ठनिर्मितानि पञ्च वस्तूनां नामानि लिखत्।

R11EI9

–––––000––––

तृतीयः पाठः

क्रियाकारक–कुतूहलम्

पाठःपरिचय– वाक्य रचना के समुचित ज्ञान से ही किसी भाषा पर अधिकार किया जाता है। वाक्य–रचना में कारक और क्रिया का संबंध सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता हैं। इसलिए भाषा के गहन गम्भीर ज्ञान के लिए कारक और क्रिया–पदों के पारस्परिक संबंध का ज्ञान होना आवश्यक है। संस्कृत में तो यह ज्ञान और भी अधिक आवश्यक है। क्योंकि उसमें विशेष परिस्थिति में किसी विशेष विभक्ति के प्रयोग के अनेक नियम है। भाषा–ज्ञान के लिए कारक और क्रिया के अतिरिक्त क्रिया के काल अर्थात् लकारों का ज्ञान होना भी अत्यावश्यक है।

प्रस्तुत पाठ में सरल श्लोकों के माध्यम से कारकों एवं क्रिया के लकारों का बोध कराया गया है। आरंभ के सात श्लोकों में क्रमशः सातों कारक और विभक्तियों का प्रयोग समझाया गया है और अंतिम पाँच श्लोकों के माध्यम से पाँचों लकारों का बोध कराया गया है।

उद्यमः साहसं धैर्यं, बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्।। 1।।

विनयो वंशमाख्याति, देशमाख्याति भाषितम्।
सम्भ्रमः स्नेहमाख्याति, वपुराख्याति भोजनम्।। 2।।

मृगाः मृगैः संगमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गै।
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः समानशील–व्यसनेषु सख्यम्।। 3।।

विद्या विवादाय धनं मदाय, शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्, ज्ञानाय, दानाय च रक्षणाय।। 4।।

क्रोधात् भवति संमोहः, संमोहात् स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्–बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति।। 5।।

अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्।। 6।।

शैले शैले न माणिक्यं, मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो न हि सर्वत्र, चन्दनं न वने वने ।। 7।।

पापान्निवारयति योजयते हिताय
गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ।। 8।।

निन्दन्तु नीतिनिपुणाः यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।।

अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।। 9।।

अपठद् योऽखिलाः विद्याः, कलाः सर्वाः अशिक्षत।
अजानात् सकलं वेद्यं, स वै योग्यतमो नरः।। 10।।

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं, वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
सत्यपूतां वदेत् वाचं, मनःपूतं समाचरेत्।। 11।।

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजश्रीः।
इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त! हन्त! नलिनीं गजउज्जहार।। 12।।

शब्दार्थाः

उद्यमः	=	(उत्+यम+) उद्योग।
साहसं	=	उत्साह
धैर्यम्	=	धीरज
वर्तन्ते	=	(वृत् धातुलट्लकार प्रथम पुरुष बहुवचन) रहते हैं।
सहायकृत्	=	सहायता करने वाला।
आख्याति	=	(आ+ख्या लट् प्रथमपुरुष एकवचन) कहता है।
भाषितम्	=	(भाष्+क्त) बोली।
संभ्रमः	=	उद्वेग, हड़बड़ी।
स्नेहम्	=	प्रेम को
वपुः	=	शरीर
सुधियः	=	(शोभना धीः येषां ते–बहुब्रीहि) बुद्धिमान
सङ्गम्	=	साथ।
अनुव्रजन्ति	=	(अनु+व्रज् लट् प्रथम पुरुष बहुवचन) पीछे चलते हैं।
सख्यम्	=	मित्रता।
समानशीलव्यसनेषु	=	(शीलं च व्यसनं च शीलव्यसने) – द्वन्द्व समास, समाने शील–व्यसने येषां –तेषु –बहुब्रीहि समास) जिनके स्वभाव और लगाव एक समान हो, उनमें।
मदाय	=	मद, घमण्ड, अहंकार के लिए।
परेषाम्	=	दूसरों का।
परिपीडनाय	=	(परितः पीडनम् इति परिपीडनम्) हर प्रकार से कष्ट के लिए।
सम्मोहः	=	अज्ञान।
स्मृतिविभ्रमः	=	(स्मृतेः विभ्रमः–षष्ठी तत्पुरुष) स्मरण शक्ति का नष्ट होना।
प्रणश्यति	=	(प्र नश् लट् प्रथम पुरुष एक वचन) नष्ट होता है।
कुतः	=	कहाँ से।

अविद्यस्य	=	(अविद्यमाना विद्या यस्य सः–अविद्यः तस्य–बहुब्रीहि) विद्याहीन,मूर्ख का।
अधनस्य	=	न धनं यस्य सः अधनः तस्य–बहुब्रीहि दरिद्र का।
शैले शैले	=	प्रत्येक पर्वत पर।
माणिक्यम्	=	रत्न
मौक्तिकम्	=	मोती।
निवारयति	=	(नि वृ णिच्, निवारि+लट् प्रथम पुरुष एक वचन) रोकता है।
योजयते	=	(युज् णिच्, योजि लट् प्रथम पुरुष एकवचन) लगाता है।
निगूहति	=	(नि गुह्, लट् प्रथम पुरुष एक वचन) छिपाता है। गुह्यम्–(गुह्+यत् द्वितीया एक वचन) गुप्त बात को।
आपदगतम्	=	विपत्ति में पड़े हुए को।
जहाति	=	छोड़ता हैं
स्तुवन्तु	=	स्तुति अथवा प्रशंसा करें।
समाविशतु	=	सम्+आ+विश् लोट् प्रथम पुरुष एक वचन) आए।
अद्यैव	=	(अद्य+एव वृद्धि स्वर संधि) आज ही।
युगान्तरे	=	दूसरे युग में बहुत दिनों बाद।
यथेष्टम्	=	(इष्टम् अनतिक्रम्य इति अव्ययीभाव) इच्छानुसार
प्रविचलन्ति	=	हटते हैं।
अखिलाः	=	समस्त।
वेद्यम् (विद्+यत्)	=	(वेदितुं योग्यं) जानने योग्य बातों को।
वै	=	ही।
दृष्टिपूतम्	=	(दृष्टयापूतम्–तृतीया तत्पुरुष) दृष्टि से भलीभांति देखकर।
न्यसेत्	=	(नि+अस् विधिलिङ् प्रथमपुरुष, एकवचन) रखना चाहिए।
वस्त्रपूतम्	=	वस्त्र से छना हुआ।
सत्यपूताम्	=	सत्य से शुद्ध
मनः पूतम्	=	पवित्र मन से

समाचरेत्	=	(सम्+आ+चर् विधि लिङ् प्रथम पुरुष एक वचन) भली–भाँति व्यवहार करना चाहिए।
सुप्रभातम्	=	(शोभनम् प्रभातम्–प्रादि तत्पुरुषः) सुन्दर प्रातः काल।
उदेष्यति	=	(उत्+इण्+लृट प्रथमपुरुष एकवचन) उदय होंगे।
कोशगते	=	(कोशेगते –सप्तम् तत्पुरुष) कमलदलों के मध्य में स्थित।
विचिन्तयति	=	(वि+चिन्त्+शतृ प्रत्यय, सप्तमी एक वचन) विचार करते हुए।
नलिनीम्	=	कमलिनी को
उज्जहार	=	(उत्+हृ+लिट् प्रथम पुरुष एक वचन) उखाड़ दिया।

अभ्यासः

1. उचितं विकल्पं चिनुत –

1. वपुः आख्यातिः –

(क) भोजनम् (ख) स्नेहम् (ग) वंशम् (घ) भाषितम्

2. खलस्य विद्या कस्मै भवति?

(क) ज्ञानाय (ख) विवादाय (ग) रक्षणाय (घ) दानाय

3. के न सर्वत्र भवन्तिः?

(क) माणिक्यानि (ख) चन्दनम् (ग) साधवः (घ) मौक्तिकानि

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) न्याय्यात् पथः के न प्रविचलन्ति?

(ख) साधोः शक्तिः किमर्थं भवति?

(ग) कः वंशम् आख्याति?

(घ) कस्माद् बुद्धिनाशो भवति?

3. स्तम्भं मेलनं कुरुत् –

1.	दृष्टिपूतं न्यसेत्	=	वाचम्
2.	वस्त्रपूतं पिबेत्	=	पादम्
3.	सत्यपूतां वदेत्	=	जलम्

4. शैले शैले न = मौक्तिकम्

5. गजे गजे न = चन्दनम्

6. वने वने न = माणिक्यम्

4. "पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले, सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।"

उक्तश्लोकानुसारेण अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरत।

प्रश्ना : –

1. सन्मित्रस्य एकं लक्षणं लिखतु।
2. 'गुह्यं निगूहति' इति वाक्यस्य भावार्थं लिखत।
3. 'इदं प्रवदन्ति सन्तः' इति वाक्यस्य हिन्दीभाषया अनुवादं लिखत्।
4. 'ददाति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम् अस्ति?
5. 'गतम्' इति पदे प्रकृतिप्रत्ययश्च लिखत।
6. श्लोके प्रयुक्तम् अव्ययपदं लिखत।
7. श्लोके लिखितानि लट्लकारस्य धातुरूपाणि चित्वा लिखत।

प्रश्न 5. अधोलिखितानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत।

1. विद्या ज्ञान के लिए होती है।
2. आलसी मनुष्य को विद्या प्राप्त नहीं होती है।
3. सभी पर्वत में मणी नहीं होते हैं।
4. अच्छे मित्र गुणों को प्रकट करते है।
5. धीरपुरुष न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते है।

R1J6LJ

———000———

चतुर्थः पाठः

बिलासा

रतनपुरस्य जनपदान्तर्गते शताधिकवर्षपूर्वं 'लगरा' इति ग्रामात् स्वपत्न्या सह जीवकोपार्जनार्थं 'परसू' नाम्नः कैवर्त्यः निर्गतः। तौ अरपानद्याः तटे अतिष्ठताम्। अरपायाः तटे एकः लघुग्रामः आसीत्। परसू अरपानद्यां प्रतिदिनं मत्स्याखेटं करोति स्म। कालान्तरेण तस्य भार्या बैसाखा एकां स्वस्थां बालाम् अजनयत्। सा बालिका लावण्यवती आसीत्। लावण्येन तस्याः 'बिलासा' इति नामकरणमभवत्।

बिलासा शैशवकाले बाला बालैः सह क्रीडति स्म। तस्यै बालकानां क्रीडनकं क्रीडनं च रोचते स्म। बिलासा अदम्य–साहसिका आसीत्। एकदा सुप्तं बालं नीत्वा वृक्कः पलायनं कुर्वन् आसीत्। तदा बिलासा वृक्कं दण्डेन ताडयित्वा बालकं मुक्तं कृत्वा मातरं समार्पयत्। बालकैः सह बिलासा मल्ल–कौशलं शिक्षते स्म। तं साहसं दृष्ट्वा जनैः तस्याः दलायग्रामरक्षणस्य दायित्वं प्रदत्तम्।

यदा वर्षाकाले अरपानद्यां जलप्लावनं जातम्। तदा बिलासा नौकया जनान् संतारयति स्म। एवमेव सा नौकाचालनेऽपि पारङ्गता जाता। सा लोकनृत्यगीतयोः अपि सिद्धा आसीत्। ग्रामस्य सर्वेषु कार्यक्रमेषु सा अग्रसरासीत्।

कालान्तरे बिलासायाः विवाहः बंशी नाम्ना युवकेन सह अभवत्। बिलासा प्रतिदिनं 'चार–तेन्दू' इति वन्यफलानि संग्रहणार्थं गच्छति स्म। तथा च बंशी महिषचारणाय वनं प्रति अगच्छत्। यदा सायंकाले बिलासा पत्या साकं गृहं प्रति न्यवर्तयत् तदा सहसा आखेटाय भ्रमतः राज्ञः कल्याणसायस्योपरि एकः व्याघ्रः आक्रमणं कृतवान्। तं विलोक्य बिलासा व्याघ्रम् कुन्तेन प्रहार्य राज्ञः प्राणान् अरक्षयत्। अनया कल्याणसायः बिलासया प्रभावितो भूत्वा अपरं दिवसं अरपानद्याः द्वयोः तटयोः 'जागीर' बिलासायै दत्तवान्। तथा च राजा रतनपुरं प्रत्यागतः। अनन्तरं तां खड्गेन अलंकृत्य 'महिला–सेनापति' इति पदे न्ययोजयत्।

बिलासा स्वप्रयत्नेन ग्रामस्य विकासः कृतवती। तस्याः वर्धमानं प्रभावं दृष्टवा प्रतिवेशिनः राज्यानि तस्याः क्षेत्रे आक्रमणं कृतवन्तः। तैः सह बिलासा साहसेन युद्धम् अकरोत्। सा राज्यरक्षा कुर्वती वीरगतिं प्राप्तवती। राज्ञः कल्याणसायेन मत्स्याखेटकानां निवासस्थलं बिलासायाः सम्मानार्थं 'बिलासापुरम् इति नाम्ना प्रथितम्। वर्तमाने इदं बिलासपुरं छत्तीसगढस्य न्यायधानी अस्ति।

बिलासा स्वकार्येण न केवलं स्वसमाजे अपितु समस्त–छत्तीसगढप्रान्ते सम्मानीतास्ति। सम्प्रति छत्तीसगढसर्वकारेण मत्स्यपालनक्षेत्रे प्रोत्साहनार्थं तया नाम्ना 'बिलासाबाई केंवटिन' इति पुरस्कारः प्रतिवर्षः दीयते। अपि च तया नाम्ना बिलासपुरे बिलासातालः, बिलासा कन्या–स्नातकोत्तर–महाविद्यालयः बिलासाचतुष्पथः प्रभृतयः गौरवान्विताः सन्ति। एवमेव छत्तीसगढस्य पूज्या बिलासा साहस–शौर्य–कर्मनिष्ठाक्षेत्रेषु आदर्शभूतास्ति।

शब्दार्थाः

निर्गतः	=	निकला
अजनयत्	=	जन्म दिया
लावण्य	=	सुंदर
क्रीडनकम्	=	खिलौना

वृक्कः	=	भेड़िया
मल्लकौशलं	=	युद्ध कौशल
जलप्लावनं	=	बाढ़
संतारयति	=	पार–लगाना
पारङ्गता	=	कुशल (दक्ष)
अग्रसरा	=	आगे आने वाली
निवर्तयति	=	लौटती है।
आखेटाय	=	शिकार के लिए
विलोक्य	=	देखकर
प्रहार्य	=	प्रहार करके/वार करके
प्रत्यागतः	=	लौट आया
अलंकृत्य	=	सम्मानित करके
कुर्वती	=	करती हुई
सम्प्रति	=	अभी
चतुष्पथः	=	चौराहा

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) परसू कुत्र मत्स्याखेटं करोति स्म?

(ख) जनैः तस्याः दलाय कस्य दायित्वं प्रदत्तम्?

(ग) बिलासायाः विवाहः केन सह अभवत्?

(घ) राजा बिलासां कस्मिन् पदे न्ययोजयत्?

(ङ) मत्स्यपालनक्षेत्रे कः पुरस्कारः दीयते?

2. निर्देशानुसारेण उत्तराणि लिखत।

"बिलासा स्वप्रयत्नेन ग्रामस्य विकासः कृतवती। तस्याः वर्धमानं प्रभावं दृष्ट्वा प्रतिवेशिनः राज्यानि तस्याः क्षेत्रे आक्रमणं कृतवन्तः। तैः सह बिलासा साहसेन युद्धम् अकरोत्। सा राज्यरक्षा कुर्वती वीरगतिं प्राप्तवती।राजा कल्याणसायः मत्स्याखेटकानां निवासस्थलं बिलासायाः सम्मानार्थं 'बिलासपुरम्' इति नाम्ना प्रथितम्। वर्तमाने इदं बिलासपुरं छत्तीसगढस्य न्यायधानी अस्ति।

अ. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) सा राज्यरक्षा कुर्वती ....प्राप्तवती।

(ख) बिलासपुरं ....न्यायधानी अस्ति।

ब. रेखाङ्कितपदानां प्रत्ययं पृथक् कुरुत।

स. उक्तानुच्छेदानुसारेण तृतीयाषष्ठयोः विभक्तीनां पदानां चित्वा वचनानि लिखत–

द. "सा राज्यरक्षा कुर्वती वीरगतिं प्राप्तवती।" वाक्ये।

(क) 'सा' इति सर्वनामपदं कस्य संज्ञापद–स्थाने प्रयुक्तः।

(ख) "प्राप्तवती" इति क्रियापदस्य कर्तृपदं लिखत।

3. संधि विच्छेदं कुरुत –

मत्स्याखेटम् =

कालादनन्तरम् =

नौकाचालनेऽपि =

व्याघ्रोपरि =

04 उदाहरणानुसारेण क्रियापदानि परिवर्तयत –

उदाहरण–बालकः क्रीडति स्म। बालकः अक्रीडत्।

(क) बिलासा सन्तारयति स्म। ....।

(ख) बंशी वनं प्रति गच्छति स्म।.......................................।

(ग) सा रक्षति स्म। ....।

(घ) ग्रामस्य विकासः करोति स्म। ....।

(ङ) बालिका नृत्यति स्म। ....।

––––000––––

R1T2N7

R1V3MA

पञ्चमः पाठः

यक्ष–युधिष्ठिर–संवादः

प्रस्तुत अवतरण महाभारत' से लिया गया है जिसके रचयिता महर्षि वेदव्यास जी हैं महाभारत एक लाख श्लोकों में निबद्ध है। अतः इसे ''शत–साहस्री–संहिता'' भी कहते है। एक बार अज्ञात वास के समय घूमते हुए पाण्डवों को प्यास लगी। तब नकुल जल का तलाश करते हुए एक जलाशय के पास पहुँचे किन्तु यक्ष ने पानी पीने से मना कर दिया। उन्होंने कहा–मेरे प्रश्नों के उत्तर देने के पश्चात् ही पानी पी सकते हैं। पिपासाकुल नकुल एवं अन्य भाई बिना उत्तर दिये पानी पीये और मृत्यु को प्राप्त हुए। युधिष्ठिर ने धैर्यपूर्वक यक्ष के प्रश्न का उत्तर दिया। प्रस्तुतांश में यक्ष के प्रश्न और उत्तर युधिष्ठिर के हैं। सभी प्रश्नोत्तर लोकोपयोगी है।

1. केनस्विच्छ्रोत्रियो भवति केनस्विद्विन्दते महत्।
केनाद्वितीयवान्भवति राजन् केन च बुद्धिमान्।।

2. श्रुतेन श्रोत्रियो भवति तपसा विन्दते महत्।
धृत्या द्वितीयवान्भवति राजन् बुद्धिमान्वृद्धसेवया।।

3. किंस्विद् गुरूतरं भूमेः किंस्विदुच्चतरं च खात्।
किस्विच्छीघ्रतरं वायोः किंस्विद् बहुतरं तृणात्।।

4. मातागुरूतराभूमेः खादप्युच्चतरः पिता।
मनः शीघ्रतरं वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात्।।

5. धन्यानामुत्तमं किंस्विद्धनानां स्यात्किमुत्तमम्।
लाभानामुत्तमं किं स्यात्सुखानां स्यात्किमुत्तमम्।।

6. धन्यानामुत्तमं दाक्ष्यं धनानामुत्तमं श्रुतम्।
लाभानामुत्तमं श्रेयः सुखानां तुष्टिरूत्तमा।।

7. केनस्विदावृत्तो लोकः केनस्विन्न प्रकाशते।
केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति।।

8. अज्ञानेनावृत्तो लोकस्तमसा न प्रकाशते।
लोभात् त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।।

9. तपः किं लक्षणं प्रोक्तं को दमश्च प्रकीर्तितः।
क्षमा च का परा प्रोक्ता का च ह्री परिकीर्तिता।।

10. तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।।

शब्दार्थाः

केनस्वित्	=	किसके द्वारा
विन्दते	=	प्राप्त करता है।
श्रुतेन	=	वेद से
श्रोत्रियः	=	वेदों का विद्वान
धृत्या	=	धैर्य से
गुरूतरम्	=	बढ़कर
उच्चतरम्	=	ऊँचा
खात्	=	आकाश से
बहुतरम्	=	बहुतायत
दाक्ष्यम्	=	कुशलता (चतुराई)
श्रेयः	=	कल्याण
प्रोक्तम्	=	कहा गया
दमः	=	दमन
ह्री	=	लज्जा
द्वंद्वसहिष्णुत्वम्	=	सुख दुख, लाभ–हानि आदि में सम।
अकार्यनिवर्तनम्	=	न करने योग्य कार्य को त्याग देना।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत–

(क) केन श्रोत्रियो भवति?

(ख) खादप्युच्चतरः कः?

(ग) लाभानामुत्तमं किम्?

(घ) केन न प्रकाशते?

(ङ) तपसः किं लक्षणम्?

2. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(माता, धन्यानाम्, सुखानाम्, दमनम्, लोभात्)

1. ....त्यजति मित्राणि।

2. ....गुरूतरा भूमेः।

3. ....उत्तमं दाक्ष्यम्।

4. ....तुष्टिरुत्तमा।

5. मनसो ....दमः।

3. संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत–

1. वेद के अध्ययन से जीवन का ज्ञान होता है।
2. माता भूमि से बढ़कर है।
3. वायु से शीघ्रतर मन होता है।
4. लोभ से मित्र को त्याग देता है।
5. अज्ञान से संसार आवृत्त है।

4. सुमेलनं कुरुत –

खण्ड 'अ'	खण्ड 'ब'
1. माता	बहुतरी तृणात्
2. मनः	शीघ्रतरं वातात्
3. चिन्ता	गुरूतरा भूमेः
4. तुष्टिः	लोभात्यजति
5. मित्राणि	सुखानाम् उत्तमा

5. अधोलिखितानां श्लोकानां माध्यमेन निर्देशानुसारमुत्तराणि लिखत–

"अज्ञानेनावृत्तो लोकस्तमसा न प्रकाशते।
लोभात्त्यजति मित्राणि सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।।

तपः स्वधर्मवर्तित्वं मनसो दमनं दमः।
क्षमा द्वन्द्वसहिष्णुत्वं ह्रीरकार्यनिवर्तनम्।।"

प्रश्नाः –

अ. 1. केनावृत्तो लोकः?

2. परा क्षमा का प्रोक्ता?

ब. रेखाङ्कित पदानां मूलशब्द–विभक्ति–वचनानि च लिखत–

स. 'प्रकाशते' इति शब्दस्य व्युत्पतिं (उपसर्गमूलधातुः धातुरुपञ्च) लिखत।

द. हिन्दी–भाषया अनुवादं कुरुत।

1. सङ्गात्स्वर्गं न गच्छति।

2. ह्वीरकार्यनिवर्तनम्।

————000————

R22XPU

षष्ठः पाठः

प्राणेभ्योऽपि प्रियः सुहृद्

प्रस्तुत नाट्यांश महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित 'मुद्राराक्षसम्' नामक नाटक के प्रथम अङ्क से उद्धृत किया गया है। नन्दवंश का विनाश करने के बाद उसके हितैषियों को खोज–खोजकर पकड़वाने के क्रम में चाणक्य, अमात्य राक्षस एवं उसके कुटुम्बियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए चन्दनदास से वार्तालाप करता है। किन्तु चाणक्य को अमात्य राक्षस के विषय में कोई सुराग न देता हुआ चन्दनदास अपनी मित्रता पर कायम रहता है। उसके मैत्री भाव से प्रसन्न होता हुआ भी चाणक्य जब उसे राजदण्ड का भय दिखाता है, तब चन्दनदास राजदण्ड भोगने के लिये भी सहर्ष प्रस्तुत हो जाता है। इस प्रकार अपने सुहृद् के लिए प्राणों का भी उत्सर्ग करने के लिऐ तत्पर चन्दनदास अपनी सुहृद्–निष्ठा का एक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

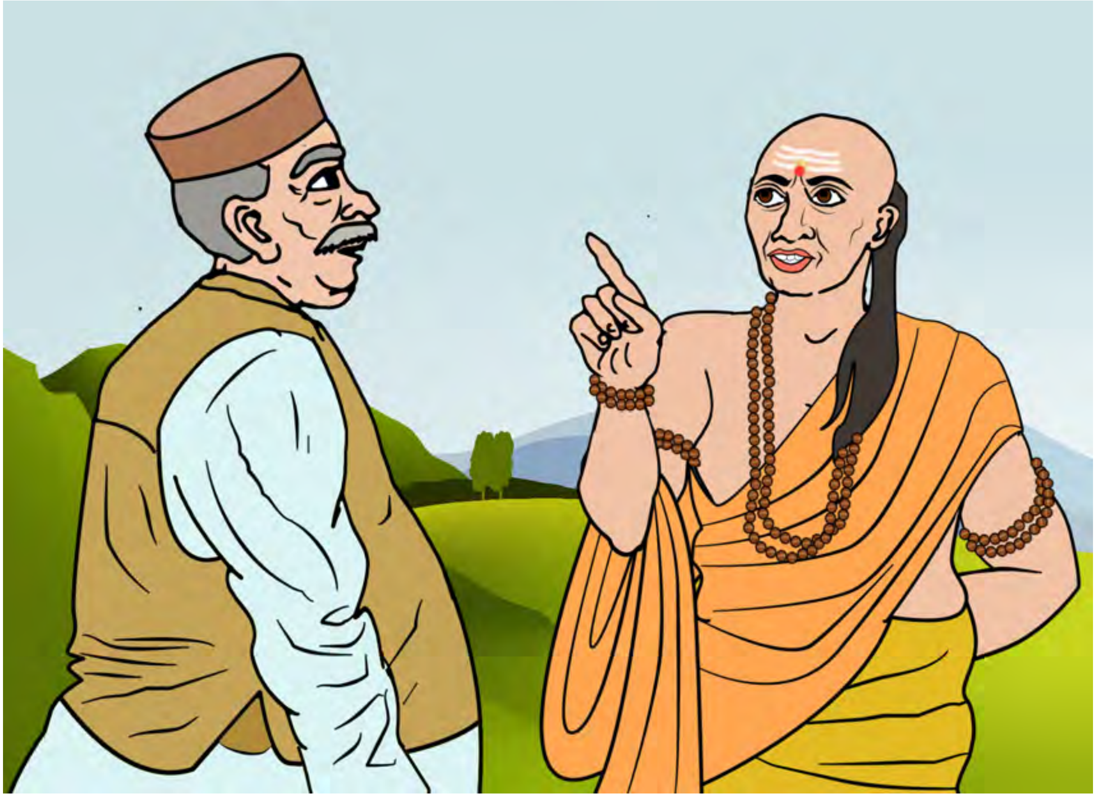

चाणक्यः – वत्स! मणिकारश्रेष्ठिनं चन्दनदासमिदानीं द्रष्टुमिच्छामि।

शिष्यः – तथेति (निष्क्रम्य चन्दनदासेन सह प्रविश्य) इतः इतः श्रेष्ठिन्
(उभौ परिक्रामतः)

शिष्यः – (उपसृत्य) उपाध्याय! अयं श्रेष्ठी चन्दनदासः।

चन्दनदासः – जयत्वार्यः

चाणक्यः – श्रेष्ठिन्! स्वागतं ते। अपि प्रचीयन्ते संव्यवहाराणां वृद्धिलाभाः?

चन्दनदासः – (आत्मगतम्) अत्यादरः शंकनीयः। (प्रकाशम्) अथ किम्।
आर्यस्य प्रसादेन अखण्डिता मे वणिज्या।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन्! प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः, किं कियत् च अस्मज्जनादिश्यते इति।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन्! चन्द्रगुप्तराज्यमिदं न नन्दराज्यम्। नन्दस्यैव
अर्थसम्बन्धः प्रीतिमुत्पादयति। चन्द्रगुप्तस्य तु भवतामपरिक्लेश एव।

चन्दनदासः – (सहर्षम्) आर्य! अनुगृहीतोऽस्मि।

चाणक्यः – भो श्रेष्ठिन्! स चापरिक्लेशः कथमाविर्भवति इति ननु भवता
प्रष्टव्याः स्मः।

चन्दनदासः – आज्ञापयतु आर्यः।

चाणक्यः – राजनि अविरुद्धवृत्तिर्भव।

चन्दनदासः – आर्य! कः पुनरधन्यो राज्ञो विरुद्ध इति आर्येणावगम्यते?

चाणक्यः – भवानेव तावत् प्रथमम्।

चन्दनदासः – (कर्णौ पिधाय) शान्तं पापम्, शान्तं पापम्।
कीदृशस्तृणानामग्निना सह विरोधः?

चाणक्यः — अयमीदृशो विरोधः यत् त्वमद्यापि राजापथ्यकारिणः अमात्यराक्षसस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षसि।

चन्दनदासः — आर्य! अलीकमेतत्। केनाप्यनार्येण आर्याय निवेदितम्।

चाणक्यः — भो श्रेष्ठिन्! अलमाशंकया। भीताः पूर्वराजपुरुषाः पौराणामनिच्छतामपि गृहेषु गृहजनं निक्षिप्य देशान्तरं व्रजन्ति। ततस्तत्प्रच्छादनं दोषमुत्पादयति।

चन्दनदासः — एवं नु इदम्। तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः — पूर्वम् 'अनृतम्', इदानीम् 'आसीत्' इति परस्परविरुद्धे वचने।

चन्दनदासः — आर्य! तस्मिन् समये आसीदस्मद्गृहे अमात्यराक्षसस्य गृहजन इति।

चाणक्यः — अथेदानीं क्व गतः?

चन्दनदासः — न जानामि।

चाणक्यः — कथं न ज्ञायते नाम? भो श्रेष्ठिन्! शिरसि भयम्, अतिदूरं तत्प्रतिकारः।

चन्दनदासः — आर्य! किं मे भयं दर्शयसि? सन्तमपि गेहे अमात्यराक्षसस्य गृहजनं न समर्पयामि, किं पुनरसन्तम्?

चाणक्यः — चन्दनदास! एष एव ते निश्चयः?

चन्दनदासः — बाढम्, एष एव मे निश्चयः।

चाणक्यः — (स्वगतम्) साधु! चन्दनदास साधु।

सुलभेष्वर्थलाभेषु परसंवेदने जने।
किं इदं दुष्करं कुर्यादिदानीं शिविना विना।।

शब्दार्थाः

मणिकारश्रेष्ठिनम्	–	मणि का व्यापारी
निष्क्रम्य	–	निकलकर
उपसृत्य	–	पास जाकर
परिक्रामतः	–	दोनों परिभ्रमण करते हैं
प्रचीयन्ते	–	बढ़ते हैं
संव्यवहाराणाम्	–	व्यापारों का
आत्मगतम्	–	मन ही मन
शंकनीयः	–	शंका करने योग्य
अखण्डिता	–	बाधारहित
वणिज्या	–	व्यापार
प्रीताभ्यः	–	प्रसन्न जनों के प्रति
प्रतिप्रियम्	–	उपकार के बदले किया गया उपकार
अपरिक्लेशः	–	दुख का अभाव
आज्ञापयतु	–	आदेश दें
अर्थसम्बन्धः	–	धन का सम्बन्ध
परिक्लेशः	–	दुख
प्रष्टव्याः	–	पूछने योग्य
अवगम्यते	–	जाना जाता है
अविरुद्धवृत्तिः	–	विरोधरहित स्वभाव वाला
पिधाय	–	बन्द कर
राजापथ्यकारिणः	–	राजाओं का अहित करनेवाले
अलीकम्	–	झूठ

अनार्येण	–	दुष्ट के द्वारा
पौराणाम्	–	नगर के लोगों के
निक्षिप्य	–	रखकर
व्रजन्ति	–	जाते हैं
प्रच्छादनम्	–	छिपाना
अमात्यः	–	मन्त्री
असन्तम्	–	न रहनेवाले
बाढम्	–	हाँ
संवेदने	–	समर्पण पर
जने	–	संसार में

अभ्यासः

1. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

(क) चन्दनदासः कस्य गृहजनं स्वगृहे रक्षति स्म?

(ख) तृणानां केन सह विरोधः नास्ति?

(ग) कः चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छति?

(घ) पाठे अस्मिन् चन्दनदासस्य तुलना केन सह कृता?

(ङ.) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः प्रतिप्रियं के इच्छन्ति?

(च) कस्य प्रसादेन चन्दनदासस्य वणिज्या अखण्डिता?

2. स्थूलाक्षरपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(क) **शिविना** विना इदं दुष्करं कार्यं कः कुर्यात्।

(ख) प्राणेभ्योऽपि प्रियः **सुहृत्**। ;

(ग) **आर्यस्य** प्रसादेन मे वणिज्या अखण्डिता।

(घ) प्रीताभ्यः प्रकृतिभ्यः **राजानः** प्रतिप्रियमिच्छन्ति।

(ङ.) **तृणानाम्** अग्निना सह विरोधो भवति।

3. निर्देशानुसारं सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत

(क) यथा कः + अपि – कोऽपि

प्राणेभ्यः + अपि – ....

.... + अस्मि – सज्जोऽस्मि।

आत्मनः + ... – आत्मनोऽधिकारसदृशम्

(ख) यथा सत् + चित् – सच्चित्

शरत् + चन्द्रः – ....

कदाचित् + च – ....

4. अधोलिखितवाक्येषु निर्देशानुसारं परिवर्तनं कुरुत

यथा प्रतिप्रियमिच्छन्ति राजानः। (एकवचने) प्रतिप्रियमिच्छति राजा।

(क) सः प्रकृतेः शोभां पश्यति (बहुवचने)

(ख) अहं न जानामि। (मध्यमपुरुषैकवचने)

(ग) त्वं कस्य गृहजनं स्वगृहेरक्षसि? (उत्तमपुरुषैकवचने)

(घ) कः इदं दुष्करं कुर्यात्? (प्रथमपुरुषबहुवचने)

(ङ.) चन्दनदासं द्रष्टुमिच्छामि। (प्रथमपुरुषैकवचने)

(च) राजपुरुषाः देशान्तरं व्रजन्ति। (प्रथमपुरुषैकवचने)

5. कोष्ठकेषु दत्तयोः पदयोः शुद्धं विकल्पं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) .... विना इदं दुष्करं कः कुर्यात्। (चन्दनदासस्य / चन्दनदासेन)

(ख) .... इदं वृत्तान्तं निवेदयामि। (गुरवे / गुरोः)

(ग) आर्यस्य .... अखण्डिता मे वणिज्या। (प्रसादात् / प्रसादेन)

(घ) अलम् .... । (कलहेन / कलहात्)

(ङ.) वीरः .... बालं रक्षति। (सहेन / सहात्)

(च) .... भीतः मम भ्राता सोपानात् अपतत्। (कुक्कुरेण / कुक्कुरात्)

(छ) छात्राः .... प्रश्नं पृच्छति। (आचार्यम् / आचार्येण)

6. अधोदत्तं मञ्जूषातः समुचितपदानि गृहीत्वा विलोमपदानि लिखत–

आदरः असत्यम् गुणः पश्चात् तदानीम् तत्र

(क) अनादरः ....

(ख) दोषः ....

(ग) पूर्वम् ....

(घ) सत्यम् ....

(ङ.) इदानीम् ....

(च) अत्र ....

7. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानि पदानि प्रयुज्य पञ्चवाक्यानि रचयत–

यथा– निष्क्रम्य – शिक्षिका पुस्तकालयात् निष्क्रम्य कक्षां प्रविशति।

(क) उपसृत्य ....

(ख) प्रविश्य ....

(ग) द्रष्टुम् ....

(घ) इदानीम् ....

(ङ.) अत्र ....

R2BTRH

–––––000–––––

R2DUQK

सप्तमः पाठः

सुभाषितानि

1. सर्वा विद्याः पुरा प्रोक्ताः संस्कृते हि महर्षिभिः।
तद्विद्यानिधये सेव्यं संस्कृतं कामधेनुवत्।।

अर्थः— महर्षियों ने पूर्वकाल से ही संस्कृत भाषा में समस्त विद्याओं की रचना कर दी है। किन्तु उन विद्यारूपी खजानों को पाने के लिए कामधेनु के समान संस्कृत भाषा की सेवा आवश्यक है।

2. वायूनां शोधकाः वृक्षाः रोगाणामपहारकाः।
तस्माद् रोपणमेतेषां रक्षणं च हितावहम्।।

अर्थः— वृक्ष वायु को शुद्ध करते हैं और रोगों को दूर भगाने में सहयोगी होते हैं। इसलिए वृक्षों का रोपण और रक्षण प्राणीमात्र के लिए हितकारी है।

3. त्वक्शाखापत्रमूलैश्च पुष्पफलरसादिभिः।
प्रत्यङ्गैरुपकुर्वन्ति वृक्षाः सद्भिः समं सदा।।

अर्थः— सन्तों के समान ही वृक्ष अपनी त्वचा शाखा पत्ते मूल, पुष्प फल रस आदि सभी अंगों से प्राणियों का उपकार करते है।

4. केषाञ्चिदपि वस्तूनां गम्यते सङ्गिना गुणः।
वैद्यनापितहन्तृणां हस्तेषु क्षुरिका यथा।।

अर्थः— किसी भी वस्तु का गुण उसके संगवाले से समझा जाता है अर्थात् वस्तु के धारणकर्त्ता पर निर्भर करता है। जैसे छुरी का गुण उपयोग वैद्य,नाई और हत्यारे के हाथ में देखकर ही पता चलता है।

5. यच्छक्यं ग्रसितुं शस्तं ग्रस्तं परिणमेच्च यत्।
हितं च परिणामे यत्तदाद्यं भूतिमिच्छता।।

अर्थः— जो वस्तु खाई जा सके और खाने पर भली—भाँति पच सके और पच जाने पर हितकारक हो ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले व्यक्ति को वही वस्तु खानी चाहिए।

6. अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रं स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।
सारन्ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसैर्यथा क्षीरमिवाऽम्बुमध्यात्।।

अर्थः– शास्त्र का पार कहीं निश्चित नहीं है और मनुष्य की आयु कम है इसलिए सार ग्रहण कर सार हीन को उसी प्रकार छोड़ देना चाहिए, जिस प्रकार हंस जल से दूध ग्रहण कर लेते हैं और जल छोड़ देते हैं।

7. शस्त्रहता न हि हता रिपवो भवन्ति, प्रज्ञाहतास्तुरिपवः सुहता भवन्ति।
शस्त्रं निहन्ति पुरुषस्य शरीरमेकं प्रज्ञा कुलञ्च विभवञच यशश्च हन्ति।।

अर्थः– शस्त्रों से मारे गये शत्रु नहीं मरते परन्तु बुद्धि से मारे गये शस्त्रु वास्तव में मारे जाते हैं। शस्त्र से तो शत्रु का मरकर मात्र शरीर ही नष्ट किया जा सकता है परन्तु बुद्धि से उसका वंश कुल, वैभव और यश आदि सब कुछ नष्ट हो जाता है।

8. दिनान्ते पिबेत् दुग्धम्, निशान्ते च पिबेत् पयः।
भोजनान्ते पिबेत् तक्रम् किं वैद्यस्य प्रयोजनम्।।

अर्थः– दिवस के अंत (शाम) में दूध पीना चाहिए, रात्रि के अंत में (सुबह) जल पीना चाहिए, भोजन के अंत में छाछ पीनी चाहिए। ऐसा करने से वैद्य की आवश्यकता नहीं है।

9. आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः।।

अर्थः– शिष्य अपने जीवन का एक भाग अपने आचार्य से सीखता है, एक भाग अपनी बुद्धि से सीखता है एक भाग समय से सीखता है तथा एक भाग वह अपने सहपाठियों से सीखता है।

10. नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।।

अर्थः– विद्या के समान आँख नहीं है, सत्य के समान तप नहीं है, राग के समान दुःख नहीं है, और त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

शब्दार्थाः

पुरा प्रोक्ताः	=	पहले कही गयी। (पुरा–अव्यय शब्द)
महर्षिभिः	=	महान् ऋषियों के द्वारा (महर्षिभिः–महर्षि इकारान्त पु. शब्द तृ.ब.व)
निधये	=	खजाने के लिए (निधि – इकारान्त पु. चतुर्थी एकवचन)
सेव्यम्	=	सेवा करने योग्य
शोधकाः	=	शुद्ध करने वाले हैं। (शोधक – प्रथमः बहुवचन)
अपहारकाः	=	दूर भगाने वाले हैं
हितावहम्	=	हितकारी
त्वक्	=	त्वचा छाल
प्रत्यङ्गैः	=	सम्पूर्ण अङ्गों से (प्रति + अङ्ग = तृ.ब.व)
सद्भिः	=	सज्जनों से (सद् – तृ.ब.व)
सङ्गिना	=	संग वाले से (सङ्गिन् – तृ. एकवचन)
गम्यते	=	समझा जाता है। (गम् (कर्मणि) – आत्मनेपद प्र.पु. एकवचन)
वैद्यः	=	चिकित्सक (पु. प्र. एकवचन)
नापितः	=	नाई (पु. प्र. एकवचन)
हन्तृणाम्	=	हत्यारों के (हन्+तृच्=हन्तृ षष्ठी ब.व.)
हस्तेषु	=	हाथों में (हस्त शब्द पु. सप्तमी ब.व.)
शस्त्रहताः	=	शस्त्रों से मारे गए। (शस्त्रहताः = शस्त्र + हन् + क्त ब.व.)
प्रज्ञाहताः	=	बुद्धि से मारे गए। (प्रज्ञाहताः = प्र + ज्ञा + हन् + क्त ब.व.)
सुहताः	=	भली प्रकार मारे जाते हैं। (सुहताः = सु + हन् + क्त ब.व.)
दिनान्ते	=	दिन के अंत में (शाम) (दिन + अन्ते =दिनान्ते दीर्घ स्वर संधि)
पयः	=	जल
प्रयोजनम्	=	आशय, उद्देश्य

पादम्	=	चतुर्थ भाग
स्वमेधया	=	अपनी बुद्धि से (स्वमेधा – तृतीया एकवचन स्त्रीलिङ्ग)
सब्रह्मचारिभिः	=	अपने सहपाठियों के साथ। (सब्रह्मचारिन् – तृतीया ब.व.पु.)
रागसमम्	=	लोलुपता के समान

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

   (क) संस्कृतं कीदृशम् अस्ति?

   (ख) संस्कृतमहर्षिभिः किं प्रोक्तम्?

   (ग) वृक्षाः केषां शोधकाः?

   (घ) के रोगाणाम् अपहारकाः?

   (ङ) वृक्षाः प्राणिनां कथं उपकुर्वन्ति?

2. रेखाङ्कित–पदानि आधृत्य संधिविच्छेदं कुरुत –

   (क) महर्षिभिः सर्वाविद्याः प्रोक्ताः।

   (ख) तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।

   (ग) पयः निशान्ते पिबेत्।

   (घ) शस्तं ग्रसितुं यच्छक्यम्।

3. एषु शब्देषु को भिन्नः

   (क) संस्कृते, गम्यते, क्रियते, दृश्यते।

   (ख) क्रीडति, धावति, पिबति, ददति।

   (ग) पठन्ति, चलन्ति, धावन्ती, हसन्ति।

   (घ) वर्धमान, वर्तमान,सेवमान,शक्तिमान।

4. अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

आचार्यत्पादमादते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः।।

1. कस्मात् पादम् आदत्ते?
2. कः ब्रह्मचारिभिः पादम् आदत्ते?
3. बुद्ध्या' इति पदाय श्लोके कः शब्दः प्रयुक्तः?
4. दत्ते इति पदस्य किं विलोमपदं प्रयुक्तम्?
5. चतुर्थांशः इत्यर्थं कः शब्दः प्रयुक्तः?
6. शिष्य इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

5. रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) स्वल्पं तथा ....बहवश्च विध्नाः।
(ख) दिनान्ते च दुग्धं ....।
(ग) ....सुखं न अस्ति।
(घ) केषाञ्चिदपि ....गम्यते।
(ड.) वृक्षाः ....शोधकाः।

————000———

R2KPT5

अष्टमः पाठः

स्वामी आत्मानन्दः

R2HQS8

'यत्र जीवः तत्र शिवः' इति मंत्रस्य साधकः त्यागमूर्तिश्च स्वामी आत्मानन्दः सदैव जनानां कल्याणार्थं समर्पितः आसीत्। सः ईदृशः सन्तः आसीत् यत् यस्य ध्येयवाक्यं सर्वत्र प्रशंसितम् आसीत्। यथा –

"परगुण परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यम्।
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।"

तस्य पितुः नाम धनीरामः मातुः नाम भाग्यवती च आसीत्। तौ धर्मपरायणौ आस्ताम्। स्वामी आत्मानन्दस्य जन्म 06 अक्टूबर 1929 तमे वर्षे अभवत्। आत्मानन्दस्य बाल्यकालस्य नाम तुलेन्द्रः आसीत्। सः 27 अगस्त 1989 तमे वर्षे निर्वाणं प्राप्य ब्रह्मलीनश्चाभवत्।

तस्य लक्ष्यमासीत् –

" न त्वहं कामये राज्यं न च स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःख– तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।।"

तस्यानुजाऽपि तस्यानुकरणं कृतवन्तः। तस्येच्छया तस्य मित्रैः शुभचिन्तकैश्च रायपुरे विवेकानन्द–विद्यापीठं स्थापितम्। तत्र बी.एड. प्रशिक्षणस्यापि समुचिता नवाचारी व्यवस्था वर्तते। बस्तरवनप्रान्तरे नारायणपुरे अबूझमाडक्षेत्रे रामकृष्णमिशनाश्रमः स्थापितः। अस्य सचिवेन पूज्यपाद– स्वामिना निखिलात्मानन्देन अपूर्वं नेतृत्वं प्रदत्तम्। अनेन आश्रमेण शिक्षा–चिकित्सा–

कृषि–जनसेवा–कृषकप्रशिक्षण केन्द्र–युवाप्रशिक्षणकेन्द्र–चलितचिकित्सा–विपणनक्षेत्रेषु च अति सम्पन्नानि सेवाकेन्द्राणि सञ्चालितानि सन्ति। आध्यात्मिकक्षेत्रेऽपि अस्य प्रयासः प्रशंसितः।

स्वामी विववेकानन्दः रायपुरे द्विवर्षपर्यन्तं समयं व्यतीतवान्। येन इदं नगरं परिपूतमभवत्। स्वामी विवेकानन्द– जन्मशताब्दी–वर्षे भव्यं स्मारकं निर्मातुं सः आत्मानंदः प्राणपणेनायतत्। अयम् आश्रमः आध्यात्मिकदर्शनस्य केन्द्रमस्ति। आश्रमैव 'पालीक्लिनिक' इति औषधालयः ग्रन्थालयः च स्थापितः। तत्रैव स्थापिते ठाकुररामकृष्णदेवालये स्वर्गोपमानि आनन्दानि प्रसृतानि।

स्वामी आत्मानंदः अतीव प्रतिभाशाली–वक्ता लेखकश्चापि आसीत्। आध्यात्म–सम्बन्धीनां अन्य– विषयानां च प्रवचनैः सः देशे ख्यातिं लब्धवान्। तस्य द्विखण्डात्मकं 'गीता–तत्त्वचिन्तनम्' इति ग्रंथः अतीव मनोहरः अस्ति। धर्मदर्शनक्षेत्रे अस्य महाभागस्य कृतयः पाठकेषु वैज्ञानिकदृष्टयभिवृद्धिं कुर्वन्ति।

स्वामीआत्मानन्दस्य संगठनकौशलम् अपूर्वम् आसीत्। तस्य निर्देशने संरक्षणे च मध्यप्रान्ते, महाराष्ट्र–उडीसा–राजस्थान–छत्तीसगढे बहवः रामकृष्णविवेकानन्द–आश्रमाः प्रतिष्ठिताः। अयं महापुरुषः शैशवकालादेव मेधावी प्रतिभासम्पन्नश्च आसीत्। सन् 1938 तमे वर्षे अस्य पिता महात्मा–गान्धिना स्थापिते बुनियादी–प्रशिक्षणविद्यालये वर्धायां शिक्षक–रुपेण नियुक्तः। प्रति रविवारे पिता–पुत्रौ गांधिनः दर्शनार्थं सेवाश्रमम् गच्छतः स्म। तत्र बालः तुलेन्द्रः गान्धिनः भ्रमण–सहायकश्चासीत्। अत्रैव तस्य बालमनसि सेवाभावना–बीजं स्फुटितम्। पित्रा सह बरबन्दाग्रामे अस्य शैशवं छात्रजीवनं च व्यतीतम्। तेन सर्वासु परीक्षासु प्रथमश्रेण्यामुत्तीर्य प्रतिभा–प्रतिस्थापिता। 1951 तमे वर्षे नागपुर–विश्वविद्यालयेन एम.एससी. (विशुद्धगणित) उपाधि स्वर्णपदकं च प्रदत्ते। सर्वोच्चाङ्कं प्राप्य कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयस्य 'रेंग्लर फेलोशिप' प्राप्तवानसौ।

अनन्तरं भारतीय– प्रशासकीय–सेवा–परीक्षायामपि सफलतां प्राप्तवान् परन्तु मौखिक–
–परीक्षां त्यक्तवान्। तदनन्तरं तेन स्वजीवनं श्रीरामकृष्ण–विवेकानन्द–चरणौ समर्पितम्।

शब्दार्थाः

ईदृशः	=	ऐसा
कियन्तः	=	कितने
कामये	=	चाहते हैं
पुनर्भवम्	=	पुनर्जन्म / (मोक्ष)
आर्ति	=	दुःख
परिपूतः	=	पवित्र हुआ
स्फुटितम्	=	अंकुरित हुआ
अपूर्वम्	=	जो पूर्व में न हुआ हो
प्रतिष्ठिताः	=	स्थापित हुए
व्यतीतम्	=	बिताया
प्राप्तवान्	=	प्राप्त किया

अभ्यासः प्रश्नाः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –
   1. आत्मानन्दस्य पितुः नाम किम्?
   2. आत्मानन्दस्य जन्म कदा अभवत्?
   3. आत्मानन्दस्य बाल्यकालस्य नाम किम् आसीत्।
   4. रामकृष्णमिशन आश्रमः कुत्र संस्थापितः?
   5. आत्मानन्देन लिखितग्रन्थस्य नाम किम्?
   6. स्वामीविवेकानन्दः रायपुरे कति वर्षं व्यतीतवान्?
2. अधोलिखितानां वाक्यानां हिन्दीभाषया अनुवादं कुरुत –
   1. मातुः नाम भाग्यवती आसीत्।
   2. न त्वहं कामये राज्यम्।
   3. अत्र सेवाकेन्द्राणि सञ्चालितानि।
   4. इदं नगरं परिपूतमभवत्।
   5. सः देशे ख्यातिं लब्धवान्।

3. अधोलिखितानां वाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादं कुरुत –

1. मै स्वर्ग नहीं चाहता हूँ।
2. आत्मानन्द के पिता का नाम धनीराम था।
3. नारायणपुर बस्तर वनप्रान्त में है।
4. स्वामी आत्मानंद का संगठन कौशल अपूर्व था।
5. उनके द्वारा जीवन समर्पण किया गया।

4. रिक्तस्थानानि पूरयत –

1. आत्मानन्दस्य ....सर्वत्र प्रशंसितम् आसीत्।
2. ....तमे वर्षे आत्मानन्दः ब्रह्मलीनः अभवत्।
3. रायपुरे विवेकानन्द–विद्यापीठं .... ।
4. ....नेतृत्वं प्रदत्तम।
5. कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयस्य ....फेलोशिप प्राप्तवानसौ।

5. अधोलिखितानां पदानां मूलशब्द–विभक्ति–लिङ्गानि लिखत –

शब्दरुपम्	पदम्	मूलशब्दः	विभक्तिः	लिङ्गम्
यथा–	समाजे	समाज	सप्तमी	पुल्लिङ्ग
1.	भक्तस्य	–––––	–––––	–––––
2.	भाग्यवत्याः	–––––	–––––	–––––
3.	इच्छया	–––––	–––––	–––––
4.	प्रान्तरे	–––––	–––––	–––––
5.	वर्धायाम्	–––––	–––––	–––––

6. अधोलिखितानां पदानां धातुलकारपुरुषवचनानि लिखत–

	पदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	आसीत्	अस्	लङ्ग	प्रथम	एक
1.	वर्तते	–––––	–––––	–––––	–––––
2.	सन्ति	–––––	–––––	–––––	–––––
3.	कुर्वन्ति	–––––	–––––	–––––	–––––
4.	अगच्छत्	–––––	–––––	–––––	–––––
5.	कथयन्ति	–––––	–––––	–––––	–––––

7. अधोलिखितानां अव्ययानां वाक्यप्रयोगं कुरुत –

1. सर्वत्र 2. च 3. इदम् 4. सम्प्रति 5. सह

8. पाठे निहितान् प्रत्ययान् चित्वा वाक्ये प्रयोगं कुरुत–

R2HLTV

–––––000––––

uoe ikB

vknu lDre

प्रस्तुत सूक्त अथर्ववेद से लिया गया है। चावल पक जाने के बाद भात बनता है। उसमें धान कूटने, फटकने, भूसा निकालने और उसे पकाने की कई प्रक्रियाएं होती हैं। इन सबका रूपक अलंकार की सहायता से वर्णन किया गया है। यज्ञ करनेवाले को इस भात के माध्यम से सभी लोक प्राप्त हो जाते हैं, यह कहकर उसकी महिमा बताई गई है।

चक्षुर्मुसलं काम उलूखलम् ।।1।।

दितिःशूर्पमदितिःशूर्पग्राही वातोपावनिक् ।।2।।

अश्वाः कणा गावस्तण्डुला मशकास्तुषाः ।।3।।

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्यौदनस्य द्यौरपिधानम् ।।4।।

ऋतं हस्तावनेजनं कुल्योपसेचनम् ।।5।।

ऋतवःपक्तार आर्तवाः समिन्धते ।।6।।

तस्यौदनस्य बृहस्पतिः शिरो ब्रह्म मुखम् ।।7।।

द्यावापृथिवी श्रोत्रे सूर्याचन्द्रमसावक्षिणी

सप्तऋषयः प्राणापानाः ।।8।।

ओदनेन यज्ञवचः सर्वे लोकाः समाप्याः ।।9।।

शब्दार्थाः

चक्षुः= दृष्टि, मुसलम्= मूसल, कामः= इच्छा या अभिलाषा, उलूखलम् = ओखली, दितिः= असुरों की माता, शूर्पम्= सूप, अदितिः= देवों की माता, शूर्पग्राही= सूप पकड़ने वाली, अपाविनक् = भूसे को अलग करने वाला, तण्डुलाः= चावल, मशकाः= मच्छर, तुषाः=भूसा, कुम्भी= स्थाली, राध्यमानस्य= पकनेवाला का, द्यौ=द्युलोक, अपिधानम्= ढक्कन, ऋतम्= पृथ्वी का समस्त जल, अवनेजनम्= प्रक्षालन के लिए, कुल्या= छोटा तालाब या नहर

उपसेचनम्= धोवन धोने के बाद निकलने वाला जल, ऋतवः= वसन्तादि छह ऋतुएँ, पक्तारः= पकानेवाले या रसोइये, आर्तवाः= ऋतु संबंधी दिन और रात, समिन्धते= जलाते हैं, ओदनस्य= भात का, बृहस्पतिः= ऋग्वैदिक देवता, शिरः= शिर/मस्तक, द्यावापृथिवी= आकाश और भूमि, श्रोत्रे = दोनों कान, अक्षिणी= दोनों आँखें, प्राणापानाः= श्वास और निश्वास, यज्ञवचः=यज्ञ करनेवाले, समाप्याः= प्राप्त करते हैं ।

अन्वय

चक्षुः मुसलं काम उलूखलम् ।।1।।

शूर्पम् दितिः शूर्पग्राही अदितिः अपावनिक् वातः ।।2।।

कणा अश्वाः तण्डुलाः गावः तुषाः मशकाः ।।3।।

इयमेव पृथिवी कुम्भी भवति राध्यमानस्य ओदनस्य अपिधानम् द्यौः ।।4।।

हस्तावनेजनं ऋतम् उपसेचनम् कुल्या ।।5।।

पक्तार ऋतवः समिन्धते आर्तवाः ।।6।।

तस्य ओदनस्य शिरः बृहस्पतिः मुखम् ब्रह्म ।।7।।

श्रोत्रे द्यावापृथिवी अक्षिणी सूर्याचन्द्रमसौ प्राणापानाः सप्तऋषयः ।।8।।

यज्ञवचः ओदनेन सर्वे लोकाः समाप्याः ।।9।।

भावार्थ

1. चक्षु है मूसल और इच्छा है ओखली (जिसमें मूसल से धान कूटा जाता है।)

2. सूप है दिति, सूप पकड़नेवाली है अदिति और (भूसे को चावल से) अलग करने वाली है हवा।

3. चावल हैं गायरूप, उसके कण हैं अश्वरूप और भूसा हैं मच्छर रूप।

4. (चावल पकाने के लिए) यही पृथ्वी पात्र बर्तन है और पकाए जा रहे भात (के पात्र) का ढक्कन है द्युलोक।

5. हाथ धोने के लिए ऋत यानी पृथ्वी का समस्त जल है। धोवन यानी धोने के बाद निकला जो जल है वह छोटा–मोटा तालाब है।

6. (चावल को पकानेवाली) रसोइया हैं वसन्तादि छह ऋतुएँ और इन्धन हैं ऋतु से सम्बन्धित दिन और रात।

7. उस ओदन यानी भात का मस्तक है बृहस्पति और मुख है ब्रह्म।

8. (उस ओदन के) दोनों कान हैं द्यावापृथिवी यानी आकाश और भूमि। दोनों आँखें हैं सूर्य और चन्द्रमा। प्राण व अपान वायु सात ऋषि हैं।

9. यज्ञ करने वाले ओदन के माध्यम से समस्त लोक को प्राप्त करते हैं ।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत।

(क) देवानां माता अदितिः किं करोति ?

(ख) वातः किं करोति तण्डुलस्य ?

(ग) कस्य पिधानं करोति द्यौः ?

(घ) तण्डुलस्य पाककार्यं काः कुर्वन्ति?

(ङ.) सूर्यः चन्द्रश्च ओदनस्य कौ स्तः?

(च) ओदनेन कस्मै सर्वे लोकाः समाप्याः ?

2. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत –

(क) मुसलम्, उलूखलम्, शूर्पम्, कुल्या, कुम्भी

(ख) दितिः, अदितिः, कुन्ती, अंजनी, शकुनिः

(ग) शिरः, मुखम्, वस्त्रम्, हस्तम्, पादम्,

(घ) बृहस्पतिः, द्युलोकः, पृथ्वी, वरुणः, शनिः

(ङ.) यज्ञवचः, ऋतवः, वसन्तः, शिशिरः, ग्रीष्मः

3. कोष्ठकान्तर्गतेषु शब्देषु उपयुक्तां विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) असुराणां .... दितिः शूर्पमस्ति। (मातृ)

(ख) तण्डुलाः .... पच्यन्ते। (कुम्भी)

(ग) राध्यमानस्य ओदनस्य पक्तारः सन्ति .... । (ऋतु)

(घ) .... मुखम् ब्रह्म अस्ति। (ओदन)

(ड.) प्राणापानाः .... सप्तऋषयः सन्ति। (वायु)

4- LFkyinkU;f/kdR; Ik'ufuek.k d#rA

(क) उलूखले मुसलेन अन्नं कुट्ट्यते।

(ख) तण्डुलाः गावः इव सन्ति।

(ग) हस्तप्रक्षालनार्थम् ऋतम् अस्ति।

(घ) बृहस्पतिः देवानां गुरुः मन्यते।

(ड.) वेदेषु द्यावापृथिवी युगलदेवरुपेण वर्णितौ।

5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि मातृभाषया लिखत।

(क) आपने ओखली और मूसल का प्रयोग कहां कहां देखा है ?

(ख) हवा अनाज के साथ क्या क्या करती है ?

(ग) अनाज के भूसे का कौन सा गुण मशक से मिलता है ?

(घ) अपने आस पास आपने किन किन लोगों को रसोइये के रुप में देखा है ?

(ड.) उपर्युक्त मन्त्रों में शरीर के किन किन अंगों का उल्लेख आया है ?

6. तृच् प्रत्ययान्तानां नवीनानां शब्दानां निर्माणं कुरुत।

यथा – पच् + तृच् – पक्ता

नी + तृच् – ....

कृ + तृच् – ....

दा + तृच् – ....

वच् + तृच् – ....

श्रु + तृच् – ....

7. छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। अपनी भाषा में धान की रोपाई, निदाई, कटाई के गीतों का संग्रह कीजिए।

8. भात बहुत सारे लोगों का प्रिय भोजन है। कक्षा के बच्चे अपने प्रिय भोजनों की सूची बनाएं और उनके संस्कृत शब्द लिखें।

———000———

R3FDX6

दशमः पाठः

परिवारः लघु एव वरम्

तीव्रगति से बढ़ती हुई जनसंख्या देश की एक प्रमुख समस्या है। इस समस्या की वृद्धि के कारणों में निरक्षरता भी एक प्रमुख कारण है। शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर, छोटे परिवार के महत्व को बताया जा सकता है। प्रस्तुत पाठ में सरल एवं हृदयस्पर्शी परिसंवादों के माध्यम से बड़े परिवार में आने वाली समस्याओं एवं कठिनाइयों को उद्घाटित करते हुए छोटे परिवार के महत्व को चित्रित किया गया है।

(ज्वरपीड़ितः मोहनः पर्यङ्के शयानोऽस्ति। तस्मिन्नेव कक्षे गृहिणी गृहकर्मणि संलग्ना अस्ति। मोहनस्य अष्टकन्याः द्वौ पुत्रौ च संति।)

मोहन : – अद्य मां भृशं शिरोवेदना बाधते। रात्रौ अपि न सुखेन शयितो अस्मि। राधिके गृहकार्यं परित्यज्य इत एव आगच्छ।

राधिका – त्वं वारं–वारं मां आह्वयसि, किमहं करोमि? आसन्नं हि दीपमालिकापर्व। गृहे दशरुप्यकाणि अपि न सन्ति। किं एवमेव मम जीवनं यास्यति। इति विचार्य विचार्य गहने तमसि निमग्नं मे मनः।

गोविन्दः– (प्रविश्य) पितृवर! अहं विद्यालयात् आगतोऽस्मि। श्वः अहं विद्यालयं न गमिष्यामि। मम हस्ते श्यामपट्टिका लेखनवर्तिका चापि नास्ति। एकं पुस्तकमपि न वर्तते पठनार्थम् अभ्यास–पुस्तिकानां तु का कथा।

विद्या – मम कक्षाध्यापिका मां प्रतिदिनं विद्यालयशुल्कपूर्तये भर्त्सयति। सर्वाः मम सहपाठिन्यः मामेव लक्षीकृत्य हसन्ति। सर्वाभिः छात्राभिः विद्यालयशुल्कं दत्तम्। मासान्ते कक्षापञ्जिकायाः मम नाम कर्तिष्यति।

कमला – मातः! प्रतिदिनमेव मह्यं कक्षाध्यापिका विषयाध्यापकाश्च विद्यालयगणवेशं धारयितुं कथयन्ति। अहं तु एकं मलिनं वस्त्रं परिधाय विद्यालयं यामि। प्रतिदिनमेव मे कक्षायाः बहिः निष्कासनं क्रियते। कक्षागवाक्षात् एव पाठ्यमानं विषयं अहं शृणोमि।

श्यामा – मातः! दशमी कक्षा तु मया उत्तीर्णा। न प्रेषयसि मां विद्यालयं साम्प्रतम्। गृहमेव उपविष्टा अहं किं करिष्यामि। देहि मे त्रिंशतरुप्यकाणि अहं सूचिकर्मणः प्रशिक्षणं प्राप्तुं प्रशिक्षणालयं यास्यामि।

गोपालः– पितः! देहि मे शतरुप्यकाणि मम भगिनी विद्या मह्यं द्वे क्रीडनके क्रेतुम् आपणं यास्यति।

निर्मला– पितः मम पार्श्वे चित्रकर्माभ्यासपुस्तिका नास्ति। देहि मे पञ्चविंशतिरुप्यकाणि अद्यैव तां क्रीत्वा अहं विषयाध्यापिकया दत्तं गृहकार्यं करिष्यामि।

राधिका– स्वामिन्! इयं मे पुत्री मनोरमा कियत्कालात् रुग्णा वर्तते। किञ्चिदपि न खादति, शयाना एव दिनं यापयति। चिकित्सायै आतुरालयं गन्तुं धन–व्यवस्था अपि नास्ति।

सीता – मम सख्युः रशीदायाः परिणयोत्सवः आसन्नो वर्तते। मम अन्याः सख्यः तु सहस्त्राणां रुप्यकानाम् अभिनवान् उपहारान् दास्यन्ति। दास्यामि किमहं तस्यै। द्विशतं रुप्यकानां व्यवस्थां विना कोऽपि उपहारः आपणात् न लप्स्यते।

कविता – मातः! जीर्णानि मे सर्वाणि वस्त्राणि। दीप–मालिकापर्वणि तु नववस्त्राणि परिधाय लक्ष्मीपूजनं करिष्यामि।

सीमा – पितः! नगरे सर्वत्र दीपमालिकापर्वणः शुभागमने अग्निक्रीडनकानां पटापटशब्दः श्रूयते। अस्माकं गृहं न शोधितं न धवलीकृतं। मम सखीभिः तु प्रभूतेन धनव्ययेन क्रीतानि अग्निक्रीडनकानि। इदानीं तु अहमपि पञ्चशतरुप्यकानाम् अग्निक्रीडनकानि क्रेतुम् इच्छामि।

मोहनः – न पश्यथ यूयं मम अवस्थाम्। ज्वरेण वेपते मे शरीरम्। एकतः रुग्णावस्था, अपरतः स्वार्थ–प्रेरिता यूयं सर्वे स्वमनोरथान् एव पश्यथ। सत्यमेवोच्यते– ''छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति।''

(मोहनस्य अभिन्नं मित्रम् अनिलः स्वभार्यया सह प्रविशति द्वे कन्ये महिमा, गरिमा चापि प्रविशतः। सर्वे अभिवादनं कुर्वन्ति।)

अनिलः– मित्रवर! नमस्ते! शुभं ते दीपोत्सवः भवतु। नगरे सर्वत्र दीप–महोत्सवस्य चाकचक्यं दृश्यते। त्वं कथं म्लानमुखः शयानोऽसि। अस्माकं भ्रातृजायापि कथं तूष्णीमुपविष्टा। अपि कुशलिनः भवन्तः?

मोहनः– मित्र! किं कथयामि ? शून्यमिव दृश्यते मे जगत्। मत्कृते तु जीवने न कोऽपि अभिलाषः। अहन्तु मरणमेव शरणं पश्यामि।

श्रुतिः– भ्रातृवर! अस्मिन् हर्षोल्लासमये कातरवचनानि ब्रुवाणः अस्माकं भगिनीं पुत्रान्, कन्यकाः च कथं दुःख–सागरे निमज्जयसि। संसारे दुःखानि सुखानि च चक्रवत् परिवर्तन्ते। आत्मबलं न त्याज्यम् आपत्स्वपि।

मोहनः– मित्र! परिवार एव मम दुःखस्य कारणम्। मम एषा पुत्री श्यामा विवाहयोग्या संजाता।

अनिलः– मित्रवर! न ते वचोऽभिनन्दामि। चिन्ता तु शिक्षादीक्षाकृते च करणीया। यदि अन्यथा न मन्यसे तर्हि वृहत् परिवारः एव युष्मदीयं दुःखकारणम्। वृत्या तु भवत्सदृशमेव अर्थोपार्जनं क्रियते मया।

श्रुतिः– भ्रातृवर! मम तु कन्ये पुत्रसमे एव स्तः। एका तु चिकित्साक्षेत्रे आयुर्वेद–पाठ्यक्रमे अध्ययनं करोति। अपरा संस्कृत स्नातकोत्तर–पाठ्यक्रमे पठति। आवां स्वस्थप्रसन्नौ स्व द्वे कन्यकेऽपि च। अस्माकं सदनं सानन्दम्।

राधिका– भगिनि! आवाभ्यां नियोजितपरिवारविषये कदापि न चिन्तितम्। अस्मिन् विषये पूर्वम् आवां न प्रेरितौ।

अनिलः – गतस्य शोचनं न करणीयम्। लघुपरिवारविषये अन्यान् प्रेरयन् स्वपरिवारम् अपि प्रकारान्तरेण प्रेरय। मत्सामर्थ्यानुसारेण अहं सहयोगाय तत्परः। इदानीम् अस्मान् गृहगमनाय आज्ञापयतु।

मोहनराधिके – गच्छतु भवान् पुनर्दर्शनाय।

(श्रुत्यनिलौ पुत्रीभ्यां सह स्वगृहं प्रति गच्छतः)

शब्दार्थाः

पर्यङ्के	=	पलङ्ग पर
भृशं	=	बहुत
शिरोवेदना	=	सिरदर्द
इत एव	=	यहीं
आह्वयसि	=	बुलाते हो
आसन्नं	=	निकट
यास्यति	=	जायेगा, बीतेगा
गहनेतमसि	=	गहन अंधकार में।
श्यामपट्टिका	=	स्लेट/पट्टी
लेखनवर्तिका	=	पेंसिल
शुल्कपूर्तये	=	शुल्क पटाने के लिए
भर्त्सयति	=	डाँटते हैं
लक्षीकृत्य	=	लक्ष्य करके
कक्षापञ्जिकायाः	=	कक्षा के रजिस्टर में से
कर्तिष्यति	=	काटेंगे
परिधाय	=	पहनकर
यास्यामि	=	जाऊँगी
गवाक्षात्	=	खिड़की से
पाठ्यमान	=	पढ़ाये जा रहे
प्रेषयसि	=	तुम भेजते हो
उपविष्टा	=	बैठी हुई
सूचिकर्मणः	=	सिलाई के काम का
क्रीडनके	=	खिलौने

आपणं	=	दुकान/ बाजार
चित्रकर्म	=	चित्रकार के काम की/चित्रकारी
क्रीत्वा	=	खरीदकर
कियत्	=	कितने
रुग्णा	=	बीमार
आतुरालयम्	=	अस्पताल
परिणयोत्सवः	=	विवाहोत्सव
जीर्णानि	=	फटे पुराने
अग्निक्रीडनकानाम्	=	पटाखों का
शोधितम्	=	साफ किया गया।
धवलीकृतम्	=	सफेदी दी गई। पोता गया
वेपते	=	काँप रहा है।
छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवन्ति	=	कमियों में बहुत अनर्थ होते है।
स्वमनोरथान्	=	अपनी इच्छाओं को
चाकचक्यम्	=	चकाचक, चकाचौंध
भ्रातृजाया	=	भाभी, भौजाई
परिवर्तन्ते	=	घूमते हैं
आपत्स्वपि	=	विपत्तियों में भी
खलु	=	निश्चित ही
अभिनन्दामि	=	सहमत हूँ
करणीया	=	करनी चाहिए
युष्मदीयम्	=	तुम्हारी
वृत्या	=	नौकरी से/ पेशे से
शोचनम्	=	शोक
प्रकारान्तरेण	=	अलग–अलग ढंग या माध्यम से

अभ्यासः

1. संस्कृतभाषया उत्तरत –

(क) मोहनः कया वेदनया पीडितः आसीत्?

(ख) किं पर्व आसन्नं वर्तते?

(ग) गोविन्दः केन कारणेन विद्यालयं गन्तुं न इच्छति?
(घ) का सूचिकर्मणः प्रशिक्षणं प्राप्तुं वाञ्छति?
(ङ) गोपालः किमर्थं रुप्यकाणि याचते?
(च) दीपमालिकापर्वणि कस्य शब्दः श्रूयते?
(छ) संसारे कानि–कानि चक्रवत् परिवर्तन्ते?
(ज) कीदृशः परिवारः एव वरम्?

2. अधोलिखितानां शब्दानां मूलशब्द–विभक्तिवचन–लिङ्गानि लिखत –

	शब्दरुपम्	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा–	विद्यालयात्	विद्यालय	पुल्लिंग	पञ्चमी	एक
1.	पूर्तये	————	————	————	————
2.	सर्वाभिः	————	————	————	————
3.	कक्षायाः	————	————	————	————
4.	मह्यम्	————	————	————	————
5.	भार्यया	————	————	————	————
6.	आवां	————	————	————	————

3. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत–

1. 'क्त्वा और ल्यप्' का प्रयोग कर वाक्य बनाइये।
2. 'उपसर्ग और प्रत्यय' में अंतर उदाहरण सहित लिखिए–
3. 'तरप् एवं तमप्' प्रत्यय का प्रयोग कर सार्थक शब्द का निर्माण कीजिए।
4. सह,साकं, सार्धं, समं का प्रयोग कर वाक्य बनाइये।

4. निम्नांकितेषु तत्पुरुषसमासं चिनुत –

ज्वरपीडितः, शिरोवेदना, कक्षाध्यापिका, प्रतिदिनम्, विद्यालयगणवेशः, अभ्यासपुस्तिका, दीपमालिका, दीपोत्सवः।

5. अधोलिखितेषु पदेषु कृदन्ततद्धित–शब्दान् पृथक् कुरुत –

शब्दाः – गत्वा, मर्मज्ञः, प्रवक्ता लिखितः, पठितुम्, वात्सल्यम्, नष्टः, भवदीयः लघुतमः, पूजितः।

1.	कृदन्ताः	–––––	–––––	–––––	–––––
		–––––	–––––	–––––	–––––
2.	तद्धिताः	–––––	–––––	–––––	–––––
		–––––	–––––	–––––	–––––

6. अधोलिखितपदेषु संधिविच्छेदं कृत्वा नामानि लिखत –

	पदम्	संधि–विच्छेदः	नाम
(क)	महतीह	–––––	–––––
(ख)	शयानोऽस्ति	–––––	–––––
(ग)	तस्मिन्नेव	–––––	–––––
(छ)	छिद्रेष्वनर्थाः	–––––	–––––
(ङ)	तूष्णीमुपविष्टा	–––––	–––––

––––000–––

R3Y61G

,dkn'k% ikB%

fofp=% lk{kh

R48234

प्रस्तुत पाठ श्री ओमप्रकाश ठाकुर द्वारा रचित कथा का सम्पादित अंश है। यह कथा बंगला के प्रसिद्ध साहित्यकार बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा न्यायाधीश रूप में दिए गए फैसले पर आधारित है। सत्यासत्य के निर्णय हेतु न्यायाधीश कभी–कभी ऐसी युक्तियों का प्रयोग करते हैं जिससे साक्ष्य के अभाव में भी न्याय हो सके। इस कथा में भी विद्वान् न्यायाधीश ने ऐसी ही युक्ति का प्रयोग कर न्याय करने में सफलता पाई है।

कश्चन् निर्धनो जनः भूरि परिश्रम्य किञ्चिद् वित्तमुपार्जितवान्। सः स्वपुत्रं एकस्मिन् महाविद्यालये प्रवेशं दातुं सफलो जातः। तत्तनयः तत्रैव छात्रावासे निवसन् अध्ययने संलग्नः समभूत्। एकदा स पिता तनुजस्य रुग्णतामाकर्ण्य व्याकुलो जातः। पुत्रं द्रष्टुं च प्रस्थितः। परमर्थकार्श्येन पीडितः स बसयानं विहाय पदातिरेव प्राचलत्।

पदातिक्रमेण संचलन् सायं समये अप्यसौ गन्तव्याद् दूरे आसीत्। निशान्धकारे प्रसृते विजने प्रदेशे पदयात्रा न शुभावहा। एवं विचार्य स पार्श्वस्थिते ग्रामे रात्रिनिवासं कर्त्तुं कञ्चिद्

गृहस्थमुपागतः। करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्। विचित्रा दैवगतिः। तस्यामेव रात्रौ तस्मिन् गृहे कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः। तत्र निहितामेकां मञ्जूषाम् आदाय पलायितः। चौरस्य पादध्वनिना प्रबुद्धोऽतिथिः चौरशंकया तमन्वधावत् अगृह्णाच्च, परं विचित्रामघटत। चौरः एव उच्चैः क्रोशितुमारभत "चौरोऽयं चौरोऽयम्" इति। तस्य तारस्वरेण प्रबुद्धाः ग्रामवासिनः स्वगृहाद् निष्क्रम्य तत्रागच्छन् वराकमतिथिमेव च चौरं मत्वा अभर्त्सयन्। यद्यपि ग्रामस्य आरक्षी एव चौर आसीत्। तत्क्षणमेव रक्षापुरुषः तम् अतिथिं चौरोऽयम् इति प्रख्याप्य कारागृहे प्राक्षिपत्।

अग्रिमे दिने स आरक्षी चौर्याभियोगे तं न्यायालयं नीतवान्। न्यायाधीशो बंकिमचन्द्रः उभाभ्यां पृथक–पृथक् विवरणं श्रुतवान्। सर्वं वृत्तमवगत्य स तं निर्दोषम् अमन्यत आरक्षिणं च दोषभाजनम्। किन्तु प्रमाणाभावात् स निर्णेतुं नाशक्नोत्। ततो तौ अग्रिमे दिने उपस्थातुम् आदिष्टवान्।

अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व–स्व–पक्षं पुनः स्थापितवन्तौ। तदैव कश्चिद् तत्रत्यः कर्मचारी समागत्य न्यवेदयत् यत् इतः क्रोशद्वयान्तराले कश्चिज्जनः केनापि हतः। तस्य मृतशरीरं राजमार्गं निकषा वर्तते। आदिश्यतां किं करणीयमिति। न्यायाधीशः आरक्षिणम् अभियुक्तं च तं शवं न्यायालये आनेतुमादिष्टवान्।

आदेशं प्राप्य उभौ प्राचलताम्। तत्रोपेत्य काष्ठपटले निहितं पटाच्छादितं देहं स्कन्धेन वहन्तौ न्यायाधिकरणं प्रति प्रस्थितौ। आरक्षी सुपुष्टदेह आसीत्, अभियुक्तश्च अतीव कृशकायः। भारवतः शवस्य स्कन्धेन वहनं तत्कृते दुष्करम् आसीत्। स भारवेदनया क्रन्दति स्म। तस्य क्रन्दनं निशम्य मुदित आरक्षी तमुवाच–'रे दुष्ट! तस्मिन् दिने त्वया अहं चोरिताया मञ्जूषाया ग्रहणाद् वारितः। इदानीं निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे" इति प्रोच्य उच्चैः अहसत्। यथाकथञ्चिद् उभौ शवमानीय एकस्मिन् चत्वरे स्थापितवन्तौ।

न्यायाधीशेन पुनस्तौ घटनायाः विषये वक्तुमादिष्टौ। आरक्षिणि निजपक्षं प्रस्तुतवति आश्चर्यमघटत् स शवः प्रावारकमपसार्य न्यायाधीशमभिवाद्य निवेदितवान्– मान्यवर! एतेन आरक्षिणा अध्वनि यदुक्तं तद् वर्णयामि 'त्वया अहं चोरितायाः मञ्जूषायाः ग्रहणाद् वारितः, अतः

निजकृत्यस्य फलं भुङ्क्ष्व। अस्मिन् चौर्याभियोगे त्वं वर्षत्रयस्य कारादण्डं लप्स्यसे' इति। न्यायाधीशः आरक्षिणे कारादण्डमादिश्य तं जनं ससम्मानं मुक्तवान्। अतएवोच्यते –

n"djk.;fi dekf.k efroHko'kkfyu%A
uhfr ;fDr lekyEC; yhy;So izdqorAA

'kCnkFkk%

भूरि	–	अत्यधिक
उपार्जितवान्	–	कमाया
निवसन्	–	रहते हुए
प्रसृते	–	फैलने पर
विजने प्रदेशे	–	एकान्त प्रदेश में
शुभावहा	–	कल्याणकारी
गृही	–	गृहस्थ
दैवगतिः	–	भाग्य की लीला
पलायितः	–	भाग गया,
प्रबुद्धः	–	जागा हुआ
त्वरितम्	–	शीघ्रगामी
प्रस्थितः	–	चला गया
अर्थकार्श्येन	–	धनाभाव के कारण
पदातिरेव	–	पैदल ही
निहिताम्	–	रखी हुई
अन्वधावत्	–	पीछे भागा
क्रोशितुम्	–	चिल्लाना
तारस्वरेण	–	ऊँची आवाज में
अभर्त्सयन्	–	भला–बुरा कहा
प्रख्याप्य	–	स्थापित करके
चौर्याभियोगे	–	चोरी के आरोप सें
नीतवान्	–	ले गया
अवगत्य	–	जानकर
दोषभाजनम्	–	दोषी

उपस्थातुम्	–	उपस्थित होने के लिए
आरक्षिणम्	–	सैनिक
आदिष्टवान्	–	आज्ञा दी
स्थापितवन्तौ	–	स्थापना की
तत्रत्यः	–	वहाँ का
न्यवेदयत्	–	प्रार्थना की
क्रोशद्वयान्तराले	–	दो कोस के मध्य
आदिश्यताम्	–	आज्ञा दीजिए
उपेत्य	–	पास जाकर
काष्ठपटले	–	लकड़ी के तख्ते पर
निहितम्	–	रखा गया
पटाच्छादितम्	–	कपड़े से ढँका हुआ
वहन्तौ	–	वहन करते हुए
कृशकायः	–	कमजोर शरीरवाला
भारवतः	–	भारवाही
भारवेदनया	–	भार की पीड़ा से
क्रन्दनम्	–	रोने का
निशम्य	–	सुन करके
मुदितः	–	प्रसन्न
भुङ्क्ष्व	–	भोग करो
चत्वरे	–	चौकोर जगह, चबूतरेपर
लप्स्यसे	–	प्राप्त करोगे
प्रावारकम्	–	लबादा को
अपसार्य	–	दूर करके
अभिवाद्य	–	अभिवादन करके
अध्वनि	–	रास्ते में
यदुक्तम्	–	जो कहा गया
वारितः	–	रोका गया
मुक्तवान्	–	छोड़ दिया
समालम्ब्य	–	सहारा लेकर
लीलयैव	–	खेल–खेल से ही
आदिश्य	–	आदेश देकर

vH;kl%

1- vèkksfyf[krkuka iz'ukuke~ mÙkjkf.k laLÑrHkk"k;k fy[kr&

(क) निर्धनः जनः कथं वित्तम् उपार्जितवान्?

(ख) जनः किमर्थं पदातिः गच्छति?

(ग) प्रसृते निशान्धकारे जनः किम् अचिन्तयत्?

(घ) वस्तुतः चौरः कः आसीत्?

(ङ.) जनस्य क्रन्दनं निशम्य आरक्षी किमुक्तवान्?

(च) मतिवैभवशालिनः दुष्कराणि कार्याणि कथं साधयन्ति?

2- js[kkafdrinekèkR; iz'ufuekZ.ka d#r&

(क) पुत्रं द्रष्टुं सः प्रस्थितः।

(ख) करुणापरो गृही तस्मै आश्रयं प्रायच्छत्।

(ग) चौरस्य पादध्वनिना अतिथिः प्रबुद्धः।

(घ) न्यायाधीशः बंकिमचन्द्रः आसीत्।

(ङ.) जनः भारवेदनया क्रन्दति स्म।

(च) उभौ शवं चत्वरे स्थापितवन्तौ।

3- lfU/k@lfU/kfoPNsna p d#r&

(क) पदातिरेव – .... + ...

(ख) निशान्धकारे – .... + ...

(ग) अभि + आगतम् – ....

(घ) भोजन + अन्ते – ....

(ङ.) चौरोऽयम् – .... + ...

(च) गृह + अभ्यन्तरे – ....

(छ) लीलयैव – .... + ...

(ज) यदुक्तम् – .... + ...

(झ) प्रबुद्धः + अतिथिः– ....

4- v/kkfyf[krkfu inkfu fHkUu&fHkUu iR;;kUrkfu lfUrA rkfu iFkd~ ÑRok fufnZ"Vkuk iR;;kuke/k% fy[kr&

ifjJE;] mikftZroku] nkif;re] iafLFkr%] n"Ve] fogk;] i"Voku] ifo"V%] vknk;] Økf'kre] fu;Dr%] uhroku] fu.khre] vkfn"Voku] lekxR;] fu'kE;] ikP;] vilk;A

ल्यप्	क्त	क्तवतु	तुमुन्
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

5- fHkUuiÑfrda in fpur&

(क) विचित्रा, शुभावहा, शंकया, मञ्जूषा

(ख) कश्चन, किञ्चित्, त्वरितं, यदुक्तम्

(ग) पुत्राः, तनयः, व्याकुल, तनूजः

(घ) करुणापरः, अतिथिपरायणः, प्रबुद्धः, जनः

6- ¼d½ ^fud"kk* ^ifr* bR;u;k% 'kCn;k% ;kx f}rh;k&foHkfDr% HkofrA mnkgj.keu lR; f}rh;k&foHkDr% i;kx ÑRok fjDrLFkkuifr d#r&

;Fkk& jktekx fud"kk er'kjhj orrA

(क) .... निकषा नदी वहति। (ग्राम)

(ख) .... निकषा औषधालयः वर्तते। (नगर)

(ग) तौ .... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधिकारिन्)

(घ) मोहनः .... प्रति गच्छति। (गृह)

¼[k½ dk"Bd"k nÙk"k in"k ;Fkkfufn"Vk foHkfDr i;T; fjDrLFkkukfu ij;r&

(क) .... निष्क्रम्य बहिरगच्छत्। (गृह शब्दे पंचमी)

(ख) चौरशंकया अतिथिः .... अन्वधावत्। (चौरशब्दे द्वितीया)

(ग) गृहस्थः .... आश्रयं प्रायच्छत्। (अतिथि शब्दे चतुर्थी)

(घ) तौ .... प्रति प्रस्थितौ। (न्यायाधीश शब्दे द्वितीया)

7- vèkkfyf[krkfu okD;kfu cgopu ifjorr;r&

(क) स बसयानं विहाय पदातिरेव गन्तुं निश्चयं कृतवान्।

(ख) चौरः ग्रामे नियुक्तः राजपुरुषः आसीत्।

(ग) कश्चन चौरः गृहाभ्यन्तरं प्रविष्टः।

(घ) अन्येद्युः तौ न्यायालये स्व–स्व–पक्षं स्थापितवन्तौ।

––––000–––

R4GX4R

R4QT6E

}kn'k% ikB%

geUr&o.kue~

(संस्कृत साहित्य में प्रायः कविगण ऋतुओं का वर्णन करते हैं किन्तु हेमन्त वर्णन उन्हें अधिक नहीं रूचता। आदि कवि इसके अपवाद हैं। उन्होंने सरल मधुर शैली में इस ऋतु का मोहक वर्णन किया है। प्रस्तुत पद्यांश 'वाल्मीकि–रामायणम्'' के अरण्यकाण्ड से उद्धृत है।)

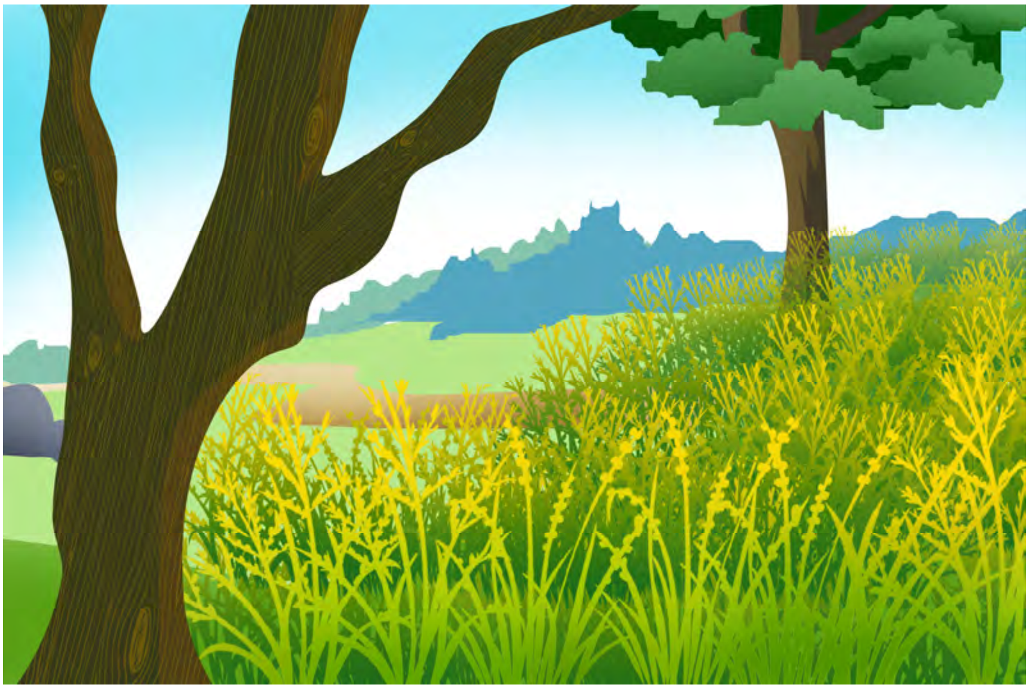

अयं स कालः सप्राप्तः प्रियो यस्ते प्रियंवद।
अलंकृत इवाभाति येन संवत्सरः शुभः ।। 1।।

नीहार परुषो लोकः, पृथिवी सस्यशालिनी।
जलान्यनुपभोग्यानि, सुभगो हव्यवाहनः।। 2।।

सेवमाने दृढं सूर्ये दिशमन्तकसेविताम्।
विहीनतिलकेव स्त्री नोत्तरा दिक्प्रकाशते।। 3।।

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्च साम्प्रतम्।
यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः।। 4।।

अत्यन्तसुखसञ्चारा मध्याह्ने स्पृशतः सुखाः।
दिवसाः सुभागादित्याश्छायासलिलदुर्भगाः।। 5।।

मृदुसूर्याः सनीहाराः पटुशीताः समारुताः।
शून्यारण्या हिमध्वस्ता दिवसा भान्ति साम्प्रतम्।। 6।।

रविसंक्रान्त–सौभाग्यस्तुषारारुणशीतलः।
निः श्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते।। 7।।

ज्योत्स्ना तुषारमलिना पौर्णमास्यां न राजते।
सीतेव चातप श्यामा लक्ष्यते न तु शोभते।। 8।।

प्रकृत्या शीतलस्पर्शो हिमविद्धश्चसाम्प्रतम्।
प्रवाति पश्चिमो वायुः काले द्विगुणशीतलः।। 9।।

खर्जूरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
शोभन्ते किञ्चदानम्राः शालयः कनकप्रभाः ।। 10।।

अवश्यायतमोन्नद्धा नीहारतमसा वृताः।।
प्रसुप्ता इव लक्ष्यन्ते विपुष्पा वनराजयः ।। 11।।

'kCnkFkk%

परुषः = कठोर

सुभगो = सुन्दर

हव्यवाहनः = अग्नि

संवत्सरः = वर्ष, साल

नीहारपरुषः = ओस के कारण अकड़ा हुआ।

अनुपभोग्यानि = उपयोग के अयोग्य

हिमविद्धः = बर्फ से जमा हुआ।

अन्तकसेविता दिक् = दक्षिण दिशा (दक्षिण दिशा अन्तक–यम की दिशा मानी जाती है।)

आदर्शः = शीशा, दर्पण

लक्ष्यते = दिखाई देता है।

शालयः = बड़े धान के पौधे

अवश्याय = ओस।

lekl%

सस्यशालिनी = सस्येन (अन्नेन) शालते (शोभते) इति।

हव्यवाहनः = हव्यं वाहतीति।

हिमकोशाढ्य = हिमस्य कोशः इति हिमकोशः तेन आढ्यः।

सनीहाराः = नीहारैः सह

अवश्याय–तमोन्नद्धाः = अवश्यायं च तमश्च इति अवश्यायतमसी ताभ्यां नद्धाः।

vH;kl%

1- vèkkfyf[krkuk i'ukuke mÙkjkf.k lLÑrHkk"k;k fy[kr&

1. हेमन्तकाले किं सुखावहं भवति?
2. कीदृशाः दिवसाः भवन्ति हेमन्ते?
3. हेमन्त–ऋतौ शालयः कामवस्थां प्रतिपद्यन्ते?

2- vèkkfyf[krku okD;ku lLdrHkk"k;k vuokn d#r &

1. इस ऋतु से संवत्सर शोभित होता है।
2. इस समय धूप अच्छी लगती है।
3. हेमन्त में उत्तर दिशा मलिन दिखाई देती है।
4. शीत के डर से पक्षी पानी में नहीं घुसते हैं।
5. इस समय वृक्ष सोये से दिखाई देते हैं।

3- vèkkfyf[krkuxz.k vH;kldk;Z d#r &

1. प्रथम श्लोक का अन्वय कीजिए।
2. चौथे श्लोक में उपमा को समझाइए।
3. इस वर्णन के आधार पर हेमन्त का वर्णन कीजिए।
4. आठवें श्लोक का अर्थ लिखिए।
5. कवि ने शालि धान के लिए कौन–कौन से विशेषण दिए हैं?

–––––000–––

R4ZP82

त्रयोदशः पाठः

यात्रा मङ्गलम्प्रति

(विषय प्रवेश– अन्तरिक्ष के ज्ञान–विज्ञान की परम्परा में भारतीयों का योगदान वन्दनीय रहा है। इसी परम्परा की एक कड़ी ***इसरो*** *द्वारा प्रक्षेपित मङ्गलयान है। इसरो के इस सफल अभियान ने अन्तरिक्ष सम्बन्धी शोध के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व में भारत का वर्चस्व स्थापित किया है। प्रस्तुत पाठ में मंगलयान से सम्बद्ध (कई तथ्यों को उद्घाटित किया गया है।)*

5 नवम्बरः 2013 खीष्टाब्दस्य बुधवासरे सर्वत्र मङ्गलम् मङ्गलमिति ध्वनिः भारते व्याप्ता आसीत्। भारतीयानां दृष्टिः इसरोसंस्थायाः मङ्गलक्रार्यक्रमे आसीत्। श्रीहरिकोटायाः सतीशधवनान्तरिक्षकेन्द्रे उपस्थिताः जना उल्लसिताः आसन्। प्रायः सार्धसप्तवादने मङ्गलयानस्य प्रवाहकः भागः सक्रियः अभवत्। ततः निमेषानन्तरम् एव तस्य साफल्यम् असाफल्यम् वा निर्धारितम् आसीत्। परं बुधवासरः मङ्गलमयः अभवत्, यदा मॉम (मार्स ऑर्बिटर मिशन) इत्यस्य प्रथमं चरणं सफलं जातम्।

मङ्गलयानस्य सफलपरीक्षणेन न केवलं भारतस्य अपितु एशियामहाद्वीपस्यापि प्रतिष्ठा वैश्विकपटले समेधिता। यतः अद्यावधिपर्यन्तं न हि कश्चन देशः स्वकीये प्रथमप्रयासे मङ्गलग्रहं प्रति यानप्रेषणे सफलताम् अलभत। हर्षस्य विषयोऽयं यत् भारतः निजप्रथमे प्रयासे एव स्वलक्ष्यं प्राप्तवान्। अमेरिका, यूरोपसंघः, सोवियतरूसः इति त्रयेण सह भारतः चतुर्थः देशः अस्ति यस्य त्रिवर्णः ध्वजः मङ्गलग्रहे प्रतिभाति अपि चास्य देशस्य प्राविधिककौशलं प्रतिपादयति ।

सम्प्रति संसारेऽस्मिन् मङ्गलग्रहं प्रति यानप्रेषणस्य एकपञ्चाशत् (51) प्रयासाः अभवन्। तेषु प्रयासेषु एकविंशतिप्रयासाः (21) एव सफलाः जाताः। प्रयासेऽस्मिन् अमेरिकादेशस्य प्रथमः प्रयासः अपि विफलः जातः। नासा चतुष्षष्ठ्युत्तरैकोनविंशतिख्रीष्टाब्दे (1964) 'मैरीनर–9' मिशन इति माध्यमेन मङ्गलग्रहकक्षं प्राप्तवान्।

सामान्यतया अन्तरिक्षस्य अन्वेषणस्य कार्यक्रमः अतिव्ययसाध्यः भवति। परञ्च अस्माकं मङ्गलकार्यक्रमस्य इदं वैशिष्टयम् अस्ति यदत्र अतीव न्यूनं धनमेव व्ययीभूतम्। अस्मिन् क्रार्यक्रमे **पञ्चाशदुत्तरचतुश्शतकोटि**–रुप्यकानि (450) निवेशितानि। एतावद्धनम् न्यूनम् आसीत् अन्यदेशीयापेक्षया। अपि च नासायाः 'मावेन' मिशन इत्यस्य व्ययीभूतधनस्य दशमः भागः वर्तते। अतोऽत्यधिकं धनं तु वैदेशिकचलचित्रानिर्माणे निवेशितं भवति। भारतः 'तरलमोटर' इति प्रविधिना मङ्गलकक्षायां मङ्गलयानं स्थापितवान्। ततः पूर्वं न हि कश्चन देशः एतादृशाय कार्यक्रमाय 'तरलमोटर' इति प्रविधिं प्रयुक्तवान्। यतः प्रायः अस्य प्रविधेः प्रयोगः चन्द्रग्रहकक्षाप्रवेशाय क्रियते।

PSLV C-25 प्रक्षेपकयानेन मङ्गलयानं प्रक्षिप्तः। मङ्गलयानस्य गतिः प्रति निमेषम् 22.57 किलोमीटर परिमीता इति आसीत्। वैज्ञानिकाः गतिनियन्त्राणं कृत्वा प्रति निमेषम् 4.6 किलोमीटर परिमितं कृतवन्तः। अयं कार्यक्रमः कठिनतमः आसीत्। यतः अत्र अवधेयता इयम् आसीत् यत् यानस्य गति एतावन्मन्दा मा भवतु येन तत् यानं मङ्गलस्य अधिकरणे ध्वस्तं भवेत्। अपि च यानस्य वेगः एतादृशः तीव्रः न स्यात् येन तत् मङ्गलकक्षात् बहिः अन्तरिक्षे विलुप्तताम् आप्नुयात्। अस्य यानस्य वेगः सप्तदा परिवर्तितः।

मङ्गलयानेन सार्धं कतिपयानि प्रयोगात्मकानि उपकरणानि यन्त्राणि चापि प्रेषितानि। तेषु छायाग्राहकयन्त्रेण मङ्गलग्रहे यानस्य प्रवेशे एव तस्य ग्रहस्य चित्रम् अधिगतम्। वस्तुतः अस्य प्रयोगस्योद्देश्यम् तत्र जीवनास्तित्वस्य अन्वेषणमेव। किं ब्रह्माण्डे पृथिवीग्रहे एव जीवाः विद्यन्ते इति मूलप्रश्नः। अपि च किं मङ्गले जीवनम् आसीत् आहोस्वित् भविष्यति वा? तस्याधारस्य, संरचनायाः, वातावरणस्य तत्रस्थाः ये खनिजपदार्थाः तस्याध्ययनम्। किं मगलग्रहे जलस्य अस्तित्वम् आसीत्? किमत्र रक्तग्रहे मीथेन अस्ति वा न यतः तस्यास्तित्वमेव जैविकं क्रियाकलापं निर्दिशति । एते प्रश्नाः अपि शोधनीयाः।

खलु अस्माकं मङ्गलयानकार्यक्रमः समग्रान्तरिक्षान्वेषणस्य शोधकार्यक्रमस्य आदर्शभूतः। अस्य साफल्येन अन्तरिक्षे भारतस्य प्रभावः उत्कर्षतां प्राप्नोत्। अनेन अन्तरीक्षव्यवसायस्य अवसरः आयास्यति युवानश्चापि सक्रियाः भविष्यन्ति।

शब्दार्थाः

निमेषानन्तरम् = कुछ समय के बाद ही, प्राविशत् = प्रवेश किया, वैश्विकपटले = सम्पूर्ण विश्व में, समेधिता = बढ़ाया, अलभत् = प्राप्त किया, प्रतिभाति = दिखाई देता है, प्राविधिककौशलम्= तकनीकि कुशलता, ख्रीष्टाब्द = ईश्वी, व्ययीभूतम् = खर्च हुआ, चन्द्रकक्षाप्रवेशाय = चन्द्रमा के कक्षा में प्रवेश के लिए, अकरोत् = किया, एतावन्मन्दम् = इतना धीमा, विलुप्तत्वम् = खो जाना, अधिगतम् = प्राप्त होना, सप्तधा = सात बार, आहोस्वित् = अथवा, आयास्यति = आयेगा , अपि च = और।

ifjHkkf"kd 'kCnkoY;k% ck/k%

1. **इसरो** – यह Indian Space Research Organisation यानी भारतीय अन्तरिक्ष अनुसन्धान संगठन का संक्षिप्त रूप है। जिसका मुख्यालय बङ्गलोर में है। संस्थान का मुख्य कार्य भारत के लिए अन्तरिक्ष सम्बन्धी तकनीकि उपलब्ध करवाना है ।
2. **मॉम–** (Mars Orbiter Mission = मंगल कक्षित्र मिशन – **भारतीय** मङ्गल**यान परियोजना का औपचारिक नाम ।**
3. **मैरिनर–9** – प्रथम अन्तरिक्ष विमान था जिसने किसी दूसरे ग्रह पर दस्तक दी । अमेरिकी अन्तरिक्ष यान मैरिनर–9, 30 मई 1971 को मंगल की कक्षा में प्रवेश किया।
4. **नासा–**National Aeronautics And Space Administration यानी राष्ट्रीय वैमानिकी और अन्तरिक्ष प्रबन्धन का संक्षिप्त रूप है । यह संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार की शाखा है जो अन्तरिक्ष अन्वेषण, वैज्ञानिक खोज तथा वैमानिकी संशोधन से सम्बद्ध है।
5. **मावेन–** (MAVEN) & Mars Atmostphere And Volatile Evolution का संक्षिप्त रूप है । नासा के द्वारा यह मङ्गल ग्रह के परिवेश का अध्ययन हेतु बनाया गया अन्तरिक्ष शोधयान है ।
6. **PSLV-C 25** – Polar Satellite Launch Vehicle यानी ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान' का संक्षिप्त रूप है ।
7. **यान के मार्ग परिवर्तन में कठिनता के कारण** – मंगलयान की गति नियन्त्रण करना कठिन काम था, क्योंकि यदि यान की गति मंगल के गुरुत्वाकर्षण से कम हो जाती तो मङ्गल अपनी ओर यान को खींच लेता, जिससे मंगल की सतह से यान टकरा कर नष्ट हो जाता। और यदि गति अधिक तीव्र हो जाती तो यान मङ्गल की कक्षा से बाहर ही हो जाता। अतः मामला गुरुत्वाकर्षण से तालमेल बैठाने का था ।

अभ्यासः

1. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया लिखत –

क. मङ्गलयानं कुतः विमुक्तम्?

ख. कः देशः स्वकीये प्रथमप्रयासे मङ्गलग्रहकक्षम् अलभत्?

ग. भारतस्य मङ्गलकार्यक्रमे कति धनानि व्ययीभूतानि?

घ. कतिधा मङ्गलयानस्य मार्गः परिवर्तितः?

ङ. के के देशाः मङ्गलग्रहकक्षं प्राप्तवन्तः?

2. कोष्ठात् शब्दान् चित्वा योजयत –

अन्तरिक्षे, मावेन, भारतस्य, अमेरिकायाः, भूमौ, मॉम, रुसस्य, उपकरणानि, तैलानि, अन्तरिक्षान्वेषणस्य, विमानयात्रायाः,

क. भारतस्य मङ्गलमिशन् इत्यस्य नाम .... अस्ति ।

ख. 'मैरीनर–9' .... देशस्य सफलः प्रयासः विद्यते ।

ग. मङ्गलयानेन सार्धं .... प्रेषितानि ।

घ. मङ्गलयानकार्यक्रमः समग्र .... प्रपञ्चस्य आदर्शभूतः ।

घ. मङ्गलमिशन् इत्यस्य साफल्येन .... भारतस्य प्रभावः उत्कर्षतां प्राप्स्यति ।

3. अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि हिन्दीभाषया लिखत –

क. मङ्गलमिशन् इत्यस्य मार्गस्य परिवर्तने का अवधेयता?

ख. अस्माकं मङ्गलयानस्य कानि प्रमुखोद्देश्यानि?

ग. किमर्थं मङ्गलकार्यक्रमः समग्र–अन्तरिक्षान्वेषणप्रपञ्चस्य आदर्शभूतः?

घ. अन्तरिक्षे अन्वेषमाणायाः संस्थायाः विषये लिखत ।

घ. ग्रहपरिवारे मङ्गलग्रहस्य का स्थितिः ?

4. पाठे प्रयुक्ताः संख्याः संस्कृते विलिख्य तदुत्तरवर्तीः संख्याः अपि लिखत–

उदाहरणम्– 20–विंशतिः, 21–एकविंशतिः।

51, 21, 1971, 450,

5. कः केन सम्बद्धः अस्ति। वाक्यं लिखत –

1. इसरो	1. ध्रुवीयोपग्रहस्य प्रक्षेपकयानम्
2. मॉम	2. राष्ट्रीय–वैमानिकी अन्तरिक्ष–प्रबन्धञ्च
3. मैरीनर–9	3. जीवनास्तित्वसूचकम्
4. मावेन	4. नासया निर्मितं शोधयानम्
5. PSLV C–25	5. भारतीयान्तरिक्ष–अनुसन्धान–संगठनेन
6. नासा	6. सतीशधवनान्तरिक्षकेन्द्रेण
7. हरिकोटा	7. प्रथमः सफलः प्रयासः
8. मीथेन	8. मार्स ऑबिटर मिशन् इत्यनेन

–––000–––

R5IGBC

व्याकरणखण्ड

शब्द रूप

मूल धातु, प्रत्यय, उपसर्ग, को छोड़कर सार्थक शब्द प्रातिपदिक कहलाते हैं। प्रातिपदिकों के अन्त में पद निर्माण के लिए सुप् और तद्धित प्रत्यय लगाए जाते हैं। संज्ञा एवं सर्वनाम शब्दों के साथ लगने वाले कारक चिह्न को सुप् प्रत्यय तथा क्रिया रूप बनाने के लिए धातुओं के साथ लगने वाले प्रत्ययों को तिङ्. प्रत्यय कहते हैं।

प्रातिपदिक शब्द दो प्रकार के होते है –

(i) अजन्त अर्थात् स्वरान्त (जिनके अन्त में स्वर होते हैं।)

जैसे – राम, हरि, गुरु, गौ आदि।

(ii) हलन्त अर्थात् व्यञ्जनान्त (जिनके अन्त में व्यञ्जन होते हैं।)

जैसे – वाच्, भगवत्, महत्, सरस्, सखिन् आदि।

अजन्त पुल्लिङ्ग

1. अकारान्त पुल्लिङ्ग

जनक (पिता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	जनकः	जनकौ	जनकाः
द्वितीया	जनकम्	जनकौ	जनकान्
तृतीया	जनकेन	जनकाभ्याम्	जनकैः
चतुर्थी	जनकाय	जनकाभ्याम्	जनकेभ्यः
पञ्चमी	जनकात्	जनकाभ्याम्	जनकेभ्यः
षष्ठी	जनकस्य	जनकयोः	जनकानाम्
सप्तमी	जनके	जनकयोः	जनकेषु
सम्बोधन	हे जनक!	हे जनकौ!	हे जनकाः

समान शब्द – राम, नृप, बक, भुजंग, छात्र, द्विज, नर, मानव आदि।

2. इकारान्त पुल्लिङ्ग

कवि

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कविः	कवी	कवयः
द्वितीया	कविम्	कवी	कवीन्
तृतीया	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
चतुर्थी	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पञ्चमी	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
षष्ठी	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
सप्तमी	कवौ	कव्योः	कविषु
सम्बोधन	हे कवे!	हे कवी!	हे कवयः

समान शब्द – मुनि, विधि, रश्मि, अग्नि, कपि, गिरि, निधि आदि।

3. उकारान्त पुल्लिङ्ग

शिशु (बालक)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	शिशुः	शिशू	शिशवः
द्वितीया	शिशुम्	शिशू	शिशून्
तृतीया	शिशुना	शिशुभ्याम्	शिशुभिः
चतुर्थी	शिशवे	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
पञ्चमी	शिशोः	शिशुभ्याम्	शिशुभ्यः
षष्ठी	शिशोः	शिश्वोः	शिशूनाम्
सप्तमी	शिशौ	शिश्वोः	शिशुषु
सम्बोधन	हे शिशो!	हे शिशू!	हे शिशवः

समान शब्द – बिन्दु, वायु, गुरू, बन्धु, भानु, बाहु, प्रभु, ऋतु, भानु, साधु आदि।

इकरान्त पुल्लिङ्ग

सखि (मित्र)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे!	हे सखायौ!	हे सखायः!

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

प्रीति – प्रेम

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	प्रीतिः	प्रीती	प्रीतयः
द्वितीया	प्रीतिम्	प्रीती	प्रीतीः
तृतीया	प्रीत्या	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभिः
चतुर्थी	प्रीत्यै, प्रीतये	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभ्यः
पञ्चमी	प्रीत्याः, प्रीतेः	प्रीतिभ्याम्	प्रीतिभ्यः
षष्ठी	प्रीत्याः, प्रीतेः	प्रीत्योः	प्रीतीनाम्
सप्तमी	प्रीत्याम्, प्रीतौ	प्रीत्योः	प्रीतिषु
सम्बोधन	हे प्रीते!	हे प्रीती!	हे प्रीतयः!

समान शब्द – श्रुति, भूति, गति, स्तुति, प्रकृति, रूचि आदि।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

कुमारी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कुमारी	कुमार्यौ	कुमार्यः
द्वितीया	कुमारीम्	कुमार्यौ	कुमारीः
तृतीया	कुमार्या	कुमारीभ्याम्	कुमारीभिः
चतुर्थी	कुमार्यै	कुमारीभ्याम्	कुमारीभ्यः
पञ्चमी	कुमार्याः	कुमारीभ्याम्	कुमारीभ्यः
षष्ठी	कुमार्याः	कुमार्योः	कुमारीणाम्
सप्तमी	कुमार्याम्	कुमार्योः	कुमारीषु
सम्बोधन	हे कुमारि!	हे कुमार्यौ!	हे कुमार्यः

समान शब्द – पुत्री, नारी, जननी, पत्नी, विदुषी, पृथ्वी, रजनी, कदली, आदि।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग

स्वसृ (बहन)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः!	हे स्वसारौ!	हे स्वसारः!

अजन्त नपुंसकलिङ्ग

1. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

ज्ञान

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
द्वितीया	ज्ञानम्	ज्ञाने	ज्ञानानि
तृतीया	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानैः
चतुर्थी	ज्ञानाय	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
पञ्चमी	ज्ञानात्	ज्ञानाभ्याम्	ज्ञानेभ्यः
षष्ठी	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
सप्तमी	ज्ञाने	ज्ञानयोः	ज्ञानेषु
सम्बोधन	हे ज्ञान!	हे ज्ञाने!	हे ज्ञानानि!

समान शब्द – (धन), वित्त, द्रविण (धन), वस्त्र (कपड़ा), पुष्प, (कुसुम फूल), उद्यान (बाग), पुण्य पाप, गगन (आकाश), गृह (घर), कमल, गीत, सत्य (सच)।

द्वार–दरवाजा

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	द्वारम्	द्वारे	द्वाराणि
द्वितीया	द्वारम्	द्वारे	द्वाराणि
तृतीया	द्वारेण	द्वाराभ्याम्	द्वारैः
चतुर्थी	द्वाराय	द्वाराभ्याम्	द्वारेभ्यः
पञ्चमी	द्वारात्	द्वाराभ्याम्	द्वारेभ्यः
षष्ठी	द्वारास्य	द्वारयोः	द्वाराणाम्
सप्तमी	द्वारे	द्वारयोः	द्वारेषु
सम्बोधन	हे द्वार!	हे द्वारे!	हे द्वाराणि!

उदर – पेट

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	उदरम्	उदरे	उदराणि
द्वितीया	उदरम्	उदरे	उदराणि
तृतीया	उदरेण	उदराभ्याम्	उदरैः
चतुर्थी	उदराय	उदराभ्याम्	उदरेभ्यः
पञ्चमी	उदरात्	उदराभ्याम्	उदरेभ्यः
षष्ठी	उदरस्य	उदरयोः	उदराणाम्
सप्तमी	उदरे	उदरयोः	उदरेषु
सम्बोधन	हे उदर!	हे उदरे!	हे उदराणि!

हलन्त पुल्लिङ्ग

भवत् – आप

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

विद्वस् – विद्वान, (पण्डित)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन्!	हे विद्वांसौ!	हे विद्वांसः!

हलन्त स्त्रीलिङ्ग

सरित् – नदी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सरित्, सरिद्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्!	हे सरितौ!	हे सरितः

हलन्त नपुंसकलिङ्ग

जगत् – संसार

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगत्भ्याम्	जगत्भिः
चतुर्थी	जगते	जगत्भ्याम्	जगत्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगत्भ्याम्	जगत्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

सर्वनाम शब्द

अस्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् (मा)	आवाम् (नौ)	अस्मान् (नः)
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् (मे)	आवाभ्याम् (नौ)	अस्मभ्यम् (नः)
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम (मे)	आवयोः (नौ)	अस्माकम् (नः)
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वां)	युष्मान् (वः)
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वां)	युष्मभ्यम् (वः)
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव (ते)	युवयोः (वां)	युष्माकम् (वः)
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तद् (तत्) पुल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

यत् – (जो) स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यत् नपुसंकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

तत् स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तत् नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

किम् – (क्या) पुल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

शब्दरुपाभ्यासः

1. उचित–पदैः रिक्त–स्थानानि पूरयत–

(i) बालाः ————— नमन्ति।
(क) जनकेन (ख) जनकम् (ग) जनकस्य (घ) जनके

(ii) ———— आज्ञां पालयन्तु।
(क) जनकेन (ख) जनकस्य् (ग) जनकाय (घ) जनकम्

(iii) बाला ———— सह गच्छति।
(क) जनकेन (ख) जनकस्य (ग) जनके (घ) जनकस्य

(iv) —————— पुत्रं पालयति।
(क) जनकस्य (ख) जनकम् (ग) जनकेन (घ) जनकः

(v) —————— जलम् आनयतु।
(क) जनकम् (ख) जनकेन (ग) जनकाय (घ) जनकात्

2. उचित–विभक्तिभिः रिक्त–स्थानानि पूरयत–

(i) किं किं न करोति ————— सन्तति पालनाय। (जनक)
(ii) ——————— देवतुल्यः भवति। (जनक)
(iii) एषः ——————— सदृशः अस्ति। (जनक)
(iv) ——————— आज्ञा शिरोधार्या। (जनक)
(v) सर्वे ——————— स्निह्यन्ति। (जनक)
(vi) एतत् ——————— गृहम् अस्ति। (अस्मद्)
(vii) —————— विश्वासं कुरूत। (युष्मद्)
(viii) ——————— महिलाः भोजनं पचन्ति। (तत्)

————000———

संख्यावाची शब्द

101	एकाधिकं शतम्	126	षड्विंशत्यधिकं शतम्
102	द्व्यधिकं शतम्	127	सप्तविंशत्यधिकं शतम्
103	त्र्यधिकं शतम्	128	अष्टाविंशत्यधिकं शतम्
104	चतुरधिकं शतम्	129	नवविंशत्यधिकं शतम्
105	पञ्चाधिकं शतम्	130	त्रिंशदधिकं शतम्
106	षडधिकं शतम्	131	एकत्रिंशदधिकं शतम्
107	सप्ताधिकं शतम्	132	द्वात्रिंशदधिकं शतम्
108	अष्टाधिकं शतम्	133	त्रयस्त्रिंशदधिकं शतम्
109	नवाधिकं शतम्	134	चतुस्त्रिंशदधिकं शतम्
110	दशाधिकं शतम्	135	पञ्चत्रिंशदधिकं शतम्
111	एकादशाधिकं शतम्	136	षट्त्रिंशदधिकं शतम्
112	द्वादशाधिकं शतम्	137	सप्तत्रिंशदधिकं शतम्
113	त्रयोदशाधिकं शतम्	138	अष्टात्रिंशदधिकं शतम्
114	चतुर्दशाधिकं शतम्	139	नवत्रिंशदधिकं शतम्
115	पञ्चदशाधिकं शतम्	140	चत्वारिंशदधिकं शतम्
116	षोडशाधिकं शतम्	141	एकचत्वारिंशदधिकं शतम्
117	सप्तदशाधिकं शतम्	142	द्विचत्वारिंशदधिकं शतम्
118	अष्टादशाधिकं शतम्	143	त्रिचत्वारिंशदधिकं शतम्
119	नवदशाधिकं शतम्	144	चतुश्चत्वारिंशदधिकं शतम्
120	विंशत्यधिकं शतम्	145	पञ्चचत्वारिंशदधिकं शतम्
121	एकविंशत्यधिकं शतम्	146	षट्चत्वारिंशदधिकं शतम्
122	द्वाविंशत्यधिकं शतम्	147	सप्तचत्वारिंशदधिकं शतम्
123	त्रयोविंशत्यधिकं शतम्	148	अष्टचत्वारिंशदधिकं शतम्
124	चतुर्विंशत्यधिकं शतम्	149	नवचत्वारिंशदधिकं शतम्
125	पञ्चविंशत्यधिकं शतम्	150	पञ्चाशदधिकं शतम्

धातुरुप

जिन शब्दों से कार्य के होने या करने का बोध हो उसे क्रिया कहते है तथा उसके मूल रुप को धातु कहते हैं। संस्कृत में लगभग 2000 धातुएँ हैं तथा निरुक्त के रचयिता यास्क के कथनानुसार सभी नामों की उत्पत्ति आख्यात धातुओं से होती है। – सर्वाणि नामानि आख्यातजानि।

धातु से क्रिया पद बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें तिङ् प्रत्यय कहते हैं। इनकी संख्या अठारह है तथा इनका परस्मैपद व आत्मनेपद में विभाजन कर दिया गया है। नौ प्रत्यय परस्मैमद के हैं और नौ प्रत्यय आत्मनेपद के हैं। ये प्रत्यय प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के तीनों वचन अलग–अलग होते हैं।

संस्कृत की समस्त धातुओं को दस गणों में बाँट दिया गया हैं प्रत्येक गण की एक प्रमुख धातु (क्रिया) होती है, जिनके नाम पर उस गण का नाम रखा जाता है। जैसे किसी गण का प्रमुख धातु 'भू' है तो उस गण का नाम 'भ्वादिगण' है। दस गण निम्न प्रकार से है –

क्रमांक	गणों के नाम	धातुएँ
1	भ्वादिगण	भू आदि धातुएँ
2	अदादिगण	अद् आदि धातुएँ
3	जुहोत्यादिगण	हु आदि धातुएँ
4	दिवादिगण	दिव् आदि धातुएँ
5	स्वादिगण	सु आदि धातुएँ
6	तुदादिगण	तुद् आदि धातुएँ
7	रुधादिगण	रुध् आदि धातुएँ
8	तनादिगण	तन् आदि धातुएँ
9	क्र्यादिगण	क्री आदि धातुएँ
10	चुरादिगण	चुर् आदि धातुएँ

प्रचलित कुछ धातुओं के रुप पांच लकारों में दिये जा रहे हैं। संस्कृत में लकारों की संख्या 10 (दस) है।

1. वृत् (वर्त्) = होना, आत्मनेपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे
उत्तम पुरुष	वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
मध्यम पुरुष	अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि

(ग) लृटलकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्तिष्यसे	वर्तिष्येथे	वर्तिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्तिष्ये	वर्तिष्यावहे	वर्तिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै

(ङ) विधिलिङ् (अनुज्ञा, चाहिए)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
मध्यम पुरुष	वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि

2. रुच (अच्छा लगाना) आत्मनेपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
मध्यम पुरुष	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उत्तम पुरुष	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
मध्यम पुरुष	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचध्वम्
उत्तम पुरुष	अरोचे	अरोचावहि	अरोचामहि

(ग) लृटलकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
मध्यम पुरुष	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचै	रोचावहै	रोचामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थक) 'चाहिए' अर्थ में

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	रोचेत	रोचेयाताम्	रोचेरन
मध्यम पुरुष	रोचेथाः	रोचयाथाम्	रोचेध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

3. नृत् = नाचना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
मध्यम पुरुष	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
उत्तम पुरुष	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
मध्यम पुरुष	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
उत्तम पुरुष	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

(ग) लृटलकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नर्तिष्यति	नर्तिष्यतः	नर्तिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्तिष्यसि	नर्तिष्यथः	नर्तिष्यथ
उत्तम पुरुष	नर्तिष्यामि	नर्तिष्यावः	नर्तिष्यामः

अथवा

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नर्त्स्यति	नर्त्स्यतः	नर्त्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	नर्त्स्यसि	नर्त्स्यथः	नर्त्स्यथ
उत्तम पुरुष	नर्त्स्यामि	नर्त्स्यावः	नर्त्स्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
मध्यम पुरुष	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
उत्तम पुरुष	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
मध्यम पुरुष	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
उत्तम पुरुष	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

4. क्रुध् = क्रोधित होना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्यति	क्रुध्यतः	क्रुध्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रुध्यसि	क्रुध्यथः	क्रुध्यथ
उत्तम पुरुष	क्रुध्यामि	क्रुध्यावः	क्रुध्यामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अक्रुध्यत्	अक्रुध्यताम्	अक्रुध्यन्
मध्यम पुरुष	अक्रुध्यः	क्रुध्यतम्	अक्रुध्यत
उत्तम पुरुष	अक्रुध्यम्	अक्रुध्याव	अक्रुध्याम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रोत्स्यति	क्रोत्स्यतः	क्रोत्स्यन्ति
मध्यम पुरुष	क्रोत्स्यसि	क्रोत्स्यथः	क्रोत्स्यथ
उत्तम पुरुष	क्रोत्स्यामि	क्रोत्स्यावः	क्रोत्स्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्यतु	क्रुध्यताम्	क्रुध्यन्तु
मध्यम पुरुष	क्रुध	क्रुध्यतम्	क्रुध्यत
उत्तम पुरुष	क्रुध्यानि	क्रुध्याव	क्रुध्याम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	क्रुध्येत्	क्रुध्येताम्	क्रुध्येयुः
मध्यम पुरुष	क्रुध्येः	क्रुध्येतम्	क्रुध्येत
उत्तम पुरुष	क्रुध्येयम्	क्रुध्येव	क्रुध्येम्

5. लिख् = लिखना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुष	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुष	लिखामि	लिखावः	लिखामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुष	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुष	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखष्यथ
उत्तम पुरुष	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लेखिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुष	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुष	लिखानि	लिखाव	लिखाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुष	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुष	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

6. मिल् = मिलना, परस्मैपद

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलति	मिलतः	मिलन्ति
मध्यम पुरुष	मिलसि	मिलथः	मिलथ
उत्तम पुरुष	मिलामि	मिलावः	मिलामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अमिलत्	अमिलताम्	अमिलन्
मध्यम पुरुष	अमिलः	अमिलतम्	अमिलत
उत्तम पुरुष	अमिलम्	अमिलाव	अमिलाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मेलिष्यति	मेलिष्यतः	मेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	मेलिष्यसि	मेलिष्यथः	मेलिष्यथ
उत्तम पुरुष	मेलिष्यामि	मेलिष्यावः	मेलिष्यामिः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलतु	मिलताम्	मिलन्तु
मध्यम पुरुष	मिल	मिलतम्	मिलत
उत्तम पुरुष	मिलानि	मिलाव	मिलाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	मिलेत्	मिलेताम्	मिलेयुः
मध्यम पुरुष	मिलेः	मिलेतम्	मिलेत
उत्तम पुरुष	मिलेयम्	मिलेव	मिलेम

7. कृ = करना उभयपदी

(अ) परस्मैपद (क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम	कुर्याव	कुर्याम

(ब) आत्मनेपद (क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
मध्यम पुरुष	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उत्तम पुरुष	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
मध्यम पुरुष	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
मध्यम पुरुष	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उत्तम पुरुष	करवै	करवावहै	करवामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
मध्यम पुरुष	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उत्तम पुरुष	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

1. कथ् = कहना उभयपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम पुरुष	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम पुरुष	कथयामि	कथयावः	कथयामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम पुरुष	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम पुरुष	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम पुरुष	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम पुरुष	कथय	कथयतम्	कथयत
उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम पुरुष	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम पुरुष	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

(आ) आत्मनेपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयते	कथयेते	कथयन्ते
मध्यम पुरुष	कथयसे	कथयेथे	कथयध्वे
उत्तम पुरुष	कथये	कथयावहे	कथयामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त
मध्यम पुरुष	अकथयथाः	अकथयेथाम्	अकथयध्वम्
उत्तम पुरुष	अकथये	अकथयावहि	अकथयामहि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	कथयिष्यसे	कथयिष्येथे	कथयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	कथयिष्ये	कथयिष्यावहे	कथयिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्
मध्यम पुरुष	कथयस्व	कथयेथाम्	कथयध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयै	कथयावहै	कथयामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्
मध्यम पुरुष	कथयेथाः	कथयेयाथाम्	कथयेध्वम्
उत्तम पुरुष	कथयेय	कथयेवहि	कथयेमहि

8. भक्ष् = खाना उभयपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उत्तम पुरुष	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
मध्यम पुरुष	अभक्षयः	अभक्षयतम्	अभक्षयत
उत्तम पुरुष	अभक्षयम्	अभक्षयाव	अभक्षयाम

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः	भक्षयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यथ
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्यामि	भक्षयिष्यावः	भक्षयिष्यामः

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
मध्यम पुरुष	भक्षय	भक्षयतम्	भक्षयत
उत्तम पुरुष	भक्षयाणि	भक्षयाव	भक्षयाम

(ङ) विधिलिङ् लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
मध्यम पुरुष	भक्षयेः	भक्षयेतम्	भक्षयेत
उत्तम पुरुष	भक्षयेयम्	भक्षयेव	भक्षयेम

(आ) आत्मनेपदी

(क) लट्लकार (वर्तमानकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयसे	भक्षयेथे	भक्षयध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षये	भक्षयावहे	भक्षयामहे

(ख) लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
मध्यम पुरुष	अभक्षयथाः	अभक्षयेथाम्	अभक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	अभक्षये	अभक्षयावहि	अभक्षयामहि

(ग) लृट्लकार (भविष्यत काल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते	भक्षयिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	भक्षयिष्यसे	भक्षयिष्येथे	भक्षयिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	भक्षयिष्ये	भक्षयिष्यावहे	भक्षयिष्यामहे

(घ) लोट्लकार (आज्ञार्थक)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
मध्यम पुरुष	भक्षयस्व	भक्षयेथाम्	भक्षयध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयावहै	भक्षयामहै

(ङ) विधिलिङ् (विध्यर्थकाल)

पुरुष	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
मध्यम पुरुष	भक्षयेथाः	भक्षयेयाथाम्	भक्षयेध्वम्
उत्तम पुरुष	भक्षयै	भक्षयेवहि	भक्षयेमहि

————000———

सन्धि

परिभाषा – अत्यन्त समीपवर्ती दो वर्णों के मेल से किसी नियम के अन्तर्गत होने वाले परिवर्तन को सन्धि कहते है।

सन्धि के प्रकार

वर्णों में होने वाली सन्धि निम्नलिखित तीन प्रकार की होती है –

1. **स्वर सन्धि (अच् सन्धि)** :– यदि स्वर के साथ स्वर का मेल हो तो स्वर सन्धि होता है।

(i) एक + अक्षरः = एकाक्षरः

2. **व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि)** :– यदि व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का अथवा व्यञ्जन के साथ स्वर का मेल हो और परिवर्तन व्यञ्जन में हो तो व्यञ्जन सन्धि होती है।

(i) व्यञ्जन का व्यञ्जन के साथ मेल –

जगत् + नाथः = जगन्नाथः

सत् + चरित्रः = सच्चरित्रः

(ii) व्यञ्जन का स्वर के साथ मेल –

वाक् + अस्ति = वागस्ति

अच् + अन्तः = अजन्तः

3. **विसर्ग सन्धि** :– यदि विसर्ग का मेल स्वर अथवा व्यञ्जन के साथ हो और परिवर्तन विसर्ग में हो तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

(i) विसर्ग के साथ स्वर का मेल –

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

(ii) विसर्ग के साथ व्यञ्जन का –

नमः + ते = नमस्ते

व्यञ्जन सन्धि

(क) **अनुस्वार सन्धि** – 'म्' का अनुस्वार (ं) यदि पहले शब्द के अन्त में म् आए और उसके बाद कोई भी व्यञ्जन आए तो 'म्' को (ं) अनुस्वार हो जाता है।

भारते षट्ऋतवः सन्ति। तेषु वसन्तः ऋतुराजः अस्ति। अस्य आगमने पुष्पाणां विकासः भवति। सर्वत्र सौरभाणां प्रसरः भवति। नदीषु सरःषु च विमलं जलं राजते। पुष्पाणां उपरि भ्रमराः गुञ्जन्ति। पिकः कुजति। पक्षिणां कूजनं सुखदं भवति। कोकिलाः मधुरगीतं गायन्ति। शरीरेषु नूतनं रक्तं सञ्चरति।

ऊपर दिए गए रेखांकित पदों में (ं) अनुस्वार दिखाई दे रहा है। यह अनुस्वार पदान्त–मकार के स्थान में होता है।

यथा –

(i) सर्वत्र पुष्पाणाम् विकासः भवति।

(ii) सर्वत्र सौरभाणाम् प्रसरः।

(iii) नदीषु विमलम् जलम् राजते।

(iv) पक्षिणाम् कूजनम् सुखदम् भवति।

(v) कोकिलाः मधुरगीतम् गायन्ति।

(vi) शरीरेषु नूतनम् रक्तम् संचरति।

क्रमशः इस प्रकार होंगे –

(i) सर्वत्र पुष्पाणां विकासः भवति।

(ii) सर्वत्र सौरभाणां प्रसरः।

(iii) नदीषु विमलं जलं राजते।

(iv) पक्षिणां कूजनं सुखदं भवति।

(v) कोकिलाः मधुरगीतं गायन्ति।

(vi) शरीरेषु नूतनं रक्तं संचरति।

पदान्त मकार कब अनुस्वार (ं) होता है, पदान्त मकार तब अनुस्वार (ं) होता है जब मकार के बाद व्यञ्जन होते है यथा – पुष्पाणां विकासः। यहाँ (ं) अनुस्वार के पश्चात् 'व' व्यञ्जन है। अतः 'म्' के स्थान पर (ं) हुआ यही अनुस्वार सन्धि है।

पर सवर्ण सन्धि

पद के अन्त में 'म्' को होने वाले अनुस्वार के बाद यदि किसी वर्ग का कोई भी वर्ण हो तो उस अनुस्वार को उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण विकल्प से हो जाता है।

यथा –

त्वम् + करोषि	=	त्वं करोषि	त्वङ्.करोषि
शीघ्रम् + चलति	=	शीघ्रं चलति	शीघ्रञ्चलति
तम् + टीकते	=	तं टीकते	तण्टीकते
गाम् + ददाति	=	गां ददाति	गान्ददाति
त्वम् + पचसि	=	त्वं पचसि	त्वम्पचसि
अयम् + जयसि	=	अयं जयसि	अयञ्जयसि
नदीम् + तरति	=	नदीं तरति	नदीन्तरति
अयम् + कथयति	=	अयं कथयति	अयङ्कथयति
अहम् + करोमि	=	अहं करोमि	अहङ्करोमि

सन्धि–प्रयोगाः

(i) गङ्गा हिमालयात् उद्भवति।

(ii) सञ्जयः उवाच।

(iii) व्यजनं चलति।

(iv) अङ्.कितः पठति।

(v) कण्टकः पीडाम् उत्पादयति।

(vi) मनः चञ्चलम् अस्ति।

(vii) चम्पकः विकसति।

(viii) शालायां घण्टिका टनटनायते।

(ix) जलस्य बिन्दुम् अपि न नाशय।

(x) सः परीक्षायां उत्तमङ्कान् प्राप्नोत्।

इसका नियम इस प्रकार है –

(i) पदान्त अनुस्वार के आगे जो भी वर्गीय वर्ण हो तब अनुस्वार के स्थान में वर्ग का पाँचवाँ वर्ण होगा।

(ii) अपरान्त में केवल पांचवाँ वर्ण ही होता है।

यथा – अं + कित: = अङ्कित: । सं + धि: = सन्धि:।

(iii) पदान्त में पाँचवाँ वर्ण अथवा अनुस्वार ही होता है।

(iv) यदि बाद में अवर्गीय वर्ण हो तब अनुस्वार ही होता है।

यथा – हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे।

जशत्व सन्धि:

इसमें वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान पर तृतीय वर्ण में परिवर्तन होता है।

जब प्रथम वर्ण के पश्चात् कोई भी भिन्न वर्ण अथवा स्वर आए तो प्रथम वर्ण तृतीय वर्ण में परिवर्तित होता है –

क् को ग् –

दिक् + गज:	=	दिग्गज:
वाक् + अर्थौ	=	वागर्थौ
वाक् + ईश:	=	वागीश:
दिक् + अम्बर:	=	दिगम्बर:

च् को ज् –

अच् + अन्त:	=	अजन्त:
अच् + आदि:	=	अजादि:

ट् को ड् –

षट् + आनन:	=	षडानन:
षट् + देवा:	=	षड्देवा:
सम्राट् + गच्छति	=	सम्राड्गच्छति
षट् + दर्शनम्	=	षड्दर्शनम्

त् को द् –

सत् + आचारः	=	सदाचारः
चित् + आनन्दः	=	चिदानन्दः
महत् + धनम्	=	महद्धनम्
चित् + रूपम्	=	चिद्रूपम्

प् को ब् –

सुप् + अन्तः	=	सुबन्तः
अप् + जः	=	अब्जः

यथा –

1. जगदीशः सर्वत्र वर्तते।
2. सा महद्दानं करोति।
3. वागीशः सर्वत्र पूजनीयः भवति।
4. शिवस्य नाम दिगम्बरः अस्ति।
5. शब्दरूपस्य अन्ते सुबन्तः भवति।

विसर्ग सन्धिः

1. उत्व विसर्ग –

विसर्ग से पहले और बाद में ह्रस्व 'अ' होने पर विसर्ग को 'उ' हो जाता है तथा पहले वाले 'अ' के साथ 'उ' को मिलाकर गुणसन्धि से 'ओ' होकर पूर्वरुप सन्धि से मिलकर 'अ' को (ऽ) पूर्वरूप हो जाता है। जैसे – अ + : + अ = अ + उ + अ = ओ + अ = ओऽ

प्रथमः + अध्यायः	=	प्रथमोऽध्यायः
रामः + अत्रः	=	रामोऽत्र
सः + अपि	=	सोऽपि
सः + अहम्	=	सोऽहम्
कः + अवदत्	=	कोऽवदत्
सिहः + अपि	=	सिहोऽपि
गजः + अपि	=	गजोऽपि
पुरुषः + अयम्	=	पुरुषोऽयम्

यथा :

1. वृक्षे काकः + अस्ति।
2. सेवकः + अत्र आगच्छति।
3. पिकः + अपि मधुरेण स्वरेण गायति।
4. मृगः + अस्ति तत्र।
5. एषः + अपि तथैव कथयति।

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो उसके बाद हश् वर्ण अर्थात् किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को 'उ' हो जाता है और अ+उ मिलकर गुणसन्धि से 'ओ' हो जाता है।

छात्रः + हसति	=	छात्रो हसति
मनः + रथः	=	मनोरथः
यशः + गानम्	=	यशोगानम्
मनः + हरः	=	मनोहरः
सः + रोचते	=	सो रोचते
कः + बुध्यते	=	को बुध्यते
छात्रः + नयति	=	छात्रोनयति
देवः + गच्छति	=	देवो गच्छति
कः + गच्छति	=	को गच्छति

सन्धि कीजिए –

एतत् उद्यानम् अस्ति। वृक्षे खगाः सन्ति। खगः कूजति। कोणे एकः मयूरः + नृत्यति। जनः + धावति। बालः + व्यायामं करोति। एकः जनः + गच्छति। एकः वृद्धः जनः + ध्यायति।

सत्व, शत्व, षत्व विसर्ग सन्धि

विसर्ग के बाद च् छ् परे होने पर विसर्ग को श्, ट्, ठ् विसर्ग को ष् तथा त् थ् क् परे होने पर विसर्ग को स् हो जाता है।

विसर्ग : = स्

नमः + कार	=	नमस्कार
नमः + ते	=	नमस्ते

विसर्ग : = श्

कः + छात्रः	=	कश्छात्रः
कः + चित्	=	कश्चित्

रामः + तरति =	रामस्तरति	कः + चौरः	=	कश्चौरः
पुरः + कारः =	पुरस्कारः	चन्द्रः+ शोभते	=	चन्द्रश्शोभते
तिरः + कारः =	तिरस्कारः	रामः+ शेते	=	रामश्शेते

विसर्ग (:) को ष्

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः
रामः + षष्ठः = रामषष्ठः
रामः + टीकते = रामष्टीकते
रामः + ठक्कुरः = रामष्ठक्कुरः
दर्दुरः+टरटरायते = दुर्दरष्टरटरायते

रूत्व सन्धि

विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर अन्य कोई भी स्वर हो और उसके बाद कोई स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह् में से काई वर्ण हो तो विसर्ग को 'र्' हो जाता है । जैसे –

निः + बलः = निर्बलः

कविः + यच्छति = कविर्यच्छति

रविः + उदेति = रविरुदेति

मुनिः + अयम् = मुनिरयम्

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा

अव्ययपद के विसर्ग के पहले 'अ' होने पर विसर्ग को 'र' आदेश होता है। जैसे–

पुनः + आस्ते = पुनरास्ते

प्रातः+ उदेति = प्रातरूदेति

प्रातः + गच्छति = प्रातर्गच्छति

सन्धि विच्छेद कीजिए –

(i) कविर्लिखति लेखम् ।

(ii) रामः पितुराज्ञां पालयति।

(iii) तत्र जनैर्गम्यते।

(iv) शिशुरयं मेधावी अस्ति।

विसर्ग लोप सन्धि

यदि सः और एषः शब्द के परे 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर या व्यञ्जन हो तो सः और एषः शब्द के विसर्ग का लोप हो जाता है।

सः + गच्छति	=	स गच्छति
एषः + जयति	=	एष जयति
सः + पठति	=	स पठति
एषः + चलति	=	एष चलति

विसर्ग के पहले 'आ' होने पर और उसके बाद कोई स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह वर्णो में से कोई वर्ण हो तो वहाँ विसर्ग का तो लोप हो जायेगा, साथ ही कोई सन्धि हो तो सन्धि भी नहीं होगी। जैसे –

शिष्याः + एते	=	शिष्या ऐते
नृपाः + अत्र	=	नृपा अत्र
जनाः + इच्छन्ति	=	जना इच्छन्ति
सुमनाः+ रोचते	=	सुमना रोचते
देवाः + जयन्ति	=	देवा जयन्ति
छात्राः + नमन्ति	=	छात्रा नमन्ति
पुरुषाः + यान्ति	=	पुरुषा यान्ति
सुमनाः + धन्याः	=	सुमना धन्या

नीचे लिखे वाक्यों में सन्धि कीजिए –

अस्मिन् वने अनेके मृगाः + वसन्ति। एकदा अनेके गजाः + आगच्छन्। तान् दृष्ट्वा मृगाः + अधावन्। न केवलं मृगाः + अधावन् अपितु खगाः + अपि उड्डयितुम अरभन्त। खगानां कोलाहलेन गजाः + अधावन्। गजानां धावितुं दृष्टवा मृगाः + अपि अधावन्।

———–000————

समास

भाषा में कहीं–कहीं पदों की विभक्तियों का लोप करके शब्द को छोटा कर लिया जाता है। यह तभी संभव होता है, जब दो या दो से अधिक पदों को एक साथ जोड़ दिया जाता है। पदों को जोड़ने की इस प्रक्रिया को ही 'समास' कहते है।

समास शब्द 'सम' (भली प्रकार) उपसर्ग लगाकर अस् (होना) धातु से बना है और इसका अर्थ है संक्षेप। दो या दो अधिक पदों के मेल को 'समास' कहते है।

ध्यातव्य बातें :–

(i) समास करने पर समास हुए पदों के बीच की विभक्तियाँ नहीं रहतीं।

(ii) समस्त (समास युक्त) पद एक पद बन जाते हैं अतएव अंत में विभक्ति लगती है।

(iii) समास में पदों को अलग करने प्रक्रिया को विग्रह कहते हैं।

(iv) समास होने पर समस्त पद या सामासिक पद कहते है।

उदाहरण के लिए – देवस्य आलयः = देवालयः। यहाँ (1) देवस्य और (2) आलयः– ये दो पद हैं। इन दो पदों का समास करने पर 'देवालयः' शब्द बना है। समास होने पर दोनों पद के मध्य स्थित विभक्ति (देवस्य का षष्ठी विभक्ति) का लोप हुआ है तथा देव और आलयः को मिलाकर और संधि करके 'देवालय' इस समस्त पद के अंत में प्रथमा विभक्ति एकवचन की विभक्ति लगायी गई है। यहाँ 'देवालयः' सामासिक पद है तथा 'देवस्य + आलयः' समास विग्रह है।

समास के प्रकार

समास के मुख्य 4 भेद होते है –

(i) अव्ययीभाव

(ii) तत्पुरुष

(iii) द्वन्द्व

(iv) बहुब्रीहि

तत्पुरुष के अन्तर्गत अन्य भेद भी हैं (1) कर्मधारय (2) द्विगु, (3) उपपदतत्पुरुष, (4) नञ् तत्पुरुष

समास के छः भेदों का नाम निम्नलिखित श्लोकों में आ जाते है :–

द्वन्द्वो द्विगुरपि चाहं मद्गेहे नित्यमव्ययीभावः।

तत्पुरूष कर्मधारय येनाहं स्याम्बहुब्रीहिः।।

अव्ययीभाव समास में समास का प्रथम पद प्रायः प्रधान होता है, तत्पुरूष में प्रायः दूसरा, द्वन्द्व में प्रायः दोनो प्रधान रहते है एवं बहुब्रीहि में दोनों में से एक भी प्रधान नहीं रहता है, अपितु दोनों मिलकर एक तीसरे शब्द के ही विशेषण बन जाते है, अर्थात् इस समास में अन्य पद प्रधान होता है।

1. अव्ययीभाव समास

जिस समास में प्रथम पद अव्यय और प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

इस समास में निम्नलिखित बातें ध्यातव्य हैं :–

(i) इसका पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होता है और दूसरा शब्द संज्ञा होता है।

(ii) समस्त पद अव्यय जैसा बन जाता है अर्थात् समस्त पद का रूप नहीं चलता है।

(iii) अकारान्त समस्त पद नपुंसकलिंग एकवचन में ही रहता है।

(iv) अ–भिन्न स्वर अंत वाले समस्त पद भी अव्यय हो जाते है और उनके रूप नहीं चलते।

(v) इसके समस्त पद और विग्रह में अन्तर होता है, क्योंकि इसमें किसी विशेष अर्थ में अव्यय का प्रयोग होता है।

यथा :–

सामासिक पद	विग्रह	अर्थ
यथाकामम्	कामम् अनतिक्रम्य	जितनी इच्छा हो उतना
अनुहरि	हरेः पश्चात्	हरि के पीछे

इन उदाहरणों में पूर्व पद यथा और अनु अव्यय है। उत्तर पद 'काम' और 'हरि' संज्ञा पद है। सामासिक पद 'यथाकामम्' और 'अनुहरि', अव्यय बन गये है अर्थात् इनका रूप नहीं चलेगा।

'यथाकाम'–अकारान्त पुल्लिंग होते हुए भी नपुंसकलिंग एकवचन 'यथाकामम्' बन गया है; 'अनुहरि' अ–भिन्न अंत वाला पद है तथा अव्यय पद बन गया है। यथा और अनु अव्यय पदों के विशेष अर्थ क्रमशः 'अनतिक्रम्य' और 'पश्चात्' अर्थ में आने से समस्त पद और विग्रह पद में अंतर है।

उदाहरण :–

(i)	अधिहरि	हरौइति	हरि में	विभक्ति के अर्थ में
(ii)	उपनगरम्	नगरस्य समीपम्	नगर के समीप	समीप अर्थ में
(iii)	निर्जलम्	जलस्य अभावः	जल का अभाव	अभाव अर्थ में
(iv)	सचित्रम्	चित्रेण युगपत्	चित्र के साथ	सहित अर्थ में
(v)	प्रतिगृहम्	गृहम्–गृहम्	घर–घर	पद की द्विरूक्ति या वीप्सा अर्थ में
(vi)	यथासमयम्	समयम् अनतिक्रम्य	समय के अनुसार	अनुसार अर्थ में

2. तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तर पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

इस समास के पहचान हेतु निम्नलिखित बातें दृष्टव्य है :–

(i) इसका उत्तर (दूसरा) पद प्रायः प्रधान होता है।

(ii) पूर्व पद उत्तर पद के अर्थ को निश्चित करता है।

(iii) प्रथम (पूर्व) पद जिस विभक्ति में होता है, उसी के नाम पर समास का नामकरण होता है जैसे –

द्वितीया तत्पुरूष, तृतीया तत्पुरुष आदि।

(iv) इस समास में जब दोनों पद की विभक्ति समान हो तो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष (कर्मधारय समास) तथा दो पद की विभक्ति असमान हो तो उसे व्यधिकरण तत्पुरूष (द्वितीया, तृतीया तत्पुरुष आदि) समास कहते हैं।

यथाः– शास्त्रनिपुणः – शास्त्रेषु निपुणः – शास्त्रों में निपुण

यहां 'निपुण' उत्तर पद की प्रधानता है, किसमें निपुणता है? इस प्रश्न का उत्तर 'शास्त्र' निश्चित करता है। प्रथम पद शास्त्र सप्तमी विभक्ति (शास्त्रेषु) में है, समास होने पर इस विभक्ति का लोप होता है, इसी आधार पर यह 'सप्तमी तत्पुरुष समास' है। शास्त्रेषु (सप्तमी

विभक्ति) और निपुणः (प्रथमा विभक्ति) असमान विभक्ति के पद होने से व्यधिकरण तत्पुरुष है जबकि उदाहरणार्थ कृष्णः सर्पः (कृष्णसर्पः) समान विभक्ति (प्रथमा विभक्ति) के पद होने से समानाधिकरण तत्पुरूष अर्थात् कर्मधारय समास है।

उदाहरण :–

(i) द्वितीया विभक्ति –

ग्रामगतः –	ग्रामं गतः	ग्राम को गया हुआ।
कूपपतितः –	कूपं पतितः	कुएं में गिरा हुआ

(ii) तृतीया तत्पुरुष –

ज्ञानहीनः –	ज्ञानेन हीनः	ज्ञान से हीन
दानार्थः –	दानेन अर्थः	दान से प्रयोजन
मासपूर्वः –	मासेन पूर्वः	माह से पहले

(iii) चतुर्थी तत्पुरुष –

सञ्चारमार्गः–	सञ्चाराय मार्गः	सञ्चार के लिए मार्ग
यूपदारुः–	यूपाय दारु	यज्ञ के लिए लकड़ी

(iv) पञ्चमी तत्पुरुष –

वृक्षपतितः–	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
राजभयम्	राज्ञः भयम्	राजा से भय
पापमुक्त	पापात् मुक्तः	पाप से मुक्त

(vi) षष्ठी तत्पुरुष –

देवभाषा	देवानां भाषा	देवताओं की भाषा
विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	विद्या का घर
सूर्योदयः	सूर्यस्य उदयः	सूर्य का उदय
कार्यशाला	कार्यस्य शाला	कार्य की शाला

(vii) सप्तमी तत्पुरुष –

व्यवहारकुशलः	व्यवहारे कुशलः	व्यवहार में कुशल
दानवीरः	दाने वीरः	दान में वीर

शास्त्रप्रवीणः	शास्त्रे प्रवीणः	शास्त्र में प्रवीण
कर्मकुशलः	कर्मणि कुशलः	कर्म में कुशल

उपपद तत्पुरुष समास

जब तत्पुरुष का पहला पद कोई ऐसी संज्ञा या कोई ऐसा अव्यय हो जिसके न रहने से उस समास के द्वितीय पद का वह रुप नहीं रह सकता है, तब उसे उपपद तत्पुरुष समास कहते है। प्रथम पद उपपद होता है तथा द्वितीय (उत्तर) पद कृदन्त होता है, क्रिया रूप नहीं, परन्तु यह उत्तर पद ऐसा पद होता है जो प्रथम पद के न रहने पर असंभव हो जाए।

यथा :–

''कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।'' यहां समास में 'कुम्भ' और 'कारः' दो पद है। कुम्भ उपपद है कारः कृदन्त है यदि पूर्व में (कोई) उपपद नहीं हो तो 'कारः' अपने आप में अकेले प्रयुक्त नहीं हो सकता, केवल कुम्भ या अन्य उपपद के साथ ही इसे प्रयुक्त कर सकते हैं, जैसे –चर्मकारः, स्वर्णकारः, आदि।

उदाहरण :–

विग्रह	समस्त पद	अर्थ
धनं ददाति इति	धनदः	धन देने वाला
दिनं करोति इति	दिनकरः	दिन करने वाला
शम् करोति इति	शङ्.करः	शान्त करने वाला
हितं करोति इति	हितकरः	हित करने वाला
जले जायते इति	जलजम्	जल में उत्पन्न
वारि ददाति इति	वारिदः	जल देने वाला

नञ् तत्पुरुष समास

जब तत्पुरूष में प्रथम पद 'न' रहे और दूसरा कोई संज्ञा या विशेषण रहे तो उसे नञ् तत्पुरुष समास कहते है। यह 'न' व्यञ्जन के पूर्व 'अ' (न + प्रियः = अप्रियः) में तथा स्वर के पूर्व 'अन्' (न् + आगतम् = अन्+आगतम् = अनागतम्) में बदल जाता है।

उदाहरण :–

विग्रह	समस्त पद
न स्वस्थः	अस्वस्थः
न सिद्धः	असिद्धः
न चरम्	अचरम्
न विद्या	अविद्या
न अर्थः	अनर्थः
न आदरः	अनादरः

3. कर्मधारय समास

विशेषण और विशेष्य का जो समास होता है, उसे कर्मधारय समास कहते है।

इसमें निम्नलिखित बाते ध्यान देना चाहिए :–

(i) इसमें दोनों पद समान विभक्ति वाले होते हैं इसलिए इसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास भी कहते है। यथा कृष्णः सर्पः –कृष्णसर्पः। यहां कृष्ण और सर्प समान विभक्ति के पद है।

(ii) इस समास में प्रथम पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है। कृष्ण विशेषण है सर्प विशेष्य है।

(iii) इस समास में उपमान और उपमेय पदों का भी समास होता है। उपमान पूर्व पद भी होता है (घनश्यामः) और उत्तर पद भी (मुखकमलम्)

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद	
नीलं गगनम्	नीलगगनम्	(विशेषण–विशेष्य)
महान् ज्ञानी	महाज्ञानी	
महत् काव्यम्	महाकाव्यम्	

वीरः पुरुषः	वीरपुरुष	
विस्तृता वाटिका	विस्तृतवाटिका	
सुन्दरी नारी	सुन्दरनारी	
पीतम् अम्बरम्	पीताम्बरम्	
लम्बम् उदरम्	लम्बोदरम्	
चन्द्रः इव मुखम्	चन्द्रमुखम्	(उपमान–उपमेय)
घन इव श्यामः घनश्यामः		
मुखमेव कमलम् (मुखं कमलमिव)	मुखकमलम्	(उपमेय–उपमान)
पुरुषः एव व्याध्रः (पुरुषः व्याध्रः इव)	पुरूषव्याघ्रः	

4. द्विगु समास

जिस समास का पहला पद संख्यावाची और उत्तर पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते है। द्विगु समास के सम्बन्ध में अधोलिखित बाते भी जानना चाहिए –

(i) द्विगु समास भी कर्मधारय के समान तत्पुरूष का एक भेद है, जब कर्मधारय में प्रथम पद संख्यावाची हो तो वहां द्विगु समास होता है।

(ii) यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है।

(iii) समाहार द्विगु एकवचनान्त होता है। (जैसे पञ्चपात्रम्, पञ्चपात्राणि नहीं।)

(iv) वट, लोक तथा मूल इत्यादि अकारान्त शब्दों के साथ समाहार द्विगु समास होने पर समस्त पद ईकारान्त स्त्रीलिंग हो जाता है, परन्तु पात्र, भुवन, युग इत्यादि से अन्त होने वाले द्विगु समास में नहीं। (यथा– त्रिलोकी, त्रिभुवनम्)

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद
त्रयाणां लोकानां समाहारः	त्रिलोकी
त्रयाणां भुवनानां समाहारः	त्रिभुवनम्
चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्

पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्
पञ्चानां मूलानां समाहारः	पञ्चमूली
पञ्चानां वटानां समाहारः	पञ्चवटी

5. द्वन्द्व समास

जिस समास में दोनों पद या सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है उसे 'द्वन्द्व' समास कहते है।

द्वन्द्व समास के सम्बन्ध में ये बाते भी ध्यातव्य है :–

(i) इस समास का अर्थ करने पर बीच में 'और' अर्थ निकलता है।

(ii) जहां भिन्न–भिन्न (इतर–इतर) पद 'च' से जुड़े होते है वहाँ समास होने पर समस्त पद का वचन उनकी संख्या के अनुसार तथा लिङ्ग अंतिम पद के अनुसार होता है।

यथा – हरिहरौ (पुल्लिंग द्विवचन) सुखदुखं (नपुंसकलिंग द्विवचन)

(iii) जहां बहुत पदों का समाहार बोध हो वहां समस्त पद एकवचनान्त नपुंसकलिंग होता है। यथा – हस्तौ च पादौ च = हस्तपादम्।

(iv) एक विभक्ति वाले समान रूप के पदों में एक शेष रह जाता है, यथा – रामः च रामः = रामौ।

(v) स्त्रीवाची पद के साथ समस्त होने पर पुरूषवाची पद ही शेष रहता है।

यथा– माता च पिता च = पितरौ।

उदाहरण –

पिता च पुत्रश्च	–	पितापुत्रौ
पुत्रश्च कन्या च	–	पुत्रकन्ये
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	–	धर्मार्थकाममोक्षाः
पुत्रश्च पुत्री च	–	पुत्रौ
अजश्च अजा च	–	अजौ
बालिका च बालश्च	–	बालकौ
बालकश्च बालकश्च बालकश्च	–	बालकाः
गौश्च व्याघ्रश्च	–	गोव्याघ्रम
अहिश्च नकुलश्च	–	अहिनकुलम्

6. बहुब्रीहि समास

जिस समास में (समस्त होने वाले पदों को छोड़कर कोई) अन्य पद प्रधान हो, उसे बहुब्रीहि समास कहते है।

बहुब्रीहि समास के संबंध में ये बाते भी जानना चाहिए :–

(i) इसमें समस्त होने वाले सभी पद मिलकर किसी अन्य पद के विशेषण बन जाते है ।

यथा – 'पीतम् अम्बरं यस्य सः' यहां समस्त होने वाले दोनों पद (पीत और अम्बर) मिलकर किसी अन्य पद (विष्णु) की विशेषता बताते हैं।

(ii) समानाधिकरण तत्पुरूष समास के समस्त पदों में समान विभक्ति होती है तथा इसमें विशेषण विशेष्य का भाव होता है। **यथा** – नीलम् अम्बरं तस्य सः = नीलाम्बरः – यहाँ नीलम् (विशेषण) और अम्बरं (विशेष्य) समान विभक्ति के पद है।

(iii) व्यधिकरण तत्पुरूष में असमान विभक्त्यन्त पद होते हैं तथा विशेषण विशेष्य भाव नहीं होता है। **यथा** – चन्द्रः शेखरे यस्य सः = चन्द्रशेखरः।

उदाहरण –

विग्रह	समस्त पद	
दिक् अम्बरं यस्य सः	दिगम्बरः	(शंङ्करः)
श्वेतम् अम्बरं यस्या सा	श्वेताम्बरा	(सरस्वती)
नीलम् उत्पलं यस्मिन् तत्	नीलोत्पलम्	(सरः)
पीतं दुग्धं यया सा	पीतदुग्धा	(बालिका)
पीतं दुग्धं येन सः	पीतदुग्धः	(बालकः)
चक्रं पाणौ यस्य सः	चक्रपाणिः	(कृष्णः)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः	(शिवः)

अभ्यासः

(1) अधोलिखितविग्रहाणां स्थाने समस्तपदानि लिखत –

विग्रह वाक्यानि	समस्तपदानि
(i) चन्द्रः इव मुखम्	चन्द्रमुखम्
(ii) चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	चन्द्रमुखी
(iii) पतितं पर्णम्	

——————————

(iv) पतितानि पर्णानि यस्यात् सः (वृक्षः)

——————————

(v) वृक्षम् आरूढ़ः

——————————

(vi) दश आननानि

____

(vii) आरूढ़ः वृक्षः येन सः

____

(viii) दश आननानि यस्य सः

____

(2) अधोलिखितसमस्तपदानां स्थाने विग्रहवाक्यानि लिखित –

(i) नतपृष्ठः _________________

(ii) नतपृष्ठम् _________________

(iii) निर्जनम् _________________

(iv) जनाभावः _________________

(v) जितेन्द्रियः _________________

(vi) गुरुवचनम् _________________

(vii) अहर्निशम् _________________

(viii) शीतोष्णम् _________________

(3) अधोलिखितकथायां रेखाङ्कितपदानि चित्वा तेषां विग्रहान् लिखत –

एकः अति दुष्टः वानरः आसीत्। प्रतिदिनं सः यथाशक्ति वृक्षे स्थितान् पक्षिणः तुदति स्म। उपनीडं गत्वा तेषां श्रमस्य उपहासं करोति स्म। एकः पक्षी अवदत् – भोः किमर्थम् उपहससि? अनुवृष्टिं नीडम् एव अस्मान् रक्षति। वयं परिश्रमं कुर्मः निर्विघ्नं च जीवामः । वानरः साट्टहासम् अवदत् – 'मूर्खाः यूयम्! अरे योगिनां कुतः गृहम्।' एवं कथयित्वा तेन दुष्टेन पक्षीणां नीडानि भग्नानि। एकः पक्षी अवदत् – योगिनः प्रतिजीवम् उपकारमेव कुर्वन्ति। किम् इदम् अनुरुपं साधुजनस्य?

(4) कोष्ठकात् शुद्धम् उत्तरं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

(क) अनेन सदृशो महापुरूषः ———————— नास्ति। (त्रिलोके/त्रिलोक्याम्)

(ख) सः ————————— फलानि खादति । (यथेच्छया/यथेच्छम्)

(ग) रामः ————————— धावति। (अनुमृगम्/अनृमृगः)

(घ) सः पंडितः ——————— अस्ति। (विद्याधनः/विद्याधनम्)

(ङ.) ————————सरः दृष्टवा कः न प्रसीदति? (विकसितपङ्कजः/विकसितपंङकजम्)

—————000—————

प्रत्यय

वर्तमान कालिक

शतृ – शानच् प्रत्ययौ

इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िये –

बालकः पठति।	बालकः पठन् अस्ति।
बालकौ पठतः।	बालकौ पठन्तौ स्तः।
बालकाः पठन्ति।	बालकाः पठन्तः सन्ति।
बालिका पठति।	बालिका पठन्ती अस्ति।
बालिके पठतः।	बालिके पठन्त्यौ स्तः।
बालिकाः पठन्ति।	बालिकाः पठन्त्यः सन्ति।
चक्रं चलति।	चक्रं चलत् अस्ति।
चक्रे चलतः।	चक्रे चलती स्तः।
चक्राणि चलन्ति।	चक्राणि चलन्ति सन्ति।

यहाँ हम क्या देख रहे हैं?

यहां हम देख रहे हैं कि पठति क्रिया के स्थान में 'पठन् अस्ति' (पढ़ रहा है अथवा पढ़ता हुआ इस अर्थ में) रूप का प्रयोग है।

इसी प्रकार लिखे कि किस क्रिया के स्थान में कृदन्त रूप प्रयुक्त है –

क्रीडति–क्रीडन्	लिखति–लिखन्	पचति–पचन्
चलति–चलन्	नृत्यति–नृत्यन्	गच्छति–गच्छन्

ऊपर लिखे गए रूप क्रीडन्, चलन् और लिखन् प्रथमा विभक्ति एकवचन पुल्लिंग में हैं और ये धातुएं परस्मैपद के है। इसी के साथ शतृ प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है। अब हम देखते है कि 'शतृ' प्रत्यय का 'ऋ' और 'श्' वर्ण का लोप होता है। 'अत्' धातु के पश्चात् जुड़ता है। तब यह शब्द बनता है। और इसके रूप तीनों लिंगों में बनते हैं।

पुल्लिंग में	गच्छतवत्	(गच्छन् गच्छन्तौ गच्छन्तः)
स्त्रीलिंग में	नदीवत्	(गच्छन्ती गच्छन्त्यौ गच्छन्त्यः)
नपुंसकलिंग में	जगत्वत्	(गच्छत्, गच्छती, गच्छन्ति)

(क) शतृ प्रत्यय से बनने वाले वाक्य –

जैसे – बालः पठति। बालः लिखति। पठन् बालः लिखति।

बालौ पठतः। बालौ लिखतः ।

पठन्तौ बालौ लिखतः।

बालाः पठन्ति। बालाः लिखन्ति।

पठन्तः बालाः लिखन्ति।

(ख) स्त्रीलिंग में

महिला पठति। महिला लिखति।

पठन्ती महिला लिखति।

महिले प्रसीदतः। महिले हसतः

प्रसीदन्त्यौ महिले हसतः।

महिलाः गायन्ति। महिलाः नृत्यन्ति।

गायन्त्यः महिलाः नृत्यन्ति।

(ग) नपुंसकलिंग में

चक्रं चलति। चक्रं भ्रमति।

चलत् चक्रं भ्रमति।

चक्रे चलतः। चक्रे भ्रमतः।

चलती चक्रे भ्रमतः।

चक्राणि चलन्ति। चक्राणि भ्रमन्ति।

चलन्ति चक्राणि भ्रमन्ति।

शतृ प्रत्यय का प्रयोग कर वाक्य बनाइये –

(i) बालकः धावति। बालकः पतति।

(ii) मेघाः वर्षन्ति। मेघाः गर्जन्ति।

(iii) चटका कूजति। चटका उड्डयति।

(iv) नमिता गायति। नमिता नृत्यति।

(v) फलानि पतन्ति। मालाकारः फलानि चिनोति।

(vi) वायुयाने आकाशं गच्छतः। वायुयाने आकाशे उड्डयतः।

शानच् प्रत्यय

नीचे लिखे वाक्य पढ़िये –

पुल्लिंग में

बालः पितरं सेवते।	पितरं सेवमानः बालः (प्रसीदति)
पुरूषौ प्रयतेते।	प्रयतमानौ पुरुषौ (प्रसीदतः)
जनाः धनं लभन्ते।	धनं लभमानाः जनाः (प्रसीदन्ति)

स्त्रीलिंग में

बाला सेवते।	सेवमाना बाला (प्रसीदति)
कन्ये पुरस्कारं लभेते।	पुरस्कारं लभमाने कन्ये (प्रसीदतः)
बालाः सहन्ते।	सहमानाः बालाः (प्रसीदन्ति)

नपुंसकलिंग में

पुष्पं वर्धते।	वर्धमानं पुष्पं (दृष्ट्वा प्रसीदति)
पुष्पे वर्धते।	वर्धमाने पुष्पे (दृष्ट्वा प्रसीदतः)
पुष्पाणि वर्धन्ते।	वर्धमानानि पुष्पाणि (दृष्ट्वा प्रसीदन्ति)

परस्मैपद के धातुओं के साथ शतृ प्रत्यय का प्रयोग होता है, वैसे ही इसी अर्थ में ही आत्मनेपद धातुओं के साथ शानच् प्रत्यय का प्रयोग होता है।

शानच् प्रत्यय के 'श्' और 'च' वर्ण का लोप होता है। 'आन्' शेष रहता है। 'आन' 'मान' रूप में परिवर्तित होता है। इसके रूप –

पुल्लिंग में	बालवत्
स्त्रीलिंग में	लतावत्
नपुंसकलिंग में	फलवत्

नीचे लिखे धातुओं का उदाहरण के अनुसार तीनों लिंगों में 'शानच्' प्रत्यय के रूपों को लिखिए –

धातु	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
यथा– वर्त	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्
वन्द्			
मुद्			
युध्			
कम्प्			
ईक्ष्			

भूतकालिक कृदन्त – क्त, क्तवतु प्रत्यय

'क्त' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

धातुएँ दो प्रकार की होती है –

1. अकर्मक 2. सकर्मक

रामः रावणम् अमारयत्।

यहाँ कर्ता कौन है? ______________________

यहाँ कर्म क्या है? ______________________

क्रिया का संबंध किसके साथ है? ____________________

निश्चय ही यहाँ कर्ता राम है, कर्म रावण, क्रिया का संबंध (पुरूष और वचन) राम के साथ है।

जब 'क्त' प्रत्यय जुड़ता है तभी वाक्य का कर्मवाच्य में परिवर्तन होना चाहिए।

रामेण रावणः/मारितः/हतः

यहाँ (i) हतः/मारितः शब्द की विभक्ति और वचन किसके अनुरूप है? राम के/रावण के?

(ii) यहाँ 'रामेण' की विभक्ति और वचन क्या है?

(iii) यहाँ 'रामेणः' इसकी विभक्ति एवं वचन क्या है?

(iv) यहाँ 'हतः' की विभक्ति एवं वचन क्या है?

यहाँ हम सब देखते है कि कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है न कि कर्ता के अनुसार। कर्ता तो तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त होता है।

अब ये उदाहरण पढ़े –

वाक्यानि	धातु	प्रत्यय
(i) बालकेन पाठः पठितः।	पठ्	क्त
(ii) नकुलेन कृष्णसर्पः दृष्टः।	दृश्	क्त
(iii) नीरजेन सुलेखः लिखितः।	लिख्	क्त
(iv) वानरेण फले त्रोटिते।	त्रुट्	क्त
(v) जनकेन ग्रामः रक्षित।ः	रक्ष्	क्त
(vi) भक्तेन पूजा कृता।	कृ	क्त
(vii) छात्रया रामायणं श्रुतम्।	श्रु	क्त
(viii) कालिदासेन सप्तग्रन्थाः रचिताः	रच्	क्त

1. रिक्त स्थान में प्रत्यय लिखिए –

(i) दृष्टः = दृश् + ———————— प्रत्ययः

(ii) पठितः = पठ् + ———————— प्रत्ययः

(iii) खादितः = खाद् + ——————— प्रत्ययः

(iv) स्मृतः = स्मृ + ——————— प्रत्ययः

(v) पृष्टः = प्रच्छ् + —————— प्रत्ययः

2. निर्दिष्ट धातुओं के साथ 'क्त' प्रत्यय के प्रयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

यथा – श्वेतकेतुना, फलं, भिन्नम् (भिद्)

(i) तेन पत्रं ——————। (लिख्)

(ii) कविना पुस्तकानि —————— । (रच्)

(iii) वानरैः फलानि ———————। (भक्ष्)

(iv) राज्ञा ब्राह्मणः ————————। (नि+मन्त्र)

(v) किं त्वया जन्तुशाला ———————। (दृश्)

'क्त' प्रत्यय से बने शब्द विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होते है।

यथा –

(i) पक्वानि (पच्+क्त) आम्राणि आनय।

(ii) अनुमतः (अनु+मन्+क्त) पुत्रः राजसभाम् अगच्छत्।

(iii) पर्युषितम् (परि+वस्+क्त) अन्नं मा खादेत्।

(iv) सुप्ताम् (सुप्+ क्त) कन्यां न जागृयात्।

(v) रक्षितम् (रक्ष्+क्त) सैनिकं भोजय।

सभी अकर्मक धातुओं के कर्ता में भी 'क्त' प्रत्यय होता है।

यथा –

(i) लेखनी पतिता।

(ii) बालकः प्रबुद्धः।

(iii) सः शयितः।

(iv) पुष्पं विकसितम्।

(v) वृक्षः कम्पितः।

(vi) सः दुराद् आगतः।

अस्माभिः अधीतम्

(i) क्त प्रत्ययस्य 'त' अवशिष्यते।

(ii) अस्य प्रयोगः कर्मणि भूतकालस्य क्रियार्थे भवति, अतः कर्ता सदा तृतीयायां भवति, कर्म च प्रथमायाम्।

(iii) अस्य प्रयोगः विशेषणरुपेण अपि भवति।

(iv) अकर्मक धातुनां कर्तृवाच्ये अपि 'क्त' प्रत्ययः प्रयुज्यते।

(v) त्रिषु लिङ्.गेषु रूपाणि चलन्ति।

पुल्लिंगे – बालकवत्

स्त्रीलिंगे – लतावत्

नपुंसकलिंगे – फलवत्

'क्तवतु' प्रत्यय कर्तृवाच्य मे भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए –

(i) जनकः धर्मपुरे राज्यं कृतवान्।

(ii) सा कस्याश्चित् स्त्रियाः विलापं श्रुतवती।

(iii) सः स्वशरीरं गरूडाय अर्पितवान्।

(iv) पुरुषः मांसभक्षणं त्वक्तवान्।

(v) अहम् एकां कथां पठितवान्।

ध्यान से पढ़ने पर यह पता लगा कि क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग कर्तृवाच्य में लङ्.लकार के स्थान पर हुआ है । अतः लङ्.लकार के रूप में सामने 'क्तवतु' प्रत्ययान्त रूप लिखे –

लङ्.लकार	क्तवतु प्रत्ययान्त रूप
यथा– अपठत्	पठितवान्
अकरोत्	
अश्रृणोत्	
आनयत्	
अत्यजत्	
अखादत्	

1. बहुवचन में परिवर्तन कीजिए –

एकवचनम्	बहुवचनम्
यथा– पठितवान्	पठितवन्तः
कृतवान्	
हसितवान्	
दत्तवान	
खादितवान्	
जीवितवान्	

2. नीचे लिखे गए वाक्यों को स्त्रीलिंग में परिवर्तन कीजिए –

पुल्लिंग	स्त्रीलिड्.गे
यथा – पिता कथितवान्	माता कथितवती।
(i) शिक्षकः अधीतवान्।	(i)
(ii) युवकः हसितवान्।	(ii)
(iii) मातुलः निवेदितवान्।	(iii)
(iv) छात्रः पृष्टवान्।	(iv)
(v) पितामहः पूजितवान्	(v)
(vi) राजा परित्यक्तवान्	(vi)

कल सुखदा का आठवाँ जन्मदिन था। उसके लिए अनेक उपहार दिए गए। बन्धुओं और मित्रों के द्वारा क्या–क्या दिये गये, इसे जानने के लिए मञ्जूषा से उचित क्रिया पदों को चुनकर वाक्यों को पूर्ण कीजिए –

मञ्जूषा

दत्तवान्, आनीतवती, क्रीतवान्, अनीतवन्तौ, दत्तवन्तः, दत्तवन्तौ, आनीतवान्, स्वीकृतवती, आनीतवन्ति।

यथा – पिता सुखदायै द्विचक्रिकां क्रीतवान्।

(i) माता वस्त्राणि ––––––––––––––––––।

(ii) मित्राणि तस्यै शिक्षाप्रद क्रीडनकानि ––––––––––––––।

(iii) सुखदा नीरजायाः पुस्तकानि –––––––––––––––।

(iv) मनीषः 'सर्वसोपानं' इति लेखन् ––––––––––––––––––––।

(v) मातुलौ पठनाय आसन्दिकामञ्चौ ––––––––––––––––।

(vi) पितामहः रूप्यकानां पञ्चशतम् –––––––––––––––––।

(vii) मातामही मातामहः च मौक्तिकमालाम् ––––––––––––––––।

(viii) भ्रातरः मिलित्वा हारमोनियम् इति वाद्ययन्त्रम् ––––––––––––––।

3. **नीचे लिखे प्रश्न 'क्तवतु' प्रत्यय के प्रयोग से बने है उनके उत्तर 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर दीजिए**

यथा – त्वं अद्य किं पठितवान्?

मया अद्य पदानि पठितानि।

(i) प्र. राधा किं कृतवती?

उ.

(ii) प्र. पाकशालायां सूदः किं पक्ववान्?

उ.

(iii) प्र. देशं कः आक्रान्तवान्?

उ.

(iv) प्र. रामायणं कः लिखितवान्?

उ.

(v) देशभक्तः कस्मै प्रतिज्ञातवान्?

उ.

अस्माभिः अधीतम् – क्तवतु प्रत्यय

1. क्तवतु प्रत्यय का 'तवत्' शेष रहता है।
2. इसका प्रयोग कर्तृवाच्य में भूतकालिक क्रिया अर्थ में होता है। इसलिए कर्ता हमेशा प्रथमा में ही होता है।
3. तीनों पुरूषों में रूप एक समान होता है।

यथा – सः दृष्टवान्। त्वं दृष्टवान्। अहं दृष्टवान्।

4. तीनों लिंगों में रूप होता हैं–

पुंल्लिग में – भवत्वत् स्त्रीलिंग में – नदीवत् नपुंसकलिंग में – जगत्वत्

पूर्वकालिक कृदन्त क्त्वा – ल्यप्

1. नीचे लिखे रेखांकित पदों में 'क्त्वा' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। अर्थ जानकर प्रश्न

निर्माण कीजिए –	धातु	प्रत्यय
यथा – सिहं दृष्ट्वा बालः त्रस्यति।		
प्रश्न – कं दृष्ट्वा बालः त्रस्यति?	दृश्	क्त्वा
(i) व्याधः जालं क्षिप्त्वा कपोतान् ग्रहीष्यति।	क्षिप्	क्त्वा
प्रश्न ———————————————— ?		
(ii) कश्मीरं गत्वा वयं प्राकृतिकं सौन्दर्यं द्रक्ष्यामः।	गम्	क्त्वा
प्रश्न ———————————————— ?		
(iii) मनीषः आलस्यं त्यक्त्वा स्वाध्यायपरः अस्ति।	त्यज्	क्त्वा
प्रश्न ———————————————— ?		
(iv) छात्रः नत्वा गुरुं प्रणमति।	नम्	क्त्वा
प्रश्न ————————————————— ?		

2. यहाँ दो वाक्य लिखे गये हैं। प्रथम वाक्य में क्रिया के स्थान में 'क्त्वा' प्रत्ययान्त पद प्रयोग कर एक वाक्य बनाकर लिखिए –

यथा –

(i) सुरेशः गच्छति। सः फलानि आनयति।

सुरेशः गत्वा फलानि आनयति।

(ii) कमला धावति। कन्दुकं गृह्णाति।

———————————————— (धाव्+क्त्वा) (धावित्वा)

(iii) उषा खादति। सा भ्रमति। (खाद्+क्त्वा) खादित्वा

————————————————

(iv) मयूरः नृत्यति। सः वृक्ष विश्राम्यति।

———————————————————— (नर्तित्वा)

(v) महिला हास्यकथां श्रृणोति। सा उच्चैः हसति।

———————————————————— (श्रु+क्त्वा)

'ल्यप्' प्रत्यय का प्रयोग

1. नीचे क्त्वा' के स्थान में 'ल्यप' प्रत्यय का प्रयोग समझकर प्रश्न निर्माण कीजिए –

	उपसर्ग	धातु	प्रत्यय
यथा – (i) मातापितरौ प्रणम्य पुत्रः विदेशं गच्छति।	प्र	नम्	ल्यप्
प्रश्न – कौ प्रणम्य पुत्रः विदेशं गच्छति ?			
(ii) छात्राः पुस्तकानि अधीत्य पाठं स्मरन्ति।	अधि	इ	ल्यप्
(ii) ———————————————— ?			
(iii) भक्तः शिवं सम्पूज्य सुखं लभते।	सम्	पूज्	ल्यप्
(iii) ———————————————— ?			
(vi) मालिनी सुरेखायै पुष्पगुच्छं प्रदाय जन्मदिने वर्धापनम् अर्पयति।	प्र	दा	ल्यप्
(iv) ———————————————— ?			

2. **दिए गए उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए –**

(i) शिष्यः विद्यालयं प्रविशति। सः गुरुं प्रणमति।

(i) शिष्यः विद्यालयं प्रविश्य गुरूं प्रणमति।

(ii) छात्रा खटिकाम् आनयति सा श्यामपट्टे लिखति।

(ii) ————————————————————

(iii) वानरः वृक्षम् आरोहति। सः जन्बुफलानि पातयति।

(iii) ————————————————————

(iv) देशभक्ताः मातृभूमिं प्रणमन्ति। ते सुखं लभते।

(iv) ————————————————————

अस्माभिः अधिगतम्

1. 'कृत्' इति प्रत्ययानां प्रयोगः धातुभिः सह भवति।
2. क्त्वा–ल्यप् प्रत्यययोः प्रयोगः 'करके' इत्यर्थे भवति।
3. क्त्वा प्रत्ययस्य 'त्वा' ल्यप् प्रत्ययस्य 'य' अवशिष्यते।
4. धातोः पूर्वं यदि उपसर्गः भवेत् तर्हि तत्र क्त्वा स्थाने 'ल्यप्' प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
5. क्त्वा–ल्यप् प्रत्यय–प्रयोगेन निर्मितानि पदानि अव्ययानि जायन्ते।

'तुमुन्' उत्तरकालिक कृदन्त

1. अधोलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के साथ 'तुमुन्' प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। उन प्रयोगों को समझकर प्रश्न निर्माण कीजिए –

यथा – (i) अहं प्रधानमन्त्रिणः भाषणं श्रोतुं रक्तदुर्गं गच्छामि।

प्रश्न– त्वं किं कर्तुं रक्तदुर्गं गच्छसि?

		धातु	प्रत्यय
(ii)	मालाकारः पुष्पाणि चेतुम् उद्यानं गच्छति।		
(ii)	––––––––––––––––––––––––– ?	चि	तुमुन्
(iii)	अर्जुनः योद्धुम् उद्यतः अस्ति।	युध्	तुमुन्
(iii)	––––––––––––––––––––––––– ?		
(iv)	त्वं ग्रन्थं पठितुम् इच्छसि।	पठ्	तुमुन्
(iv)	––––––––––––––––––––––––– ?		
(v)	जनकः गंगायां स्नातुं हरिद्वारं अगच्छत्।	स्ना	तुमुन्
(v)	––––––––––––––––––––––––– ?		
(vi)	व्यायामं कर्तुं जनाः उद्यानं गच्छन्ति।	कृ	तुमुन्
(vi)	––––––––––––––––––––––––– ?		

2. **नीचे दिए गए पद को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –**

खादितुम्, क्रेतुम्, गन्तुम्, दातुम्, कर्तुम्

(i) छात्राः जन्तुशालां ———————— पंक्तिबद्धाः तिष्ठन्ति।

(ii) दानशीलाः वस्त्राणि ———————— आगच्छन्ति।

(iii) सभायां शान्तिव्यवस्थां ———————— आरक्षकाः सन्ति।

(iv) पुस्तक प्रदर्शन्यां जनाः पुस्तकानि ———————— आगच्छन्ति।

(v) मेलापके परिवारस्य सदस्याः मिष्ठान्नं ———————— उपविशन्ति।

विशेषः

1. 'तुमुन्' प्रत्ययस्य अर्थः भवति 'के लिए'।
2. अस्य प्रयोगः धातुभिः सह भवति।
3. तुमुन् प्रत्ययस्य 'उ' 'न' वर्णयोः लोपः भवति 'तुम्' एव अवशिष्यते।
4. तुमुन् क्त्वा–ल्यप् प्रत्यययोगेन निर्मितानि पदानि अव्ययानि जायन्ते।

मिश्रितप्रश्नाः

1. अधोलिखित वाक्येषु रेखांकितपदैः तुमुन्/क्त्वा/ल्यप् प्रत्ययाः प्रयुक्ताः। तेषाम् अर्थं प्रयोगं च अवगच्छन्तु प्रश्ननिर्माणं च कुर्वन्तु।

यथा – बालकः स्नातुं गच्छति।

स: स्नात्वा वस्त्राणि धारयति।

प्रश्न (i) बालकः किं कर्तुं गच्छति?

(ii) सः कदा वस्त्राणि धारयति?

(क)

(i) अहं पठितुं वाचनालयं गच्छामि।

(ii) अहं पठित्वा आपणं प्रविशामि।

(i) ———————————————— ?

(ii) ———————————————— ?

(ख)

(i) खगाः विहर्तुम् आकाशे उड्डयन्ते।

(ii) ते विहृत्य नीडेषु प्रविशन्ति।

(i) ———————————————— ?

(ii) ———————————————— ?

2. अधोलिखितेषु वाक्येषु कोष्ठके निर्दिष्टधातोः तुमुन्/क्त्वा प्रत्ययान्तपदेन रिक्त स्थानानि पूरयत

यथा– (i) धेनवः चरितुं क्षेत्रं गच्छन्ति। (चर्)

ताः चरित्वा गृहम् आगच्छन्ति।

(ii) रमेशः भोजनं ———————— पाकशालाम् उपविशति। (कृ)

सः भोजनं ————————— हस्तौ प्रक्षालयति।

(iii) सरला ईश्वरं —————— मालां जपति। (स्मृ)

सा ईश्वरं ——————— शान्तिम् आप्नोति।

(iv) मूषकं ———————— मार्जारः धावति। (ग्रह)

तं ————————— मार्जारः भक्षयति।

3. अधोदत्तायां तालिकायां पञ्चकर्तारः सन्ति यैः पृथक्–पृथक् कार्यं क्रियते। कर्तारम् आश्रित्य दशवाक्यानि रचयन्तु –

रेखा	गृहं	गत्वा	पठति
सूर्याशः	क्रीडनकानि	क्रेतुं	गच्छति
मित्रं	वेदान्	अधीत्य	प्रसीदति
सः	देशं	रक्षितुं	संकल्पते
सा	दुग्धं	पीत्वा	वर्धते

यथा – सूर्याशः गृहं गत्वा पठति।

त्व प्रत्ययः

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(i) चाणक्यस्य विद्वत्वं को न जानाति।

(ii) रामस्य शूरत्वं सर्वे प्रशंसन्ति।

(iii) भरतस्य भ्रातृत्वं सर्वत्र प्रशंसनीयम्।

(iv) गुरोः गुरूत्वं वर्णयितुं कः समर्थ।

(v) मनुष्यत्वं कदापि न त्यज्।

क्या आप जानते हैं रेखांकित पदों में कौन सा प्रत्यय है–

1. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञापद निर्माण के लिए होता है।

2. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा विशेषण पदों के साथ होता है।

3. 'त्व' प्रत्यय से बने शब्द नपुंसकलिंग में होते हैं। इसके रूप फल के समान होते हैं।

2. 'त्व' प्रत्यय का प्रयोग कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

(i) कवेः ———————— को न जानाति। (कवि)

(ii) क्षत्रियाणां ———————— सर्वत्र प्रशंसनीयम्। (वीर)

(iii) अग्नेः ————————— असहनीयम्। (उष्ण)

(iv) कर्म कुरू ——————— मा लभस्व। (दीन)

(v) पाषाणस्य ————————— जगत्प्रसिद्धम्। (कठोर)

(vi) विद्यायाः ————————— सर्वे स्वीकुर्वन्ति। (महत्)

(vii) सागरस्य —————————— मापनीयं न अस्ति। (गहन)

त्व प्रत्यय के शब्द –

देव + त्व = देवत्वम्	शिशु + त्व = शिशुत्वम्	व्यक्ति+त्व =व्यक्तित्वम्
दिव्य+त्व = दिव्यत्वम्	महत्+त्व = महत्त्वम्	कवि + त्व = कवित्वम्
पटु + त्व = पटुत्वम्	एक + त्व = एकत्वम्	नर + त्व = नरत्वम्
मातृ + त्व = मातृत्व	हीन + त्व = हीनत्वम्	राजन् + त्व = राजत्वम्
फल + त्व = फलत्वम्	पुरूष + त्व = पुरूषत्वम्	विद्वस्+ त्व = विद्वत्वम्
शूरू + त्व = शूरत्वम्	दृढ़ + त्व = दृढत्वम्	सुन्दर + त्व = सुन्दरत्वम्

तल् प्रत्यय

1. नीचे लिखे वाक्य ध्यान से पढ़िए –

यथा –

अग्नेः	उष्णता	पृथिव्याः	सहनशीलता
जलस्य	शीतलता	मनसः	चञ्चलता
आकाशस्य	विस्तृतता	सृष्टेः	सुन्दरता
समुद्रस्य	गहनता	प्रकृतेः	रमणीयता

ऊपर लिखित द्वितीय पदों में 'तल्' प्रत्यय का प्रयोग है।

1. 'तल्' प्रत्यय का प्रयोग संज्ञा–विशेषण शब्दों के साथ होता है।

2. 'तल्' के स्थान में 'ता' प्रयुक्त होता है।

3. 'तल' (ता) योग से निर्मित शब्द के रूप में स्त्रीलिंग में लता के समान चलते हैं।

4. 'तल' (ता) योग से भाववाचक संज्ञा पद निर्मित होते हैं।

यथा सुन्दरता, मधुरता, क्रुरता, कोमलता आदि।

2. नीचे मञ्जूषा में दिए गए शब्दों के साथ 'तल' प्रत्यय को जोड़कर यथोचित रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए –

यथा – क्रुरता तु सदैव निन्दनीया एव भवति।

1. अग्नेः ––––––––––– शीतकाले रोचते।
2. ––––––––––––– दुःखदायिनी भवति।
3. गृहस्य ––––––––––––– आनन्ददायिनी भवति।
4. प्रकृतेः ––––––––––––– मनोरमा अस्ति।
5. गणितविषये अशोकस्य ––––––––––––– प्रशंसनीया वर्तते।
6. मनसः ....वानरस्य इव भवति।

क्रुर, चञ्चल, दक्ष, स्वच्छ, उष्ण, निर्धन, रमणीय

ठक् (इक्)

ध्यानेन पठतु

1. मनुष्यः सामाजिकः प्राणी अस्ति।
2. 'पर्यावरण–रक्षणम्' अस्माकं नैतिकं कर्तव्यम् अस्ति।
3. अद्यत्वे औद्योगिकः विकासः सर्वत्र दृश्यते।
4. विद्यया लौकिकी अलौकिकी च उन्नतिः भवति।
5. मम गृहे माङ्गलिकः कार्यक्रमः सम्पत्स्यते।

विचार कीजिए –

(क) ऊपर लिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के अन्त में कौन सा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है?

(ख) इन पदों में मूल शब्द क्या है?

(ग) इन पदों के शब्द के प्रथम स्वर (आदिस्वर) में परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

(घ) वाक्य में ये पद विशेषण रूप में प्रयुक्त हैं अथवा विशेष्य रूप में।

2. अब हम देखते हैं कि रेखांकित पदों में इस प्रकार परिवर्तन हुए है –

क्रमांक	पदानि	मूल शब्दः	प्रत्ययः	शब्दस्य प्रथमस्वरे वृद्धिः
1.	सामाजिकः (पुं.)	समाज	ठक् (इक्)	स+अ, अ स्थाने आ
2.	नैतिकम् (नपुं.)	नीति	–– ––	न्+ई, ई स्थाने ऐ
3.	औद्योगिकः (पुं.)	उद्योग	–– ––	उ स्थाने औ
4.	लौकिकी (स्त्री.)	लोक	–– ––	ल्+ओ, ओ स्थाने औ
5.	माङ्.गलिकः (पुं.)	मङ्.गल	ठक् (इक्)	म्+अ, अ स्थाने आ

रेखांकित पदों की स्थिति वाक्यों में इस प्रकार है –

1. सामाजिकः प्राणी
2. नैतिकं कर्तव्यम्
3. औद्योगिकः विकासः
4. लौकिकी उन्नतिः
5. माङ्.गलिकः कार्यक्रमः

इस प्रकार ठक् (इक्) प्रत्यय से युक्त शब्द विशेषण शब्द होते है।

इस प्रकार हमे ज्ञात हुआ –

1. ठक् प्रत्यय के स्थान में 'इक्' होता है।
   प्रयोग में 'इक्' ही दिखाई देता है–

यथा –समाज + ठक् = सामाजिक)

2. ठक्/ठञ् (इक) प्रत्यय लगने पर मूल शब्द के आदिस्वर की वृद्धि होती है।
   आ, ऐ, औ, तीन वृद्धि स्वर हैं।

वे क्रमशः

अ ⟶ आ

इ, ए ⟶ ऐ

उ ओ ⟶ औ

ऋ ⟶ आर् होते हैं

(कृतिका + इक = कार्तिक)

(ङ) 'इक' प्रत्ययान्त पद विशेषण पद होते हैं। अतः इस पद का विशेष्य के अनुसार लिङ्ग होता है।

3. निम्नांकित वाक्यों में कोष्टक में दिए गए शब्द के साथ ठक्/ठञ (इक) प्रत्यय जोड़कर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

यथा– अहं भारतस्य नागरिकः (नगर+ठक्) अस्मि।

1. अत्र (धर्म+ठक्) ....उत्सवः भवति।
2. अयं (वेद+ठक्) ....विद्वान् अस्ति।
3. सः (पुराण+ ठक्) .... मङ्गलाचरणं करोति।
4. दिल्ल्याम् अनेकानि (इतिहास+ठक्) ....स्थानानि सन्ति।
5. भारतस्य (भूगोल+ठक्) .... स्थितिः विचित्रा अस्ति।
6. सप्ताह+ठञ् ....अवकाशः रविवासरे भवति।
7. अयं (कल्पना+ठक्) ....उपन्यासः केन लिखितः।
8. सम्प्रति देशस्य (अर्थ+ठक्) ....स्थितिः संतोषप्रदा।
9. (वर्ष+ठञ्) ....परीक्षायां मया निबन्धः लिखितः।
10. (दिन+ठञ्) ....कार्यं मया सम्पन्नम्।

नीचे लिखे गए विशेष्यों का विशेषण पद कोष्ठक से चुनकर लिखिए –

क्रमांक	विशेषण पदानि	विशेष्यपदानि
	यथा – ऐतिहासिकम्	नाटकम् (ऐतिहासिकः/ऐतिहासिकम्)
I	....	उपदेशः (नैतिकः/नैतिकम्)
Ii	....	अभ्यासः (प्रायोगिकम्/प्रायोगिकः)
Iii	....	परीक्षा (मासिकम्/मासिकी)
Iv	....	निमंत्रणम् (औपचारिकम्/औपचारिकः)
V	....	कृतिः (मौलिकम्/मौलिकी)
Vi	....	दृश्यम् (प्राकृतिकम्/प्राकृतिकः)
Vii	....	विद्यालयः (प्राथमिकम्/प्राथमिकः)
Viii	....	विद्या (आध्यात्मिकी/आध्यात्मिकम्)

ङीप्

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(क) पुण्यजला गङ्गानदी।

(ख) जीवनदात्री प्रकृतिः रक्षणीया सदा।

(ग) उपकारिणी वृत्तिः भवति खलु सज्जनानाम्

(घ) लौकिकी उन्नतिः यशः वर्धयति।

(ङ) यादृशी भावना सिद्धिः भवति तादृशी।

2. उपर्युक्त रेखाङ्कित पदों में किस लिङ्ग का रूप है।

रेखाङ्कित पदों में स्त्रीलिंग का रूप है।

कैसे जान गए कि इन पदों में स्त्रीलिङ्ग का रूप है। क्योंकि इन पदों के अंत में 'ई' प्रत्यय दिखाई दे रहा है। क्या 'ई' स्त्री प्रत्यय है?

नहीं 'ङीप्' (ङ+इ+प) स्त्रीप्रत्ययः।

ङीप् प्रत्यय में 'ई' ही शेष रहता है। 'ई' ङीप् प्रत्यय का रूप है।

तो फिर ङीप् प्रत्यय का प्रयोग कब किया जाना है। स्त्रीलिङ्ग शब्द निर्माण के लिए ही 'ङीप्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

यथा – नद्+ङीप् = नदी, ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द होता है।

3. अतः हमें ज्ञात हुआ –

ङीप् स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोग की दशा में 'ई' शेष रहता है।

स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण में ङीप् प्रत्यय प्रयुक्त होता है। जैसे– लौकिक+ङीप् = लौकिकी।

ङीप् प्रत्ययान्त शब्द नदी' शब्द के समान होगा।

4. उदाहरण के अनुसार ईकारान्त स्त्रीलिंङ्ग शब्दों की रचना कीजिए –

क्रमांक	शब्दाः + प्रत्ययाः	निर्मितस्त्रीलिंङ्गशब्दाः
I	देव + ङीप्	देवी
Ii	तरुण + ङीप्	....
Iii	कुमार + ङीप्	....

Iv	त्रिलोक + ङीप्	....
V	किशोर + ङीप्	....
Vi	मनोहारिन्+ ङीप्	मनोहारिणी
Vii	मलिन् + ङीप्	....
Viii	तपस्विन् + ङीप्	....
IX	भवत् + ङीप्	....
X	श्रीमत् + ङीप्	....
Xi	गच्छत् (गम्+शतृ)+ ङीप्	गच्छन्ती
Xii	पचत्(पच्+शतृ)+ ङीप्	....
Xiii	नृत्यत् (नृत्+शतृ)+ ङीप्	....
Xiv	पश्यत् (दृश्+शतृ)+ ङीप्	....
	वदत् (वद्+शतृ)+ ङीप्	....

ध्यान देने योग्य :–

जब शतृ प्रत्ययान्त शब्दों में ङीप् प्रत्यय जुड़ता है तब प्रथम, चतुर्थ, षष्ठ व दशम् गण की धातुओं में अंतिम 'त' वर्ण से पूर्व 'न' वर्ण का आगम होता है। किन्तु शेष गणों की धातुओं में 'न' का आगम नहीं होता है।

यथा– गम्+शतृ = गच्छत्+ङीप् = गच्छत्+ई = गच्छन्ती ।

कृ+शतृ = कुर्वत्+ङीप् = कुर्वत्+ई = कुर्वती।

5. नीचे लिखे वाक्यों में निर्दिष्ट शब्दों के साथ ङीप् प्रत्यय जोड़कर वाक्य पूर्ण कीजिए–

यथा– श्रीमती (श्रीमत्+ङीप्) हेमा नाट्योत्सवे दीपं प्रज्वालयति।

1. (कुमार+ङीप्) .... वंदना पुष्पगुच्छैः तस्याः स्वागतं करोति।
2. एका (किशोर+ङीप्) ....भरतनाट्यं प्रस्तौति।
3. तया सह (नृत्यत्+ङीप्) ....देविका अस्ति।
4. मञ्चे (गायत्+ङीप्) ....सुधा अस्ति।
5. (मनोहारिन्+ङीप्) ....एषा नाट्यप्रस्तुतिः।

6. नीचे लिखे वाक्यों में स्त्रीप्रत्ययान्त (टाप्/ङीप्) पदों को चुनकर अलग–अलग लिखिए–

1. मधुरा वाणी प्रीणयति मनः।
2. सतां बुद्धिः हितकारिणी भवति।
3. सत्सङ्गतिः सर्वत्र दुर्लभा।
4. उपकारकर्त्री प्रकृतिः धन्या।
5. कुलाङ्गना सदा सम्मानस्य अधिकारिणी।
6. नैतिकी शिक्षा आवश्यकी।

= टाप् =

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –

(क) बालः बाला च उदयन्तं भास्करं नमतः।
आचार्यः आचार्या च वृक्षान् आरोपयतः।
शिष्यः शिष्या च लताः जलेन सिञ्चतः।
गायकः गायिका च प्रकृतिगीतं गायतः।

अहो! अत्र शोभना प्रकृतिः शोभनः च उत्सवः।

2. क्या आप जानते है कि उपर्युकत रेखाङ्किकत पदों की लिङ्ग की दृष्टि से क्या विशिष्टता है?

" इन पदों में स्त्रीलिङ्ग रुप प्रयुक्त हुए हैं"।

इन पदों के अंत में कौन सा प्रत्यय है?

:"आ" प्रत्यय दिखाई दे रहा है।

यह 'आ' प्रत्यय किसका रुप अथवा अंश है?

'टाप्' (ट्+आ+प्) प्रत्यय का। टाप् स्त्री प्रत्यय है। तो फिर 'टाप्' प्रत्यय कब और कैसे शब्दों के साथ जुड़ता है। स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण के लिए अकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के साथ 'टाप्' प्रत्यय जुड़ता है। 'टाप्' प्रत्यय में केवल 'आ' शेष रहता है।

यथा – बाल (अकारान्त पु.)+ टाप् (स्त्रीप्रत्यय)

बाल + ट् + आ + प् = बाल + आ = बाला (स्त्रीलिङ्ग)

'टाप्' प्रत्ययान्त शब्दों का रुप कैसा हो?

इस प्रकार के शब्दों का रुप 'लता' के समान होगा।

3. अतः इसे ज्ञात हुआ कि –

- ❖ टाप् स्त्रीप्रत्यय है। प्रयोग में इसका 'आ' ही शेष रहता है।
- ❖ यह प्रत्यय स्त्रीलिंङ्ग शब्द निर्माण के लिए अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के साथ प्रयुक्त होता है। जैस– बाल + टाप् = बाला।
- ❖ अक भाग से अंत शब्दों में 'क' वर्ण से पूर्व अकार स्थान में 'इ' होता हैं। जैसे (ग्+ आ+य्+अ+क्)+ टाप् = गायिका

4. नीचे लिखे वाक्यों में निर्दिष्ट शब्दों के साथ टाप् प्रत्यय का प्रयोग कर वाक्य पूरा कीजिए–

यथा – प्रभा पठने प्रवीणा (प्रवीण+टाप्) अस्ति।

1. अस्याः ....(अनुज+टाप्) दीप्तिः अस्ति।
2. दीप्तिः क्रीडायाम् ....(कुशल+टाप्) अस्ति।
3. युतिकादीप्तयोः माता ....(चिकित्सक+टाप्) अस्ति।
4. सा समाजस्य ....(सेवक+टाप्) अस्ति।
5. सा तु स्वभावेन अतीव ....(सरल+टाप्) अस्ति।

6. नीचे लिखे वाक्यों में टाप् प्रत्ययान्त पदों को चुनकर लिखिए –

1. अमृतजला इयं गङ्गा पवित्रा।
2. कथं नु एतस्याः शोभा विचित्रा।
3. सवेगं वहन्ती खलु शोभमाना।
4. वन्द्या सदा सा भुवि राजमाना।
5. भक्तैः सदा तु चिरं सेवमाना।
6. भागीरथी भवतु मे पूर्णकामा।

———000———

अव्यय – प्रकरण

जो शब्द तीनों लिङ्गों सातों विभक्तियों और तीनों वचनों में एक समान रहते है, उन्हें 'अव्यय' कहते है।

अव्यय शब्दों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। 'अव्यय' अर्थात् 'न व्येति इति अव्ययम्।' ये अविकारी ; अपरिवर्तनशील होते है।

कुछ प्रमुख प्रचलित अव्यय पदों का अर्थ एवं वाक्य में प्रयोग इस प्रकार है –

1. अत्र – यहाँ।

   त्वम् अत्र आगच्छ। तुम यहाँ आओ।

2. यदा – जब ।

   यदा सूर्यः उदेति तदा तमः नश्यति।

   जब सूर्य उदय होता है तब अन्धकार नष्ट होता है।

3. तदा – तब।

   यदा वसन्तः आगच्छति तदा कोकिला कूजति।

   जब वसन्त आता है तब कोयल कूकती है।

4. एकदा – एक दिन, एक बार

   एकदा सः पिपासया व्याकुलः अभवत्।

   एक बार वह प्यास से व्याकुल हो गया।

5. सर्वदा – हमेशा।

   गोपालः सर्वदा सत्यं वदति।

   गोपाल हमेशा सत्य बोलता है।

6. सदा – हमेशा।

   सदा सत्यं वदेत्।

   सदा सत्य बोलना चाहिए।

7. सर्वथा – सब प्रकार से।

सत्यवचनं <u>सर्वथा</u> हितकारी भवति।

सत्यवचन सभी प्रकार से हितकारी होता है।

8. तत्र – वहाँ

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते <u>तत्र</u> देवताः।

जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है।

9. सर्वत्र – सही जगह।

अति <u>सर्वत्र</u> वर्जयेत्।

अति सभी जगह वर्जित है।

10. यत्र – जहाँ।

<u>यत्र</u> धूमः तत्र अग्निः।

जहाँ धुआँ है वहाँ अग्नि है।

11. एकत्र – इकट्ठे, एक जगह।

त्वं काष्ठान् <u>एकत्र</u> कुरू।

तुम लकड़ियाँ इकट्ठा करो।

12. अन्यत्र – दूसरी जगह।

सः <u>अन्यत्र</u> प्रचलितः।

वह दूसरी जगह चला गया।

13. कुत्र – कहाँ।

त्वं <u>कुत्र</u> पठसि ?

तुम कहाँ पढ़ते हो ?

14. उच्चैः – जोर से।

सभायां <u>उच्चैः</u> मा वद।

सभा में जोर से मत बोलो।

15. शनैः – धीरे।

कच्छपः <u>शनैः</u> चलति।

कछुआ धीरे चलता है।

16. नीचैः – नीचे

वृक्षस्य नीचैः जनाः विश्राम्यन्ति।

वृक्ष के नीचे लोग विश्राम करते हैं।

17. शीघ्रम् – जल्दी।

त्वं शीघ्रं गच्छ।

तुम जल्दी जाओ।

18. चिरम् – देर से। बहुत काल तक।

ते तत्र चिरम् अवसन्।

वे वहाँ बहुत समय तक रहे।

19. सायम् – संध्या।

प्रातः सायं च पर्यटनं वरम्।

प्रातः और शाम को घूमना अच्छा है।

20. प्रातः – सबेरे।

प्रातः भ्रमणम् उचितम्।

सबेरे घूमना उचित है।

21. सह – साथ।

पुत्री मात्रा सह गच्छति।

पुत्री माता के साथ जाती है।

22. अपि – भी।

अहं संस्कृतं अपि पठामि।

मैं संस्कृत भी पढ़ता हूँ।

23. बहिः – बाहर।

सर्पः विवरात् बहिः निस्सरति।

सर्प बिल से बाहर निकलता है।

24. उपरि – ऊपर।

क्षेत्रस्य उपरि खगः उड्डयते।

खेत के ऊपर पक्षी उड़ता है।

25. इदानीम् – इस समय।

बालकाः इदानीं क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति।

बालक इस समय खेल के मैदान में खेलते हैं।

26. अधुना – अब। इस समय।

अधुना भारते लोकतन्त्रम् अस्ति।

भारत में अब लोकतंत्र है।

27. साम्प्रतम् – अब, (इस् समय।)

साम्प्रतं वसन्तऋतुः अस्ति।

वर्तमान में वसन्त ऋतु है।

28. एव – ही।

परिवारः लघु एव वरम्।

परिवार का छोटा होना ही अच्छा है।

29. एवम् – इस प्रकार।

सः एवम् अवदत्।

वह इस प्रकार बोला।

30. यथा – जैसे।

यथा बीजं तथा **फ**लम्।

जैसा बीज वैसा **फ**ल।

31. तथा – वैसे।

यो यथा करोति स तथा प्राप्नोति।

जो जैसा करता है वह वैसा पाता है।

32. यावत् – जब तक।

यावत् प्रावृष्टिः कालः भवति तावत् नदी जलपरिपूर्णा भवति।

जब तक वर्षा काल रहता है तब तक नदी जल से परिपूर्ण रहती है।

33. तावत् – तब तक।

यावत् अहं रेलस्थानकम् अगच्छम्, तावत् रेलयानं गतमासीत्।

जब तक मैं रेल स्थानक गया तक तक रेल जा चुकी थी।

34. ह्यः – बीता कल।

ह्यः रविवासरः आसीत्।

कल रविवार था।

35. श्वः – आने वाला कल।

श्वः सोमवासरः भविष्यति।

कल सोमवार होगा।

36. अद्य – आज।

अद्य मम जन्मदिवसः।

आज मेरा जन्मदिन है।

37. यत् – कि।

सः अवदत् यत् अहं पाठशालां गच्छामि।

वह बोला कि मैं पाठशाला जा रहा हूँ।

38. यतः – क्योंकि।

यतः सः धूर्तः अतः तस्य विश्वासः न कर्त्तव्यः।

क्योंकि वह धूर्त है इसलिए उसका विश्वास नही करना चाहिए।

39. ततः – उसके बाद, उधर, वहाँ से।

ततः अहं स्वग्रामं गतवान्।

उसके बाद मैं अपने गाँव चला गया।

40. परितः – चारों ओर।

ग्रामं परितः वनम् अस्ति।

गाँव के चारों ओर जंगल हैं।

41. अभितः – दोनों ओर।

गृहम् अभितः वृक्षाः सन्ति।

घर के दोनों तर**फ** वृक्ष हैं।

42. सर्वतः – सभी ओर।

ग्रामं सर्वतः वृक्षावृतः अस्ति।

गाँव सभी तर**फ** से वृक्षों से घिरा है।

43. कुतः – कहाँ से। किधर से।

कुतः भवान् आगतः?

आप कहाँ से आए है?

44. किम् – क्या

किम् अनिलः अपि आगच्छत् ?

क्या अनिल भी आ गया ?

45. कदा – कब।

त्वं कदा आगमिष्यसि ?

तुम कब आओगे ?

46. विना – बिना।

ज्ञानं विना सुखं न अस्ति।

ज्ञान के बिना सुख नही है।

47. पुरा – पुराने समय में, पहले।

पुरा राजा भोजः आसीत्।

प्राचीन समय में राजा भोज थे।

48. मा – नहीं।

विवादं मा कुरु।

विवाद नहीं करो।

अभ्यासः

1. कोष्ठकात् उचिताव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत –

उच्चैः, उपरि, इतस्ततः, बहिः, अधुना, प्रति, शनैः, नीचैः, परस्परम्, अतीव, सह, इत्थम्

1. वृक्षस्य ....वानरः तिष्ठति।
2. सः गृहात् .... गच्छति।
3. कुक्करः .... भ्रमति।
4. काकः .... भासते।
5. कच्छपः .... चलति।

6. सा उपवनं .... गच्छति।

7. बालकः .... पठति।

8. जलं .... पतति।

9. पुत्री जनकेन .... गच्छति।

10. तौ .... वदतः।

11. सः .... प्रसन्नः अस्ति।

12. .... मा कुरु।

2. अव्ययनां प्रयोगः युग्मरूपेण अपि भवति।

यथा– यत्र–तत्र / यथा–तथा / यदा–कदा / यावत्–तावत्

अधोलिखितरिक्तस्थानानि युग्माव्ययेन सह पूरयत –

1. .... बीजं .... **फ**लम्।
2. ....मेघाः गर्जन्ति .... मयूराः नृत्यन्ति।
3. .... देशः .... वेषः।
4. .... सत्यं .... विजयः।
5. ....गिरयः स्थास्यन्ति पृथिव्यां ....रामायणकथा प्रचलिष्यति।

3. ह्यः वा श्वः अव्ययपदम् उचितस्थाने लिखन्तु।

1. .... अहं विद्यालयं न अगच्छम्।
2. .... अहं विद्यालयं गमिष्यामि।
3. ....शनिवासरः आसीत्।
4. .... सोमवासरः भविष्यति।
5. .... असौ गृहे न आसीत्।
6. .... असौ गृहे भविष्यति।

कारक

क्रिया से संबंध रखने वाला, कारक होता है। किसी वाक्य में जिस संज्ञा, सर्वनाम आदि का क्रिया से प्रत्यक्ष संबंध होता है, वही कारक कहलाता है। अर्थात्

" क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्"।

जिन शब्दों का क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है, वे कारक नहीं माने गए हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार कारकों की संख्या है।

"कर्त्ता कर्म च करणं सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहु: कारकाणि षट्।।"

'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होने के कारण कारक नहीं मानते हैं।

विभक्ति

क्रिया के साथ संज्ञा शब्दों का सम्बन्ध प्रकट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वे ही 'विभक्ति' कहलाती हैं अर्थात्

" संख्याकारकबोधयित्री विभक्ति:"।

विभक्तियाँ दो प्रकार की होती हैं–

1. कारक विभक्ति।
2. उपपद विभक्ति।

1. **कारक विभक्ति–** जो विभक्ति क्रिया के चिह्न के आधार पर लगती है और जिसमें सामान्य नियम लगते हों उसे कारक विभक्ति कहते हैं। जैसे– तुमने पत्र लिखा (त्वं पत्रम् अलिख:) यहाँ 'तुम' के साथ चिह्न 'ने' है अत: 'त्वम्' में प्रथमा विभक्ति हुई है।
2. **उपपद विभक्ति–** जब वाक्य में किसी विशेष शब्द के कारण क्रिया चिह्नों के अनुसार विभक्ति न लगाकर कोई विशेष विभक्ति लग जाए तो उसे 'उपपद विभक्ति' कहते हैं। जैसे– सैनिक देश की रक्षा करते हैं। (सैनिका: देशं रक्षन्ति)। यहाँ कारक नियम से तो 'देश' में पष्ठी विभक्ति लगनी चाहिए थी परन्तु 'रक्ष्' धातु के साथ द्वितीया विभक्ति ही लगी है।

उपपद विभक्तियाँ –

i. द्वितीया विभक्ति–

वार्तिक – 'अभित्: परित्: समया निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया' अभित: (दोनों ओर), परित: (चारों ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (हाय) और प्रति (की ओर) के साथ द्वितीया विभक्ति होती हैं। जैसे–

अभित: – ग्रामम् अभित: मार्गाः सन्ति। (ग्राम के दोनों ओर मार्ग है।)

परित: – नदीं परित: वृक्षाः सन्ति। (नदी के दोनों ओर वृक्ष हैं।)

समया – ग्रामं समया नदी प्रवहति। (गाँव के समीप नदी बहती है।)

निकषा – ग्रामं निकषा कीडाक्षेत्रं वर्तते। (गाँव के समीप खेल का मैदान है)

हा – हा नास्तिकम्। (नास्तिक के प्रति शोक।)

प्रति – मयङ्कः विद्यालयं प्रति गच्छति। (मयङ्क विद्यालय की ओर जाता है।)

सर्वत: (सब ओर) एवं उभयत: के योग में भी द्वितीया विभक्ति होती हैं।

सर्वत: – वनं सर्वत: मार्गाः सन्ति। (वन के सभी ओर मार्ग हैं।)

उभयत: – मार्गम् उभयत: वृक्षाः सन्ति। (मार्ग के दोनों ओर वृक्ष है।)

ii. तृतीया विभक्ति–

सह, साकं, सार्धम्, समम् (के साथ) के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे–

सह – छात्रः शिक्षकेण सह पठति। (छात्र शिक्षक के साथ पढ़ता है।)

साकम् – माता पुत्रेण साकम् आपणं गच्छति। (माता पुत्र के साथ बाजार जाती है।)

सार्धम् – बालिका शिक्षिकया सार्धं विद्यालयं गतवती। (बालिका शिक्षिका के साथ विद्यालय गयी।)

समम् – दुर्जनेन समं कः सुखं लभते? (दुष्ट के साथ कौन सुख पाता है?)

सदृशः (के समान) एवं अलम् (पर्याप्त, बस करो) के योग में भी तृतीया विभक्ति होती है।

यथा – सदृशः – लोभेन सदृशः पापं नास्ति। (लोभ के समान पाप नहीं है।)

विद्यया सदृशं धनं नास्ति। (विद्या के सामान धन नहीं है।)

तपसा सदृशं सुखं नास्ति। (तपस्या के समान कोई सुख नहीं है।)

अलम् – अलं मिथ्याभाषणेन। (मिथ्या भाषण से बस करो।)

iii. **चतुर्थी विभक्ति–** वार्तिक – 'नमः स्वस्तिस्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च चतुर्थी' नमः (नमस्कार), स्वस्ति (कल्याण हो), स्वाहा (आहुति देना), स्वधा (समर्पित, हवि का दान), अलं (पर्याप्त, काफी) वषड् (अर्पित) के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।

यथा –

1. नमः – श्री गुरवे नमः। (श्री गुरु को नमस्कार है)।
   – देव्यै सरस्वत्यै नमः। (देवी सरस्वती को नमस्कार है।)
2. स्वस्ति – छात्रेभ्यः स्वस्ति। (छात्रों का कल्याण हो।)
3. स्वाहा – अग्नये स्वाहा। (आग को समर्पित है।)
4. स्वधा – पितृभ्यः स्वधा। (पितरों को समर्पित है।)
5. अलम् – अहं गमनाय अलम् अस्मि। (मैं जाने के लिए समर्थ हूँ।)
6. वषड् – इन्द्राय वषड्। (इन्द्र को हवि का दान)

दा, दद् (देना), रूच (अच्छा लगना), क्रुध् (क्रोध करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना) आदि धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–

1. दा, दद् – सः निर्धनाय वस्त्रं ददाति (यच्छाति)। (वह निर्धन को वस्त्र देता है)
2. रूच् – मह्यं मोदकं रोचते। (मुझे लड्डू अच्छा लगता है।)
3. क्रुध् – पिता पुत्राय क्रुध्यति। (पिता पुत्र के लिए क्रोधित होते है।)
4. ईर्ष्य् – असुराः देवेभ्यः ईर्ष्यन्ति। (असुर देवों से ईर्ष्या करते हैं।)

iv. **पञ्चमी विभक्ति–** बहिः (बाहर), विना (के बिना), ऋते (बिना) के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

1. बहिः – श्यामा विद्यालयात् बहिः गच्छति। (श्यामा विद्यालय से बाहर जाती है।)
   ग्रामात् बहिः सरः अस्ति। (ग्राम के बाहर सरोवर है।)
2. विना – ज्ञानात् विना जीवनं शून्यम्। (ज्ञान के बिना जीवन शून्य है।)
3. ऋते – धनात् ऋते न सुखम्। (धन के बिना सुख नहीं है।)
   तरप् प्रत्यय के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–
   रामात् कृष्णः श्रेष्ठतरः। (राम से कृष्ण श्रेष्ठ है।)
   मतिः बलाद् गुरूतरा। (मति बल से भारी है।)

'भी' (डरना), 'त्रस्' (त्रा), प्र उपसर्ग युक्त 'भू' धातु के योग में भी पञ्चमी विभक्ति होती है।

जैसे–

1. भी – रविः सर्पात् विभेति। (रवि साँप से डरता है)

सिंहात् भीतः मृगः अधावत्। (सिंह से डरा हुआ मृग भाग गया।)

2. त्रस् (त्रा) – सज्जनः दुर्जनात् त्रायते। (सज्जन दुर्जन से बचाता है।)

3. प्र भू – शिवनाथनदी गढचिरौलीस्थानात् प्रभवति।

(शिवनाथनदी गढ़चिरौली नामक स्थान से निकलती है।)

महानदी सिहावा–पर्वतात् प्रभवति। (महानदी सिहावा पर्वत से निकलती है।)

v. **पष्ठी विभक्ति –** सम, सद्दश, तुल्य (समान) के योग में पष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–

1. सम – कृष्णस्य समः उपदेशकः नास्ति। (कृष्ण के समान उपदेशक नहीं है।)
2. सद्दश – अर्जुनः कर्णस्य सद्दशः वीरः आसीत्। (अर्जुन कृष्ण के समान (तुल्य) वीर था।)
3. तुल्य – सीता गीतायाः तुल्या अस्ति। सीता गीता के तुल्य (समान) है।

vi. **सप्तमी विभक्ति–** कुशलः निपुणः, प्रवीणः (कुशल) के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे–

1. कुशलः – सज्जनः व्यवहारे कुशलः भवति। (सज्जन व्यवहार में कुशल होता है)
2. प्रवीणः – ते स्वविषयेषु प्रवीणाः सन्ति। वे अपने विषयों में प्रवीण है।)
3. निपुणः – सा स्वकार्ये निपुणा अस्ति। (वह अपने कार्य में निपुण है।)

स्निह्, अभिलष् (प्रेम करना) इन धातुओं के साथ जिससे प्रेम किया जाए उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

1. स्निह् – पिता पुत्र्यां स्निहयति। (पिता पुत्री से स्नेह करते है।)
2. अभिलष् – भ्रमराः पुष्पेपु अभिलषन्ति। (भँवरे फूलें से प्रेम करते हैं। चाहते हैं।

विशेष : – शिक्षक उपर्युक्त उपपदों से संबंधित नवीन वाक्यों का प्रयोग कर छात्रों को अभ्यास करायेंगे।

–––––0000––––

अनुवाद का अभ्यास

अनुवाद कला को सीखने के लिए दो बातों का अभ्यास जरूरी है। सर्वप्रथम व्याकरण के छोटे–बड़े नियमों का ज्ञान हो और दूसरे प्रत्येक अर्थ को प्रकट करने के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हो, तो प्रस्तुत संदर्भ में कौन–सा शब्द भाव एवं प्रसंग की दृष्टि से संगत बैठता है। हमें हिन्दी भाषा के साथ–साथ संस्कृत भाषा के व्याकरण का ज्ञान भी अच्छी तरह होना चाहिए। विशेष रूप से निम्न बातों का ज्ञान होना जरूरी हैः–

i. संस्कृत शब्दों में संयुक्त अक्षर बहुत हैं तथा वहाँ अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त आदि का विशेष महत्व है, अतः संस्कृत के शब्दों का उच्चारण ठीक–ठीक आना चाहिए। अशुद्ध उच्चारण होने पर लिखने में भी अशुद्धियाँ होनी स्वाभाविक है।

ii. संस्कृत में दूसरी बड़ी कठिनाई शब्दों के लिंग ज्ञान संबंधी है। संस्कृत शब्दों के लिंगों के लिए विशेष नियम नहीं है। यह हमें बार–बार के अभ्यास से ही पता चलता है कि अमुक शब्द पुंल्लिग है, स्त्रीलिंग है या नपुंसकलिंग है।

iii. संख्यावाचक शब्दों (एक, द्वि, त्रि इत्यादि) तथा सर्वनाम शब्दों (यत, तत्, सर्व इत्यादि) के रूप पुंल्लिग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग में अलग–अलग बनते हैं, अतः इन शब्दों के रूपों को तीनों लिंगो में याद करना जरूरी है। अनुवाद में ये शब्द प्रायः विशेषण के रूप में आते हैं। विशेष्य–शब्दों के अनुसार ही विशेषण के लिंग होते है।

iv. अनुवाद में धातुरूपों का विशेष महत्व है। पहले तो यह पता होना चाहिए कि अमुक धातु किस गण की है। दूसरे, इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि यह धातु परस्मैपदी है, आत्मनेपदी है या उभयपदी है। फिर जिस काल या अवस्था का निर्देश है,उसके अनुसार कौन से लकार का प्रयोग होना चाहिए। किन्तु इतने मात्र से काम नहीं चलेगा। अन्त में हमें यह देखना है कि वाक्य कर्तृवाच्य में है या कर्मवाच्य में है या भाववाच्य में। जिस पुरुषतथा वचन का कर्ता होगा, क्रिया–रूप भी उसी पुरुष तथा वचन का होगा।

v. अनुवाद में णिजन्त (प्रेरणार्थक क्रिया) कृदन्त शब्द एवं उपसर्ग आदि ज्ञान भी आवश्यक है। धातुओं के पूर्व उपसर्ग कैसे लगाया जाता है तथा उसके पश्चात् धातुरूप से पहले उपसर्ग लगाया जाता है, जैसे गम् धातु का ल् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में अगच्छत् रूप बन जाने पर इसके पूर्व प्रति तथा आ उपसर्ग लगाने से प्रत्यागच्छत् (प्रति + आ + अगच्छत्) रूप बनेगा। ऐसे ही कृदन्तरूपों में यदि क्त्वा का रूप हो तथा उससे पूर्व उपसर्ग आ गया हो, तो क्त्वा का ल्यप् हो जायेगा। श्रु धातु से क्त्वा में 'श्रुत्वा' रूप बनता है परन्तु इसके पूर्व 'प्रति' उपसर्ग आने से ' प्रतिश्रुत्य' रूप हो जायेगा।

vi. अनुवाद में कारक, विभक्तियों तथा उपपद–विभक्तियों का भी ध्यान रखना चाहिए।

vii. क्रिया – विशेषण शब्द अव्यय होते हैं। उनके रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

viii. अनुवाद को उत्तम बनाने के लिए हम वाक्य में संस्कृत शब्दों के बीच में संधि कर सकते हैं। जैसे –रामः विद्यालयमागच्छत्। 'विद्यालयम्' और आगच्छत् में संयोग किया गया है।

अनुवाद अभ्यास–

1. बालक हँसता है।	–	बालकः हसति।
2. बालक सूँघते हैं।	–	छात्राः जिघ्रन्ति।
3. वह देता है।	–	सः ददाति।
4. वे दोनों सहन करते हैं।	–	तौ सहेते।
5. तुम प्रसन्न होते हो।	–	त्वं मोदसे।
6. मैं नदी में तैरता हूँ।	–	अहं नदीं तरामि।
7. आप कहाँ रहते हैं ?	–	भवान् कुत्र निवसति ?
8. मुझसे पाठ पढा जाता है।	–	मया पाठः पठ्यते।
9. हम सब भारतवासी हैं।	–	वयं सर्वे भारतवासिनः स्मः।
10. तुम दीनों पर दया करो	–	त्वं दीनान् प्रति दयां कुरू।
11. परीक्षा के बिना डिग्री कैसी?	–	परीक्षां विना उपाधिपत्रं कीदृशम्?
12. मुझे संस्कृत पढ़ना अच्छा लगता है।	–	मह्यं संस्कृतपठनं रोचते।
13. आपका स्वागत है।	–	भवते/भवत्यै स्वागतम्।
14. तू कहाँ से आता है।	–	त्वं कुतः आगच्छसि।
15. तुम थोड़ी देर बाद यहाँ आना	–	त्वं क्षणात् पश्चात्/अनन्तरम् अत्र आगच्छ।
16. वह पढ़ने के कारण रहता है।	–	सः पठनस्य हेतोः वसति।
17. कचहरी के समीप स्टेशन है।	–	न्यायालयस्य अन्तिकं यानस्थानकम् अस्ति।
18. वह धन कमाने में लगा है।	–	सः धनार्जने रतः अस्ति।
19. छात्रों में मोहन होशियार है।	–	छात्रेषु मोहनः पटुतमः।
20. मेज पर पुस्तकें है।	–	पटले पुस्तकानि सन्ति।
21. चार लड़के नहीं आए।	–	चत्वारः बालकाः न आगच्छन्।
22. फरवरी में अठ्ठाइस दिन होते हैं।	–	फरवरी मासे अष्टाविंशतिः दिनानि भवन्ति।
23. मेरे पास चार वस्तुएँ हैं।	–	मम समीपे चत्वारि वस्तूनि सन्ति।
24. उसका क्या नाम था?	–	तस्य किं नाम आसीत्?
25. तुम्हारे पास पढ़ने का समय है।	–	तव समीपे पठितुं समयः अस्ति।
26. तुम्हें वहाँ जाना चाहिए।	–	त्वया तत्र गन्तव्यम्।

27. पढ़ने के समय पढ़ना चाहिए। — पठनकाले पठितव्यम्।

28. यथाशक्ति सबकी सेवा करनी चाहिए— यथाशक्ति सर्वे सेवितव्याः।

29. वह चित्र देखकर आया है। — सः चित्रं दृष्ट्वा समागतः।

30. छात्र पुस्तक लाते हैं। — छात्राः पुस्तकं आनयन्ति।

31. मैं पिता के चरण छूता हूँ। — अहं पितुः चरणौ स्पृशामि।

32. हम आँखों से देखते हैं। — वयं चक्षुर्भ्यां पश्यामः।

33. लोभ से विद्या का नाश होता है। — लोभेन विद्या नश्यते।

34. मनुष्य सुख के लिए धन कमाता है।— मनुष्यः सुखाय धनम् अर्जति।

35. मैं प्यासे को जल देता हूँ। — अहं पिपासवे जलं ददामि।

36. वह घर से बाहर जाता है। — सः गृहात् बहिः गच्छति।

37. बादलों से बूँदे गिरती है। — मेघेभ्यः बिन्दवः पतन्ति।

38. स्कूल का कार्य पहले करो। — विद्यालयस्य कार्यं प्रथमं कुरू।

39. घर में कुत्ता भी शेर होता है। — गृहे कुक्कुरोऽपि सिंहायते।

40. राम! तुम्हारी माता कहाँ है ? — राम! तव माता कुत्र अस्ति ?

41. उसने मुझसे मार्ग पूछा। — सः मां मार्गम् अपृच्छत्।

42. इस वर्ष वर्षा होगी। — अस्मिन् वर्षे वृष्टिः भविष्यति।

43. हम भी एक प्रश्न पूछेंगे। — वयमपि एकं प्रश्नं प्रक्ष्यामः।

44. तुम्हारी परीक्षा कब होगी? — तव परीक्षा कदा भविष्यति?

45. वह बुरी आदत छोड़े। — सः दुर्व्यसनं त्यजेत्।

46. हमारा देश यशस्वी हो। — अस्माकं देशः यशस्वी भवेत्।

47. शिक्षक छात्र को पढ़ाता है। — शिक्षकः छात्रं पाठयति।

48. शोर बन्द करो। — अलं कोलाहलेन।

49. बुद्धि बल से श्रेष्ठ है। — मतिः बलाद् गरीयसी।

50. उतना अन्न खाओ जितना हजम हो सके। — तावन्तम् अन्नं भक्षय यावन्तं सुपाच्यम्।

————0000————

वाच्य प्रकरण

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

क	ख
(i) अनुजः पाठं पठति।	अनुजेन पाठः पठ्यते।
(ii) सः लेखं लिखति।	तेन लेखः लिख्यते।
(iii) रमा भोजनं पचति।	रमया भोजनं पच्यते।
(iv) सा भोजनं खादति।	तया भोजनं खाद्यते।
(v) तौ पुस्तकं पठतः।	ताभ्यां पुस्तकं पठ्यते।
(vi) त्वं पुष्पाणि चिनोषि।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।
(vii) सः तौ पश्यति।	तेन तौ दृश्येते।
(viii) आवां गीतं गायावः।	आवाभ्यां गीतं गीयते।
(ix) वयं चन्द्रमसं ध्यायामः।	अस्माभिः चन्द्रमाः ध्यायते।
(x) अहं सूर्यं पश्यामि।	मया सूर्यः दृश्यते।
(xi) बालकः वृक्षान् गणयति।	बालकेन वृक्षाः गण्यन्ते।

यहाँ 'क' खण्ड में जो वाक्य है वे कर्तृवाच्य में हैं और 'ख' में जो वाक्य हैं वे कर्मवाच्य के हैं। इन दोनों खण्डों में क्या भेद है ? इसे जाने–

वाच्यम्

कर्तृवाच्य			कर्मवाच्य		
सः	लेखं	लिखति।	तेन	लेखः	लिख्यते।
↓	↓	↓	↓	↓	↓
कर्ता	कर्म	क्रिया	कर्ता	कर्म	क्रिया
↓	↓	↓	↓	↓	↓
प्रथमा	द्वितीया	कर्तृपदानुरूपा	तृतीया	प्रथमा	कर्मपदानुरूपा

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन करने के नियम–

I. कर्तृवाच्य के कर्ता की प्रथमा विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति की जाती है।

II. कर्तृवाच्य के कर्म की द्वितीया विभक्ति के स्थान पर कर्मवाच्य में प्रथमा विभक्ति की जाती है।

III. कर्मवाच्य में क्रिया का पुरुष/वचन तथा लिंग विभक्ति कर्म के पुरुष और वचन तथा लिंग/विभक्ति के अनुसार हो जाता है।

IV. कर्तृवाच्य में क्तवतु (तवत्) प्रत्यय के स्थान पर कर्मवाच्य में क्त (त) प्रत्यय हो जाता है। जैसे–

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सः पाठं पठति।	तेन पाठः पठ्यते।
त्वं गीतं गीतवान्।	त्वया गीतं गीतम्।
सः मां पश्यति।	तेन अहं दृश्ये।
त्वं पुष्पाणि चिनोषि।	त्वया पुष्पाणि चीयन्ते।

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य में परिवर्तन के नियम–

I. कर्मवाच्य मे कर्त्ता की तृतीया विभक्ति कर्तृवाच्य में प्रथमा विभक्ति में बदल जाती हैं।

II. कर्मवाच्य में कर्मकारक की प्रथमा विभक्ति कर्तृवाच्य में द्वितीया विभक्ति में बदल जाती है।

III. क्रिया के पुरुष व वचन कर्म के अनुसार न होकर कर्त्ता के अनुसार होते हैं। क्रिया आत्मने पद से परस्मैपद में बदल दी जाती है।

IV. कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्त प्रत्यय की जगह कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय होता है। जैसे–

कर्मवाच्य	कर्तृवाच्य
मया त्वं दृश्यसे।	अहं त्वां पश्यामि।
तेन यूयं दृश्यध्वे।	सः युष्मान् पश्यति।
मया त्वम् आहूयसे।	अहं त्वाम् आह्वयामि।

नीचे लिखे वाक्यों में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य को चुनकर पृथक–पृथक कीजिए–

(क) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।

(ख) सर्पाः पवनं पिबन्ति।

(ग) विद्वान् सर्वैः पूज्यते।

(घ) मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।

(ङ) विद्या विनयं ददाति।

(च) बुभुक्षितैः व्याकरणं न भुज्यते न पीयते काव्यरसः पिपासुभिः।

(छ) मत्तदन्तिनः रज्वा बध्यन्ते।

(ज) बालकेन (जलेन) घटः पूर्यते।

3. अधोलिखित वाक्यों में कर्तृपद को कर्मवाच्य में परिवर्तन कर लिखिए—

यथा भक्तः गीतां पठति	भक्तेन गीता पठ्यते।
(क) शिष्याः गुरून् नमन्ति।	.... गुरवः नम्यन्ते।
(ख) पुत्रः जनकं सेवते।	.... जनकः सेव्यते।
(ग) अहं पत्रं लिखामि।	.... पत्रं लिख्यते।
(घ) त्वं कवितां शृणोषि।	.... कविता श्रूयते।

4. अधोलिखित वाक्यों में कर्मपद को परिवर्तित कर लिखिए—

यथा अहं लोभं त्यजामि।	मया लोभः त्यज्यते।
(क) आचार्याः छात्रान् उपदिशन्ति।	आचार्याः ....उपदिश्यन्ते।
(ख) जनाः प्रदर्शनीं पश्यन्ति।	जनैः .... दृश्यते।
(ग) त्वं पुरस्कारं गृह्णासि।	त्वया ....गृह्यते।
(घ) छायाकारः छायाचित्रं रचयति।	छायाकारेण .... रच्यते।

5. कर्मवाच्य के वाक्यों में क्रिया पदों को लिखकर रिक्त स्थानों की पूति कीजिए—

यथा—मेघाः जलं वर्षन्ति	मेघैः जलं वृष्यते।
(क) उपकारी मानं न अभिलषति।	उपकारिणा मानः न .... ।
(ख) राष्ट्रपतिः राष्ट्रं सम्बोधयति।	राष्ट्रपतिना राष्ट्रं .... ।
(ग) छात्राः शिक्षिकाम् अभिनन्दन्ति।	छात्राभिः शिक्षिका .... ।
(घ) प्रधानमंत्री वैज्ञानिकान् सम्मानयति।	प्रधानमन्त्रिणा वैज्ञानिकाः .... ।

4. सुधा एक स्वस्थ कन्या है। उसकी दिनचर्या नियमित है। इसकी दिनचर्या जानकर नीचे मञ्जूषा से क्रिया पदों को चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

क्षाल्यन्ते, आरोपयन्ते, उद्यते, पीयते, गृह्यते, पठ्यते, खाद्येते, क्रियते स्मर्यते।

I. सुधया प्रत्युषे उद्यानं गत्वा व्यायामः .... ।

II. सुधया प्रातः दुग्धं .... ।

III. सुधया नित्यं दुग्धेन सह कदलीफले अपि .... ।

IV. सुधया भोजने सन्तुलिताहारः .... ।

V. सुधया स्ववाटिकायां वृक्षाः .... ।

VI. सुधया स्ववस्त्राणि स्वयं.............................. ।

VII. सुधया नित्यं समये.............................. ।

VIII. सुधया सायमपि ईश्वरः .... ।

IX. सुधया कदापि असत्यं न .... ।

भाववाच्य

1. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़िए—

(क) कर्तृवाच्य	(ख) भाववाच्य
(i) बालकः क्रीडति।	बालकेन क्रीड्यते।
(ii) शिशुः स्वपिति।	शिशुना सुप्यते।
(iii) छात्राः तिष्ठन्ति।	छात्रैः स्थीयते।
(iv) कन्याः हसन्ति	कन्याभिः हस्यते।
(v) अश्वाः धावन्ति।	अश्वैः धाव्यते।

इन वाक्यों में हमने देखा कि—

(1) कर्तृपद है।

(2) क्रिया पद भी है परन्तु कर्मपद नहीं है।

इन वाक्यों में किन धातुओं का प्रयोग है?

क्रीड्, स्वप्, स्था, हस्, धाव्, इन धातुओं का प्रयोग है। ये धातुएँ अकर्मक हैं।

इससे ज्ञात होता है कि यहाँ अकर्मक धातुओं का प्रयोग है। अर्थात् यहाँ कर्मपद नहीं है। अकर्मक धातु के योग में कर्तृवाच्य एवं भाववाच्य होते हैं। अब हम भाववाच्य के नियम जानें–

1. कर्तृपद में तृतीया विभक्ति होती है। कर्तृपद के विशेषण में भी तृतीया विभक्ति होती है।
2. भाववाच्य मे अकर्मक धातुओं का ही प्रयोग होता है।
3. भाववाच्य में बहुवचन भी क्रियापद हमेशा प्रथम पुरुषएक वचन में ही प्रयुक्त होता है।
4. भू, अस्, स्था, स्वप्, शीङ्, हस्, क्रीड्, इत्यादि धातुएं अकर्मक है।

भाववाच्य में

↓

कर्ता	कर्म नहीं होता है	क्रिया
तृतीया विभक्ति में होता है।		प्रथम पुरुषएकवचन में होती है।

2. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में परिवर्तन कीजिए –

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
यथा – बालकाः हसन्ति (हस्)	बालकैः हस्यते।
(i) शिशुः रोदिति (रूद्)	(i) ....।
(ii) छात्राः अत्र तिष्ठन्ति (स्था)	(ii) ....।
(iii) सिंहः वने गर्जति (गर्ज्)	(iii) ....।
(iv) अलसः दिने स्वपिति (स्वप्)	(iv) ....।
(v) वानराः वृक्षेषु कूर्दन्ति (कूर्द्)	(v) ....।
(vi) लता वर्धते (वृध्)	(vi) ....।

2. कोष्ठक से उचित पद चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

I. कर्तृवाच्य विद्याहीनाः न शोभन्ते।

विद्याहीनैः न ....।(शुभ्यते / शोभ्यते)

II. विमानम् उड्डयते।

विमानेन ....। (उड्डीयते / उड्डयते)

III. सज्जनाः उपविशन्ति।

सज्जनैः .... । (उपविश्यन्ते/उपविश्यते)

IV. वृक्षाः कम्पन्ते।

वृक्षैः .... । (कम्प्यते/कम्प्यन्ते)

V. विद्यार्थिनः धावन्ति।

विद्यार्थिभिः .... । (धाव्यते/धाव्यन्ते)

(1) वाच्य के तीन प्रकार हैं–

I. कर्तृवाच्य

II. कर्मवाच्य

III. भाववाच्य

(2) कर्तृवाच्य में क्रिया का कर्ता के साथ सम्बन्ध होता है। जबकि कर्मवाच्य में क्रिया का कर्म के साथ सम्बन्ध होता है।

(3) भाववाच्य में कर्म नहीं होता है।

(4) कर्तृवाच्य में (सकर्मक धातु के योग में) कर्तापद प्रथमा विभक्ति में, कर्मपद द्वितीया विभक्ति में और क्रिया पद कर्ता पद के पुरुष एवं वचन के अनुसार होगी।

(5) कर्मवाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में, कर्म प्रथमा विभक्ति में और क्रिया कर्म के अनुसार होती है।

(6) भाववाच्य में कर्ता तृतीया विभक्ति में होता है। क्रिया सदा प्रथम पुरुष एक वचन में होती है। कर्ता बहुवचन मे होने पर भी क्रिया परिवर्तित नहीं होती।

(7) कर्मवाच्य एवं भाववाच्य के क्रियापद निर्माण में मूलधातु के साथ 'य' जुड़ता है तथा मूलधातु + य + ते (पठ्यते, लिख्यते, सेव्यते)। सभी धातुओं के रूप आत्मने पद में ही होते हैं।

———–0000–———

उपसर्ग–प्रकरण

उपसर्ग शब्द का अर्थ 'समीप' होता है जो क्रियाओं (धातुओं) के पूर्व में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देता है। " उपसृज्यन्ते धातूनां समीपे क्रियन्ते इति उपसर्गाः। "

संस्कृत में उपसर्गो की संख्या 22 है जिनका अर्थ सहित विवरण इस प्रकार है–

उपसर्ग		प्रचलित अर्थ
1. प्र	–	अधिक, उत्कर्ष, गति, यश, उत्पत्ति, आगे।
2. परा	–	उलटा, पीछे, अनादर, नाश।
3. अप	–	लघुता, हीनता।
4. सम्	–	अच्छा, पूर्ण, साथ।
5. अनु	–	पीछे, निम्न, समान, क्रम।
6. अव	–	अनादर, हीनता, पतन, विशेषता।
7. निस्	–	रहित, पूरा, विपरीत।
8. निर्	–	बिना, बाहर, निषेध।
9. दुस्	–	बुरा, कठिन।
10. दुर्	–	कठिनता, दुष्टता, निन्दा, हीनता।
11. वि	–	भिन्नता, हीनता, असमानता, विशेषता।
12. आ	–	तक, समेत, उलटा।
13. नि	–	निषेध, निश्चित अधिकता।
14. अधि	–	ऊपर, श्रेष्ठ, समीपता, उपरिभावादि।
15. अपि	–	निकट।
16. सु	–	उत्तमता, सुगमता, श्रेष्ठता।
17. उत्	–	ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर।
18. अभि	–	सामने, पास, अच्छा, चारों ओर।
19. परि	–	आस पास, सब तरफ, पूर्णता।
20. उप	–	निकट, सदृश, गौण, सहायता, लघुता।
21. अति	–	अत्यधिक।
22. प्रति	–	विरोध की ओर।

क्र.	उपसर्ग	क्रिया पद	बने शब्द	अर्थ
1	प्र	भवति चरति	प्रभवति प्रचरति	उत्पन्न होता है। प्रचार होता है।
2	परा	भवति अयते	पराभवति पलायते	हारता है। भागता है।
3	अप	दिशति वदति	अपदिशति अपवदति	बहाना करता है। निन्दा करता है।
4	सम्	क्षिपति दिशति	संक्षिपति संदिशति	समेटता है। संदेश देता है।
5	अनु	मन्यते भवति	अनुमन्यते अनुभवति	राय देता है। अनुभव करता है।
6	अव	तरति गच्छति	अवतरति अवगच्छति	अवतार लेता है, नीचे उतरता है। जानता है।
7	निस्	चिनोति दिशति	निश्चिनोति निर्दिशति	निश्चय करता है। बतलाता है।
8.	निर्	अयते ईक्षते	निलयते निरीक्षते	छिपता है। निगरानी करता है।
9.	दुस्	अयते चरति	दुरयते दुश्चरति	दुखी होता है। बुरा काम करता है।
10.	दुर्	नयति वक्ति	दुर्णयति दुर्वक्ति	अन्याय करता है। गाली देता है।
11.	वि	लपति तरति	विलपति वितरति	रोता है, विलाप करता है। बाँटता है।
12.	आ	ददति रोहति	आददाति आरोहति	लेता है। चढ़ता है।
13	नि	दिशति दधे	निदिशति निदधे	आज्ञा देता है। विश्वास करता हूँ।
14	अधि	करोति क्षिपति	अधिकरोति अधिक्षिपति	अधिकार करता है। निन्दा करता है।
15	अपि	धत्ते	अपिधत्ते	ढाँकता है।
16	अति	रिच्यते एति	अतिरिच्यते अत्येति	बढ़ता है। नष्ट होता है।
17	सु	करोति नयति	सुकरोति सुनयति	पुण्य करता है। अच्छा काम करता है।
18	उत्	तिष्ठति पतति	उत्तिष्ठति उत्पतति	उठता है। उड़ता है।
19	अभि	जानाति धीयते	अभिजानाति अभिधीयते	पहचानता है। कहा जाता है।
20	प्रति	जानाति वदति	प्रतिजानाति प्रतिवदति	प्रतिज्ञा करता है। जवाब देता है।

21	परि	हरति वर्तन्ते	परिहरति परिवर्तन्ते	दूर करता है। घूमते हैं।
22	उप	विशामि दिशति	उपविशामि उपदिशति	बैठता हूँ। उपदेश देता है।

अभ्यासः

1. निम्नलिखित क्रिया पदों से उपसर्ग एवं धातु अलग कीजिए –

क्र.	क्रिया पद	उपसर्ग	धातु
	अभिनन्देत् परिज्ञायते अनुधावामि अनुवर्तसे आगच्छथः उच्चरन्ति		

2. प्रत्येक उपसर्ग से दो सार्थक शब्द बनाइये :–

I. अव ....
II. परा ....
III. सम् ....
IV. सु ....
V. दुर् ....

3. ' हृ ' धातु में विभिन्न प्रत्यय जोड़ने पर इस प्रकार शब्द बनेंगें–

उपसर्ग	धातु	क्रिया पद	अन्य पद
प्र	हृ.	प्रहरति	प्रहारः
आ	हृ	आहरति	आहारः
सम्	हृ	संहरति	संहारः
वि	हृ	विहरति	विहारः

इसी प्रकार निम्नलिखित उपसर्गो में गम् धातु जोड़कर विभिन्न शब्द बनाइयेः–

उपसर्ग	धातु	क्रिया पद	अन्य पद
अनु	गम्	....	अनुगामी
उप	गम्	....	....
अव	गम्	....	....
आ	गम्	....	....
निर्	गम्	....	निर्गतः

––––0000––––

अपठित गद्यांश

संस्कृत भाषा में छात्रों की मौलिक अभिव्यक्ति क्षमता, भावप्रवणता, शब्द भण्डार एवं स्वाभाविक चिन्तनशीलता के विकास के लिए पाठ्य पुस्तक में निहित गद्य पाठों के अतिरिक्त कुछ अपठित गद्यांश दिये जा रहे हैं। विषय अध्यापक इन गद्यांशों को आधार मानकर अन्य अपठित गद्यांशों का अभ्यास छात्रों को करा सकेंगे।

अपठित गद्यांश के अन्तर्गत गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लेखन, सारांशीकरण, भावार्थ प्रकटीकरण तथा प्रश्नों को समझकर सही उत्तर संस्कृत में लिख सकेंगे।

गद्यांश–1.

अस्माकं जीवने यः समयः अतीतः स तु गतः, अतः तस्य विषये चिन्ता न करणीया। अवशिष्टं जीवनं सार्थकं कुर्याम। दिने–दिने स्वार्थः न्यूनः भवेत्, परार्थः अधिकाधिकः भवेत्। अस्मिन्नेव सुखस्य रहस्यमस्ति। स्वस्मै स्वल्पं, समाजाय सर्वस्वम् इति उक्तेः अनुसारं जीवने एव जीवनस्य सार्थकता अस्ति। एवं जगत् इतः अपि सुन्दरतरं भवेत्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. प्रतिदिनं कः न्यूनः भवेत् ?

II. प्रतिदिनं कः अधिकाधिकः भवेत् ?

III. वयं कस्मै सर्वस्वम् अर्पयाम ?

IV. इतः अपि सुन्दरतरं किं भवेत् ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

जीवनस्य सार्थकता कस्याः उक्तेः अनुसारं जीवने अस्ति ?

3. यथानिर्देशं उत्तरत–

I. 'अतीतः' इति पदस्य किं समानार्थकं पदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

II. 'अवशिष्टम्' इति पदं कस्य पदस्य विशेषणम् ?

III. 'तस्य विषये' इत्यत्र 'तस्य' इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

IV. 'अस्मात्' इति स्थाने किम् अव्यय पदं प्रयुक्तम् ?

गद्यांश–2

मातृभूमिः बहुविधैः द्रव्यैः अस्मान् उपकरोति। तस्यै अस्माकमपि कर्तव्यं यत् वयं कायेन, मनसा, वाचा धनेन च स्वमातृभूमेः उन्नतिं कुर्याम। देशाय अस्माकं देशवासिनां हृदयेषु प्रेम भवेत्। मातृभूमिं प्रति सम्मानं भवेत्। अतएव कथितम्–'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' ।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. का अस्मान् उपकरोति ?

II. वयं कस्याः उन्नतिं कुर्याम ?

2. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'द्रव्यैः' अस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

II. 'वयम्' अस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

III. 'अवनतिम्' अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

IV. 'तस्यै अस्माकं कर्तव्यम् अस्ति' अस्मिन् वाक्ये तस्यै इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम् ?

3. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. मातृभूमिः कथम् अस्मान् उपकरोति ?

II. मातृभूम्यै अस्माकं किं कर्तव्यम् अस्ति ?

III. गद्यांशस्य उपयुक्तशीर्षकं चिनुत?

IV. गद्यांशस्य सारांशीकरणं कुरूत ?

गद्यांश 3

संसारे कोऽपि बालः न जानाति यत् कि सद्वृत्तम् किं च असद्वृतम्। बालस्तु ज्येष्ठान् वृद्धान च पश्यति। ते वयोवृद्धाः यथा–यथा आचरन्ति बालोऽपि तथैव आचरति। शिष्टानां वंशेषु वृद्धाः युवानः बालाः, महिलाश्च सर्वे परस्परं सभ्यतायाः आलपन्ते, ते अन्योन्यं सम्मानयन्ति। अशिष्टानां वंशेषु तु एतादृशः व्यवहारः न दृश्यते।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

(1) केषां वंशेषु सर्वे सभ्यतायाः आलपन्ते ?

(2) कः सद्वृत्तम् असद्वृतं च न जानाति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. बालः कान् कान् पश्यति ?
II. बालाः कथं आचरन्ति ?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'जानाति' अस्य किं कर्तृपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
II. 'तथा' अस्य किं विलोमपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
III. 'सदाचरणम्' इत्यर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः ?
IV. 'ते' इति कर्तृपदस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

गद्यांश 4

दुर्लभमेतत् मानुषं जन्म पुरुषार्थचतुष्टस्य साधनम्। सर्वेषां कामानामाप्तिः धर्माचरणञ्च पुनः शरीरेणैव मानवः कर्तुं शक्नोति। शरीरमेव आत्मनः निवासस्थानम्। मानवः स्वव्यक्तित्वानुरूपमेव निवासस्थानमिच्छति एवं ह्यात्मनापि स्वस्थं शरीरमेवाभिलष्यते। केनचित् उक्तम् अपि शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. मानुषं जन्म कस्य साधनम् ?
II. केन मानवः धर्माचरणं कर्तु शक्नोति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. मानवः कीदृशं शरीरम् एव अभिलष्यते ?
II. आत्मनः निवासस्थानं किम् ?

3. निर्देशानुसारम् उत्तरत–

I. 'इच्छा' इत्यर्थे अत्र कः शब्दः प्रयुक्तः ?
II. 'मानवः' अस्य किं क्रियापदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
III. 'मानव' स्वव्यक्तित्वानुरूपमेव निवासस्थानमिच्छति, अस्मिन् वाक्ये किम् अव्यय पदं प्रयुक्तम्?
IV. 'मानुषम्' अस्य किं विशेषणपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?

गद्यांश 5

जनानां लोकानां वा तन्त्रं शासनं जनतन्त्रं वा कथ्यते। लोकतन्त्रे जनानां कल्याणम् एवं शासनस्य प्रमुखं कार्यं मन्यते। अत्र प्रत्येकस्य जनस्य एव महत्त्वम्। भाषणे लेखने च अत्र पूर्णं स्वातन्त्र्य् भवति। व्यवहारे केचन दोषाः अपि दृश्यन्ते। एतेषां दोषाणां दूरीकरणम् अनिवार्यम्। एतदर्थं सर्वेभ्यः शिक्षा अनिवार्या। शिक्षां विना लोकतन्त्रं सुरक्षितं न भवति।

प्रश्नाः

1. एकपदेन उत्तरत–

I. लोकतन्त्रे केषां कल्याणं शासनस्य प्रमुखं कार्यं भवति ?
II. लोकतन्त्रे दोषान् दूरीकर्तुं किम् अनिवार्यम् अस्ति ?

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत–

I. लोकतन्त्रे कस्य महत्त्वं प्रमुखम् ?
II. कां विना लोकतन्त्रं सुरक्षितं न भवति ?
III. गद्यांशस्य साराशं कुरुत।

3. यथानिर्देशम् उत्तरत–

I. 'प्रमुखं कार्यम्' इति पदयोः विशेषणपदं किम् ?
II. 'जनानां शासनं जनतन्त्रं कथ्यते' इति वाक्ये क्रियापदं किम् ?
III. 'जनतन्त्रम्' इति पदस्य किं पर्यायपदम् अत्र प्रयुक्तम् ?
IV. 'गुणानाम्' इति पदस्य किं विलोमपदम् अस्मिन् गद्यांशे प्रयुक्तम् ?
V. गद्यांशस्य उपयुक्तं शीर्षकं लिखत।

––––0000––––

अशुद्धि संशोधनम्

भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों में श्रवण, पठन, लेखन व वाचन कौशल का विकास करना है। संस्कृत शिक्षण में अध्यापकों को छात्रों में संस्कृत भाषा के शुद्ध लेखन व उच्चारण पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। इन्हीं त्रुटियों में सुधार हेतु अशुद्धि संशोधनम् नामक प्रकरण दिया जा रहा है। इसके माध्यम से पुरूष, कर्ता, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण एवं विभक्ति आदि में सम्भावित अशुद्धियों को उदाहरण एवं अभ्यास के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस प्रकरण का छात्रों को भली भॉति अभ्यास कराया जाए तो निश्चय ही छात्र संस्कृत में शुद्ध वाक्य लिखने में समर्थ हो सकेंगे तथा सम्भावित अशुद्धियों के निवारण करने की क्षमता विकसित होगी।

अशुद्धवाक्यम्– विद्यालये शताः छात्राः सन्ति।

शुद्धवाक्यम् – विद्यालये शतं छात्राः सन्ति। (शतं नित्यम् एक वचने)

अशुद्धवाक्यम् – भवान् कुत्र गच्छन्ति।

शुद्धवाक्यम् – भवान् कुत्र गच्छति। (भवान् एकवचने)

अशुद्धवाक्यम् – गुणवान् जनः प्रीतिपात्रः भवति।

शुद्धवाक्यम् – गुणवान् जनः प्रीतिपात्रम् भवति। (पात्रम् सर्वदा नपुंसकलिंगे)

अशुद्धवाक्यम् – अयं कन्या चतुरा अस्ति।

शुद्धवाक्यम् – इयं कन्या चतुरा अस्ति।(कन्या कारणात् इयम्)

अशुद्धवाक्यम् – पयः मधुरः अस्ति।

शुद्धवाक्यम् – पयः मधुरम् अस्ति।(पयः कारणात् नपुंसकलिंगे)

अशुद्धवाक्यम् – त्रयः बालकः पठति।

शुद्धवाक्यम् – त्रयः बालकाः पठन्ति। (त्रयः बहुवचने)

अशुद्धवाक्यम् – सुशीला पुस्तकं पठितवान्।

शुद्धवाक्य– सुशीला पुस्तकं पठितवती।(सुशीला–स्त्रीलिंगे)

अशुद्धवाक्यम्– इयं कन्या गुणवान् अस्ति।

शुद्धवाक्यम्– इयं कन्या गुणवती अस्ति। (कन्या स्त्रीलिंगे)

अशुद्धवाक्यम्– पितरौ पुत्रं पालयन्ति।

शुद्धवाक्यम्– पितरौ पुत्रं पालयतः। (क्रियापदं कर्तृपदस्य अनुसारेण)

अशुद्धवाक्यम्– वयं कुत्र गच्छन्ति।

शुद्धवाक्यम्– वयं कुत्र गच्छामः। (क्रियापदं कर्तृपदानुसारेण)

अशुद्धवाक्यम्– अहं ह्यः गमिष्यामि।

शुद्धवाक्यम्– अहं ह्यः अगच्छम। (ह्यः भूतकाले)

अशुद्धवाक्यम्– श्वः तौ तत्र न अगच्छताम्।

शुद्धवाक्यम्– श्वः तौ तत्र न गमिष्यतः।(श्वः लृट्लकारे)

अशुद्धवाक्यम्– वयं भारतीयाः अस्मि।

शुद्धवाक्यम्– वयं भारतीयाः स्मः।(क्रियापदं कर्तृपदानुसारेण)

अशुद्धवाक्यम्– सः पुष्पं दृष्टः।

शुद्धवाक्यम्– सः पुष्पं दृष्टवान्।(कर्तृवाच्ये क्तवतु)

अशुद्धवाक्यम्– सा जलं पिबिष्यति।

शुद्धवाक्यम्– सा जलं पास्यति।('पा' धातुलृट्लकारे–पास्यति)

अशुद्धवाक्यम्– एकदा एकः वृद्धा अपतत्।

शुद्धवाक्यम्– एकदा एका वृद्धा अपतत्। (विशेषणं विशेष्यानुसारम्)

अशुद्धवाक्यम्– ते मोहनस्य पुत्राणि सन्ति।

शुद्धवाक्यम्– ते मोहनस्य पुत्राः सन्ति।(पुत्राः पुल्लिङ्.गम्)

अशुद्धवाक्यम्– चत्वारः बालिकाः लिखन्ति।

शुद्धवाक्यम्– चतस्रः बालिकाः लिखन्ति। (विशेषणं विशेष्यानुसारम्)

अशुद्धवाक्यम्– यः श्रमं करोति सः सुखं लभति।

शुद्धवाक्यम्– यः श्रमं करोति सः सुखं लभते। ('लभ्' धातु आत्मनेपदम्)

अशुद्धवाक्यम्– वयं विद्यालये गच्छामः।

शुद्धवाक्यम्– वयं विद्यालयं गच्छामः। ('गम्' कारणात् द्वितीया)

अशुद्धवाक्यम्– सः चौरेण बिभेति।

शुद्धवाक्यम्– सः चौरात् बिभेति। ('भी' कारणात् पञ्चमी)

अशुद्धवाक्यम्– कविभ्यः कालिदासः श्रेष्ठः।

शुद्धवाक्यम्– कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।(निर्धारण कारणात् षष्ठी)

अभ्यासः

अधोलिखितवाक्यानि शुद्धं कुरुत–

1. कर्तृक्रियासम्बन्धिन्यः अशुद्धयः

1. त्वं मम मित्रम् अस्ति।
2. भवान् किम् खादसि।
3. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमति तत्र देवताः।
4. अहम् विद्यालयं पठति।
5. कृष्णः पुस्तकं ददति।
6. श्वः तौ तत्र न गमिष्यथः।
7. पुरा वीरवरो नाम राजा आसन्।
8. त्वम् अपि इदं पुस्तकं पठतु।

2. विशेषणसम्बन्ध्यः अशुद्धयः–

1. मनोहरं बालः गच्छति।
2. दीर्धः नदी वहति।
3. सर्वे फलानि मधुराणि सन्ति।
4. योग्यः मित्रं पठति।
5. तस्य कलत्रं सुन्दरी आसीत्।
6. तत् धेनुः कस्य अस्ति।

3. वाच्यसम्बन्ध्यः अशुद्धयः–

1. सः ग्रामं गम्यते।
2. रामेण निबन्धः लिखति।
3. तेन पुस्तकं पठति।
4. सा चित्रं दृष्टम्।
5. रामः रावणः उक्तवान्।

4. विभक्तिसम्बन्ध्यः अशुद्धयः –

1. शङ्करं नमः।
2. मार्गस्य उभयतः वृक्षाः सन्ति।
3. विद्युतस्य विना नगरेषु शून्यता भवति।
4. छात्राः गुरवे प्रश्नं पृच्छति।
5. सः सिंहेन बिभेति।
6. सः याचकः पादस्य पंगुः अस्ति।
7. त्वां भक्तिः कथं न रोचते।
8. पिता पुत्रीं स्निह्यति।

––––0000––––

पत्र लेखनम्

अस्वास्थ्यकारणात् अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रम्

सेवायाम्,

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः
शासकीय उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः
रायपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः– अवकाशाय प्रार्थनापत्रम्।

महोदय!

सविनयं निवेद्यते यत् अहं अतिदिवसात् ज्वरग्रस्तो अस्मि बलवती शिरोवेदना च मां व्यथयति। ज्वरकृततापेन कार्श्यम् उपगतो अस्मि। अतो अद्य विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्थो अस्मि।

अतः कृपया 4.3.2016 दिनाVात् 7.3.2016 दिनाङ्कपर्यन्तं चतुर्–दिनानाम् अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुग्रहीष्यति।

दिनाङ्क : 03.03.2016

भवतः आज्ञाकारी शिष्यः
नाम – पङ्कजः तिवारी
कक्षा – दशमी
शा–उ–मा–विद्यालय–रायपुरम्,
छत्तीसगढम्

ग्रामगमनार्थम् अवकाशाय प्रार्थना–पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः

शासः उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

रायगढम्, छत्तीसगढम्

विषयः अवकाशस्य हेतोः प्रार्थना–पत्रम्।

मान्वयर!

विनम्र निवेदनम् अस्ति यत् ज्येष्ठमासस्य पञ्चम्यां तिथौ मम मातुलस्य विवाहः सम्पत्स्यते। विवाहतिथेः एकदिन–पूर्वमेव मया तत्र प्राप्तव्यम्।

अतः 06.03.2016 दिनाVात् 08.03.2016 दिनाङ्कपर्यन्तं दिनत्रयस्य अवकाशं प्रदाय अनुगृह्णातु भवान् इति।

दिनाङ्क : 05.03.2016

भवतः आज्ञाकारिणी शिष्या

नाम – अपर्णा पटेलः

कक्षा – दशमी

शा–उ–मा–विद्यालय रायगढम्, छत्तीसगढम्

स्थानान्तरणप्रमाणपत्रं प्राप्तुं प्राचार्यं प्रति प्रार्थनापत्रम्

प्रतिष्ठायाम्

श्रीमान् प्राचार्यः महोदयः

शासकीय उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

बिलासपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः – स्थानान्तरणप्रमाणपत्रं प्राप्तुम् आवेदनपत्रम्।

महानुभाव!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् मम पिता छत्तीसगढस्य सर्वकारे एकः शिक्षकः अस्ति, तस्य स्थानान्तरणं बिलासपुरनगरात् बालोदनगरमभवत्। तस्मात् अहमपि बालोदनगरं गत्वा अध्ययनं कर्तुम् इच्छामि।

अतः अहं भवन्तं निवेदयामि यत् मह्यं स्थानान्तरणं प्रमाणपत्रं प्रदाय कृपां करोतु।

दिनाङ्क : ....

प्रार्थी

नाम – अभिषेकः सिदारः

कक्षा – दशमी

शा–उ–मा–विद्यालय–बिलासपुरनगरम्,

छत्तीसगढम्

द्वितीया अंकसूची प्राप्त्यर्थं प्रार्थना–पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्यः महोदयः

शासकीय–उच्चतर–माध्यमिक–विद्यालयः

अम्बिकापुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः– द्वितीयां अंकसूचीं प्राप्तुं प्रार्थनापत्रम्।

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यद्यहं भवतः विद्यालये दशम्यां कक्षायां छात्रः अस्मि। त्रुटिवशात् नवम्याः कक्षायाः मम लब्धाङ्कपत्रं विलुप्तम् अभवत्। कृपया तस्य द्वितीयप्रतिं प्रदातुं कृपां करोतु भवान्।

मम विवरणम् अधोलिखितम् अस्ति –

(1) नाम – रमेशः मिश्रः

(2) कक्षा – नवमी

(3) परीक्षानुक्रमांकः 9545

(4) परीक्षा केन्द्रम् – शास–उच्च–माध्य–विद्यालय अम्बिकापुरम्

दिनाङ्क : ....

भवतः विनीतः शिष्यः

नाम – रमेशः मिश्रः

कक्षा – दशमी

शा.उ.मा.विद्यालय–अम्बिकापुरम्

छत्तीसगढम्

शुल्कक्षमापनार्थं प्राचार्यं प्रति पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्राचार्य महोदय
शासकीय–उच्च–माध्यमिक–विद्यालयः
जगदलपुरम्, छत्तीसगढम्

विषयः– शुल्कमुक्तये प्रार्थना पत्रम्।

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यदहं भवतः विद्यालये दशमकक्षायाः छात्रा अस्मि। मम पिता एकः लिपिकः अस्ति। तस्य मासिकं वेतनं पञ्चसहस्त्ररूप्यकाणि मात्रमेव अस्ति। मम एकः भ्राता अष्टमकक्षायां भगिनी च पञ्चम्यां कक्षायां पठति। अस्माकं कुटुम्बस्य निर्वाहः अतीव काठिन्येन भवति।

अतः शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थयेऽहम्। आशासे अत्र भवान् मम एतां प्रार्थनां स्वीकृत्य अनुग्रहीष्यति।

दिनाङ्क : ....

भवतः विनीता शिष्या
नाम – सुधा साहूः
कक्षा – दशमी
विद्यालय–शा.उच्च.माध्य.विद्यालयः,
जगदलपुरम्, छत्तीसगढम्

पुस्तकं प्रेषणाय प्रकाशकं प्रति पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमान् प्रबंधकः महोदयः

चौखम्बाप्रकाशनम् आगरा

विषयः– पुस्तकप्रेषणार्थं पत्रम्।

मान्यवर!

अहं दशम्याः कक्षायाः छात्रा अस्मि। भवता प्रकाशितम् ''अनुवाद रत्नाकरः'' नामकं पुस्तकं मया दृष्टम् तत्पुस्तकम् अहं क्रेतुम् इच्छामि। एतएव वी.पी.पी. द्वारा शीघ्रं प्रेषणीयम्।

धन्यवादः!

दिनाङ्क : ....

भवदीया

नाम – मनीषा चन्द्राकरः

कक्षा – दशमी

पत्रसङ्केतः शा.उच्च.माध्य.विद्यालयः,

कवर्धा, छत्तीसगढम्

स्वविद्यालयस्य वर्णनं कुर्वन् मित्रं प्रति पत्रम्

स्थानम् – जगदलपुरतः
दिनाङ्कः : ....

प्रियसखि सुमते!
नमस्ते!

अत्रकुशलं तत्रास्तु। भवत्याः पत्रं प्राप्तम्। अहम् अधुना स्वविद्यालयस्य वर्णनं कर्तुम् इच्छामि। मम विद्यालयः अतीव शोभनः अस्ति। मम विद्यालये विशालं क्रीडाक्षेत्रम्, समृद्धा प्रयोगशाला, सुन्दरः पुस्तकालयः च सन्ति। प्राचार्य–महोदयः अतीव कर्मठः व्यवहारशीलः चास्ति।

अस्माकं अध्यापकाः मनोयोगेन पाठयन्ति। सर्वे छात्राः अपि योग्याः सन्ति।

विस्तरेण पुनः लेखिष्यामि।

तव मित्रम्
नाम – सौम्यः भारद्वाजः
पत्र सङ्केतः – समताविहार, दन्तेवाडा नगरम्
छत्तीसगढम्

अभ्यासः

1. भवान् बीजापुर नगरे स्थितः सिद्धार्थः सोमः। भवतः मित्रं आनन्दः कश्यपः कोरिया नगरे वसति। तं परीक्षायां सफलतायै वर्धापन–पत्रं। कोष्ठकप्रदत्तपदानां सहायतया लिखत। (अपश्यम्, महती, सिद्धार्थः, आगतः, छात्रवृतिम्, तुभ्यम्, अधिकतरा, आनन्द!, तत्रास्तु, बीजापुरनगरतः)

....

स्थानम् ....

दिनाङ्क : 05.06.2016

प्रिय मित्र ....

सप्रेम नमस्ते।

अत्रकुशलं ....। अद्यैव तव परिणामः ....। तव सफलतां ज्ञात्वा मम मनसि.................................प्रसन्नता जाता। मम एषा प्रसन्नता .... जाता यदा अहं तव

नाम योग्यता–सूचौ................। त्वया सप्त–शतम् अVIः प्राप्ताः। त्वं निश्चितरुपेण प्राप्स्यसि।

त्वया परिवारस्य विद्यालयस्य च नाम उज्जवलीकृतम्।

अस्याम् उज्जवल सफलतायाम् अहं .... हार्दिकं वर्धापनं यच्छामि उज्जवल–भविष्याय च कामये। मातृपितृचरणेषु प्रणामः।

तव अभिन्नहृदयं मित्रम्

....

....

2. **प्राचार्यं प्रति शुल्क–क्षमापनार्थं लिखितेऽस्मिन् प्रार्थनापत्रे रिक्तस्थानानि मञ्जूषायां प्रदत्त––पदानां साहाय्येन पूरयत्।**

सेवायाम्

प्राचार्य ....

शास–उच्च–माध्य–विद्यालयः

जशपुरनगरम्, छत्तीसगढम्

विषयः – शुल्कक्षमापनार्थं प्रार्थनापत्रम्।

महोदय!

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् ....पिता एकः चतुर्थश्रेणी .... अस्ति। तस्य मासिक आयः अतीव ....अस्ति। येन परिवारस्य ....काठिन्येन भवति। मम परिवारे माता, पिता, द्वौ भ्रातरौ .... भगिनी च इति पञ्च ....सन्ति। अतः अहं भवन्तं ....यत् मम .... क्षमापयतु।

दिनांV : 07.08.2016

भवदीय : ....

नाम – सोमनाथः

मञ्जूषाः–अध्ययन–शुल्कं, न्यूनः, मम एका, शिष्यः, निवेदयामि, कर्मचारी, सदस्याः, निर्वाहः, महोदयः।

––––0000––––

निबन्ध

(1) सदाचारः

1. सज्जनाः यानि–यानि सत्कार्याणि कुर्वन्ति, स सदाचारः उच्यते।
2. सदाचारी नरः कीर्तिं भूतिं च लभते।
3. प्रातः काले उत्थाय मातापितरौ, वृद्धान्, गुरून् च प्रणमेत्।
4. तेषाम् आज्ञां पालयेत्, तान् सेवेत च।
5. सदाचारिणः सर्वेषां प्राणिनामुपकारं करोति।
6. सदाचारेण मानवजीवनस्य सर्वविधा उन्नतिः भवति।
7. अतएव सदाचारः उन्नत्याः द्वारमस्ति।
8. सदाचारेणैव जनाः हितं मधुरं च वदन्ति।
9. सदाचार–युक्तो जनः सर्वत्र आदरं लभते।
10. सदाचारेण हीनो जनः सर्वत्र पशुतुल्यः भवति।
11. सदाचारपालनेन एव श्रीरामः मर्यादा पुरूषोत्तमोऽभवत्।
12. सदाचारेण एव महर्षिः दधीचिः गान्धि महोदयश्च यशः शरीरेण अद्यापि जीवितः।
13. सदाचारिणः सर्वत्र आदरं लभन्ते।
14. सदाचारस्य महिमानं वर्णयितुं कोऽपि न शक्नोति।
15. अतोऽस्माभिः सर्वतोभावेन सदाचारः पालनीयः।

(2) सुभाषचन्द्रः

1. विश्वेऽस्मिन् स्वतन्त्रतासेनानी सुभाषस्य नाम को न जानाति।
2. सः क्रान्तिकारी नेता आसीत्।
3. अस्य जन्म बXप्रान्ते 1897 तमे जनवरी मासस्य 23 तारिकायाम् अभवत्।
4. अस्य पिता जानकीनाथ बोसः आसीत्।
5. बाल्यकालादेव बुद्धिमान धीरः साहसयुक्तः च आसीत्।
6. सः कालिकाता नगर्यां शिक्षां प्राप्तवान्।
7. सः असहयोगआन्दोलने संलग्नः अभवत्।
8. स्वातन्त्र्यार्थं प्रति सदा प्रयासरतः आसीत्।
9. सः शठेशाठ्यं समाचरेत् इति नीतिमनुसरितवान्।
10. 'आजाद हिन्द फौज' इत्याख्यां सेनां सङ्घटितवान्।
11. सः देशे हिन्दू–मुस्लिमयोः एकतायाः कृते फारवर्ड ब्लाक इत्यस्य स्थापना कृतवान्।
12. जर्मनी आकाशवाण्याः केन्द्रात् भारतीय जनेभ्यः स्वाधीनतायाः सन्देशं दत्तवान्।
13. सः आह्वानं अकरोत् – यूयं मह्यं रक्तमर्पयत अहं युष्मभ्यं स्वातन्त्र्यं दास्यामि।
14. भारतमातुः वीर–सपूतः आसीत्।
15. सः भारतीय जनानां प्रेरणा स्रोतः आसीत्।

(3) होलिकोत्सवः

1. होलिकोत्सवः सर्वजनानां कृते प्रियः उत्सवः अस्ति।
2. अयमुत्सवः भारतस्य प्रसिद्धः उत्सवः अस्ति।
3. पुरा हिरण्यकशिपुः नाम राजा अभवत्।
4. तस्य पुत्रः प्रह्लादः ईश्वरभक्तः अभवत्।
5. हिरण्यकशिपुः स्वपुत्रं मारयितुम् अयतत।
6. परन्तु प्रहलादः ईश्वर प्रसादेन सुरक्षितः आसीत्।
7. हिरण्यकशिपुः स्वभगिनीं होलिकां प्रह्लादस्य वधस्यकृते न्ययोजयत्।
8. अग्नौ होलिका तु भस्मसात् अभवत् परं प्रहलादः सुरक्षित आसीत्।
9. अन्ते च भगवान् नृसिंहः हिरण्यकशिपुम् अमारयत्।
10. होलिका दहनमुद्दिश्य होलिकोत्सवः प्रारभत।
11. अयमुत्सवः फाल्गुनमासस्य पूर्णिमायां मन्यते।
12. होलिकात्सवे जनाः परस्परं रङ्गरञ्जितं जलं प्रक्षिपन्ति।
13. जनाः उत्सवावसरे नृत्यन्ति गायन्ति च।
14. आबालवृद्धाः हास्यव्यंग्य संलापान् कुर्वन्ति।
15. अतः इदं पर्व मानवानां कृते अद्वितीयम् उपहारमस्ति।

(4) बीटा (क्रिकेट)

1. जीवने क्रीडायाः विशिष्टं स्थानम् अस्ति।
2. यथा जीवने भोजनम् आवश्यकं भवति तथैव क्रीडापि आवश्यकी अस्ति।
3. क्रीडासु बीटाकीडा प्रमुख महत्वपूर्णा चास्ति।
4. वर्तमाने बीटाक्रीडा विश्वस्य लोकप्रिया क्रीडा अस्ति।
5. बीटा क्रीडा प्रतियोगिता विश्वस्तरीया भवति।
6. बीटा क्रीडायाः जन्म आंग्लदेशे मन्यते।
7. बीटा महार्ह क्रीडा अस्ति।
8. बीटायाः प्राX.णम् अति विशालं भवति।
9. बीटा प्राX.णे त्रयः स्टम्पाः (दण्डाः) एकं कन्दुकं भवति।
10. बीटा क्रीडायाः कीडकानां द्वे दले भवतः।
11. प्रत्येके दले एकादशः क्रीडकाः भवन्ति।
12. यः समूहः अधिकान् धावनाङ्कान् प्राप्नोति सः विजयी भवति।
13. निर्णायकस्य निर्णयं सर्वे क्रीडकाः मन्यन्ते।
14. विजयी क्रीडकेभ्यः पुरस्कारः दीयते।
15. क्रीडया विश्वबन्धुत्वं संवर्धते।

(5) महाकविः कालिदासः

1. महाकविकालिदास्य नाम अस्मिन् जगति को न जानाति।
2. इंग्लैण्डवासिनः तं शेक्सपीयर तुल्यं कथयन्ति।

3. कालिदासः विश्वस्य श्रेष्ठतमः कविः आसीत्।
4. सः कविकुलगुरुः कथ्यते।
5. सः महाराजस्य विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकः आसीत्।
6. अस्य विवाहः विद्योत्तमा नाम राजकन्यया सह अभवत्।
7. कालिदासेन रचिताः सप्तग्रन्थाः प्रसिद्धाः।
8. रघुवंशं कुमारसंभवं च द्वे महाकाव्ये स्तः।
9. त्रीणि नाटकानि मालविकाग्निमित्रम् विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च सन्ति।
10. द्वे खण्डकाव्येऽपि स्तः ऋतुसंहारं मेघदूतम् च।
11. शकुन्तलानाटकम् अनेकासु भाषासु अनूदितम्।
12. सर्वाः ग्रन्थाः अत्यन्ताः सरसाः सन्ति।
13. तस्य 'उपमा कालिदासस्य' इति उक्तिः प्रसिद्धा।
14. कालिदासः रससिद्धः कविरस्ति।
15. सत्यमेव कविरयं मे परमप्रियः कविः अस्ति।

(6) मम प्रदेशः (छत्तीसगढ़ः)

1. मम प्रदेशः छत्तीसगढः अस्ति।
2. छत्तीसगढ प्रदेशः 2000 तमे खीष्टाब्दे नवम्बर–मासस्य प्रथमदिनाङ्क सुघटितः।
3. भारतवर्षस्य मध्य दक्षिण भागे छत्तीसगढ प्रदेशः विराजते।
4. अस्मिन् प्रदेशे प्रभूतमन्नमुत्पन्नं भवति।
5. अतः छत्तीसगढप्रदेशः ' धान का कटोरा' इति उच्यते।
6. छत्तीसगढ़ प्रदेशः अरण्यानां प्रदेशोऽस्ति।
7. वनेभ्यः वयं काष्ठानि–फलानि–औषधयः च प्राप्नुमः।
8. वनेषु खगाः मृगाः व्याघ्राः च निवसन्ति।
9. छत्तीसगढप्रदेशस्य, प्रमुखासु नदीषु महानदी, शिवनाथ, हसदो, ईब, पैरी, केलो, उदन्ती, प्रभृतयः सन्ति।
10. छत्तीसगढप्रदेशस्य राजधानी रायपुरनगरम् अस्ति।
11. राजिमनगरं छत्तीसगढस्य प्रयागरुपेण शोभते।
12. कवर्धा क्षेत्रे भोरमदेवः छत्तीसगढ़स्य खजुराहो नाम्ना विख्यातः तथा च सिरपुरं छत्तीसगढस्य काशी इति अभिधीयते।
13. प्रदेशस्य बस्तरक्षेत्रे आदिवासिजनानां बाहुल्यमस्ति।
14. इस्पात–नगरी–भिलाई इति नगरं लौहादयः खनिजोद्योगानां कृते प्रसिद्धम्।
15. छत्तीसगढस्य लोकसंस्कृतिः अतीव समृद्धा।

(7) पर्यावरणम्

1. वयं वायुजलमृदाभिः आवृते वातावरणे निवसामः।
2. एतदेव वातावरणं पर्यावरण कथ्यते।
3. पर्यावरणेनैव वयं जीवनोपयोगिवस्तुनि प्राप्नुमः।
4. जलं वायुः च जीवने महत्त्वपूर्णौ स्तः।
5. साम्प्रतं शुद्ध–पेय–जलस्य समस्या वर्तते।
6. अधुना वायुरपि शुद्धं नास्ति।

7. एवमेव प्रदूषित–पर्यावरणेन विविधाः रोगाः जायन्ते।
8. पर्यावरणस्य रक्षायाः अति आवश्यकता वर्तते।
9. प्रदूषणस्य अनेकानि कारणानि सन्ति।
10. औद्योगिकापशिष्ट –पदार्थ–उच्च–ध्वनि–यानधूम्रादयः प्रमुखानि कारणानि सन्ति।
11. पर्यावरणरक्षायै वृक्षाः रोपणीयाः।
12. वयं नदीषु तडागेषु च दूषितं जलं न पतेम्।
13. तैल–रहितवाहनानां प्रयोगः करणीयः।
14. जनाः तरुणां रोपणम् अभिरक्षणं च कुर्युः।

(8) ग्राम्य जीवनम्

1. भारतवर्षः ग्रामप्रधानः देशः अस्ति।
2. अधिकाः जनाः ग्रामे एव निवसन्ति।
3. ग्राम्यजीवनं सुव्यवस्थितं भवति।
4. ग्रामाणां जलवायुः स्वास्थ्यप्रदः भवति।
5. ग्रामे प्रायेण सर्वे स्वस्थाः भवन्ति।
6. ग्रामे प्रायेण कृषीवलाः भवन्ति।
7. ग्रामान् परितः शस्यश्यामला धरित्री राजते।
8. परिश्रमशीलाः ग्रामीणाः धान्यादिकम् उत्पादयन्ति।
9. ग्रामे शुक–हंस–मयूर– कोकिलादयः पक्षिणः कूजन्ति।
10. हरिण–गो–महिष–मेषादयः पशवः च चरन्ति।
11. ग्राम्य–जीवनं सदाचार सम्पन्नं धार्मिकं च भवति।
12. ग्राम्य–जीवनं सुकरं सुखकरं च भवति।

(9) मम दिनचर्या

1. अहं प्रातः काले उत्तिष्ठामि।
2. ईश्वरं स्मरामि।
3. मातरं पितरं च नमामि।
4. दन्तधावनं कृत्वा मुख–प्रक्षालनं करोमि।
5. पश्चात् अध्ययनं करोमि।
6. प्रतिदिनं भ्रमणाय उद्यानं गच्छामि।
7. तत्र योगं व्यायामं च करोमि।
8. ततः गृहं आगत्य स्नानं करोमि।
9. भोजनं कृत्वा विद्यालयं गच्छामि।
10. तत्र शिक्षकान् प्रणमामि।
11. विद्यालये विविध–विषयानां अध्ययनं करोमि।
12. अवकाशानन्तरं गृहं प्रति आगच्छामि।
13. क्रीडाङ्गणे मित्रैः सह खेलामि।
14. गृहं प्रति निवृत्य हस्तौ पादौ च प्रक्षाल्य भोजनं करोमि।
15. अध्ययनं गृहकार्यं च कृत्वा शयनं करोमि।

R628EM

––––0000––––